वाजिद अली शाह स्मृति पुस्तक

रूपान्तर

रौशन तक़ी

डॉ० कृष्ण मोहन सक्सेना

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी

कैसरबाग, लखनऊ—226 001

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

अकादमी की ओर से	IX
प्राक्कथन	1-8
भूमिका	9-30
संक्षिप्त परिचय	9
व्यक्तित्व	11
शासनकाल	14
'बनी' का रचनाकाल	18
'बनी' की रचना	19
वाजिद अली शाह, ललित कलाये और कुछ भ्रान्तिया	21
कुछ भ्रान्तिया तथा निवारण	23
कुछ महानुभावो के विचार	26
भाषा	27
वाजिद अली शाह रचित पुस्तक 'बनी'	
पहला अध्याय—सुर	31-62
भूमिका	31
बाब पहला यानी सुर अध्याय	34

दूसरा अध्याय—ताल 63-66

भूमिका 63

बाब दूसरा यानी ताल अध्याय 65

तीसरा अध्याय—रहस 67-78

भूमिका 67

बाब तीसरा यानी अध्याय तीन 68

चौथा अध्याय—रहस विस्तृत 79-112

भूमिका 79

बाब चौथा यानी अध्याय चार 81

फसल पहली छत्तीस ईजादी रहसो मे 81

पहला किस्सा राधा और कन्हैया का 91

दूसरा किस्सा राधा और कन्हैया का 105

पाचवा अध्याय—नकल 113-172

भूमिका 113

बाब पाचवा यानी अध्याय पाच 115

भँड़ैती और नकले मजहक मे 115

फसल पहली भँडैतियो मे 116

फसल दूसरी 117

फसल तीसरी 118

फसल चौथी 119

फ़सल पाचवी 121

फसल छठी-सातवी चन्द नकलो मे 159

फसल आठवी 164

बच्चो का खेल 168

लतीफा 168

फसल नवी 170

छठा अध्याय—ख़िताब 173-204

भूमिका 173

बाब छह् यानी छठा अध्याय 175

फसल पहली—राधा मजिलवालिया 175

शारदा मजिलवालियाँ 177

सुलतानखानेवालियाँ 178

खास मजिलवालियाँ 180

दीगर ममतुआत 192

फसल दूसरी 194

कानूने अख्तरी 197

परिशिष्ट—एक 205

परिशिष्ट—दो 211

संदर्भ 213

अकादमी की ओर से

उत्तर प्रदेश मे अवध, और अवध मे लखनऊ गगा-जमुनी सस्कृति का गढ रहा है। अवध मे नवाबो के शासनकाल मे नवाब आसफुद्दौला के समय से ही लखनऊ कला और सस्कृति का केन्द्र बनने लगा। धीरे-धीरे सगीत और नृत्य लखनऊ मे परवान चढता गया और अवध के आखिरी नवाब वाजिद अली शाह का दौर आते-आते लखनऊ पूरी तरह से सगीत, नृत्य व अन्य प्रदर्श्यकारी कलाओ का केन्द्र-बिन्दु हो गया। देश भर के विख्यात कलाकार लखनऊ के कला-प्रेमी शासको का सरक्षण प्राप्त करने के निमित्त यहा आकर बसने लगे।

वाजिद अली शाह के गद्दी पर बैठते ही लखनऊ आकण्ठ सगीत और नृत्य-कला मे डूब गया। स्वय वाजिद अली शाह एक गुणी कलाकार और गुण ग्राहक थे। वह एक उत्कृष्ट कोटि के शायर, लेखक, सगीतकार व नर्तक भी थे। उनका दरबार तो कलाकारो का अखाडा बन गया था। शायरी के लिए वह अपने उपनाम 'अख्तर' का प्रयोग करते थे। जब तक वह लखनऊ मे रहे, शासन-कार्यों के साथ-साथ वह साहित्य-कला-साधना मे जुटे रहे। तख्त से माजूल कर दिये जाने के बाद उन्हे मटियाबुर्ज, कलकत्ता मे नजरबन्द कर दिया गया। नजरबन्दी समाप्त होने के बाद सन् 1858 से लेकर अपने अन्तिम समय तक वह लगातार पुस्तक-लेखन और कला-साधना मे तल्लीन रहे और अपने पूरे जीवन मे लगभग 100 पुस्तको की रचना की जिनमे प्रमुख है—हुज्ने अख्तर, मसनवी अफसाना-ए-इश्क, कुल्लियात-ए-अख्तर, बहर-ए-उल्फत, दरिया-ए-ताश्शुक, सौतुल मुबारक, नसाइहे अख्तरी, चचल नाजनीन, बयान अहल-ए-बैत, जौहरे-उरूज, बनी, नाजो, दुल्हन आदि। इन पुस्तको मे उनकी आत्म-कथा है, सगीत है, शेर-ओ-शायरी है, रहस है, नाटक भी है।

वाजिद अली शाह रचित तमाम पुस्तको मे 'बनी' का अपना एक विशिष्ट स्थान है। 'बनी' का शाब्दिक अर्थ है, 'दुल्हन', और इसकी रचना बादशाह ने सन् 1877 मे गुरू अथवा निर्देशक की हैसियत से की थी। इसमे गायन, वादन, नृत्य एव नाट्य (रहस तथा भडैती) पर जो सामग्री प्रस्तुत की गयी है, उसका ऐतिहासिक महत्व है। उर्दू, हिन्दी, ब्रज, अवधी, अरबी, फ़ारसी, बगला आदि अनेक भाषाओ के मोतियो को सगीत के धागे मे पिरोकर लेखक ने पुस्तक

को छह 'बाब' यानी अध्यायो मे विभाजित किया है—सुर, ताल, नृत्य, रहस, नकल तथा महलात व बेगमात के खिताब । उपनाम 'अख्तर' के नाम से रचित ध्रुवपद, होरी-धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरो की बन्दिशे, कथक तथा कहरवा नृत्य की चित्रो सहित नृत्य-गते तथा अवध के सास्कृतिक वैभव की गगा-जमुनी तहजीब पर आधारित कृष्णलीलाओ व नकलो का विस्तृत वर्णन इस पुस्तक मे किया गया है, फलत 'बनो' मात्र एक साहित्यिक कृति ही नही, ऐतिहासिक महत्व की विशिष्ट एव दुर्लभ कृति के रूप मे सामने आती है । यह अवध के सास्कृतिक इतिहास की झलक प्रस्तुत करती है । इसका सागीतिक वैभव अद्भुत है । रहस और नकले उस युग के लखनऊ को जीवन्त रूप मे प्रस्तुत कर पाने मे सक्षम है ।

प्रस्तुत पुस्तक मूल 'बनी' के हिन्दी अनुवाद के रूप मे पाठको के समक्ष आ रही है जिसे रूपान्तरकारो ने बडे श्रम से तैयार किया है । पाण्डुलिपि को देखकर मै यह अवश्य कहूगा कि यह केवल रूपान्तर ही नही, बल्कि मूल पुस्तक का 'हीर' निकालकर इसे एक महत्वपूर्ण सकलन मे प्रस्तुत किया गया है ।

उत्तर प्रदेश की सगीत, नृत्य व अन्य प्रदर्श्यकारी कलाओ, विशेषकर लुप्तप्राय ऐसी कलाओ का उन्नयन, प्रचार-प्रसार करना अकादमी का मूल उद्देश्य रहा है । इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर अकादमी द्वारा 'बनी' का प्रकाशन अकादमी की प्रकाशन योजना के अन्तर्गत किया जा रहा है । विश्वास है कि इस महत्वपूर्ण दुर्लभ कृति 'बनी' का अपेक्षित स्वागत विद्वानो एव अध्येताओ द्वारा व्यापक स्तर पर किया जायेगा ।

—विश्वनाथ वि० श्रीखण्डे

रामनवमी
7 अप्रैल, 1987

بسم اللہ الرحمن الرحیم

بعد حمد خالق ہفت پیکر اور نعت سید خیر البشر اور منقبت خیر داہ

واجد علی شاہ اختر خدمت طالبین اور شائقین میں عرض

کرتا ہے۔ وادی اللہ ع دہی میں پانوں دہرتا ہے۔ ما قبل اسکے

دو کتابیں ناجو اور دلهن تقسیم ہو چکی ہیں جسکی الوسع سنگلو دیا

مگر ان میں فقط آستھائی انترے ہیں۔ یادداشت کی کبھی گردی

ہیں۔ البتہ سیر باغ نہیں ہے جو عشق اور عاشقی کا داغ نہیں ہے۔

आखिरी ताजदार-ए-अवध नवाब वाजिद अली शाह 'अख्तर'
रचित पुस्तक 'बनी' की भूमिका का पहला पृष्ठ

اکثر ناظرین اوسی طعام بی نمک جانتی ہین نری اقسم
کی بک بک جانتی ہین البتہ اسکی مطالعہ سی لطف اوٹھی گا
جو پڑہیگا آپی مین نرہی گا ہرچند وہ دو نو جلدین بہی
میری سرکار مین رائگان نہین گئین سب دہرپد اور ٹہمریان
وغیرہ باقاعدہ زہرہ جمالون نی یاد کین مگر اسکا رنگ نیا ہی
جو نقل اور قصہ ہی ایک تازہ گل کہلا ہی بال کی کہال کہینچی ہی
ہندی کی چندی کی ہی انصاف طباعونکی ہاتہہ ہی میرا تو
بنگالیونکا ساتہہ ہی مقفی مسجع عبارتکا خیال نہین کیا مگر
کسی مطلب کو ہاتہہ سی جانی نہین دیا بلکہ اسی لحاظ سی ترک
منظور ہوا کہ مطلب نہ جائی عبارت آرائی سی کسی کو سر مو شبہہ نہ آئی
اسکا نام بنی ہی حقیقت مین بنی ٹہنی ہی اور اس مین چھہ باب ہین

आखिरी ताजदार-ए-अवध नवाब वाजिद अली शाह 'अख्तर'
रचित पुस्तक 'बनी' की भूमिका का दूसरा पृष्ठ

प्राक्कथन

लगभग चार वष पहले की बात है जब 'बनी' पुस्तक उर्दू मे मुझे पढने का अवसर मिला। वाजिदअली शाह रचित 105 पुस्तको मे **बनी, नाजो, दुल्हन, चंचल नाजनीन और सौतुल मुबारक** इन पाच पुस्तको का विशिष्ट रूप मे अदब और इतिहास मे अनेक स्थानो पर वर्णन मिलता है। मै भी इन पुस्तको को पढने के लिये लालायित था।

सगीत और रहस से परिपूर्ण पाचो पुस्तको के विषय ही नही वरन् नाम भी पर्याय है। सगीत की दृष्टि से पाचो पुस्तके अत्यन्त महत्वपूर्ण है पर 'बनी' का इनमे विशिष्ट स्थान है। इन पुस्तको से गुजरने के बाद वाजिदअली शाह की हर क्षेत्र मे विस्तृत जानकारी की छाप पाठक के मस्तिष्क पर अवश्य पडती है, और उनका एक दूसरा रूप पाठक के मस्तिष्क मे आता है। फिर अचानक ही एक दूसरा नाम दिमाग मे उभरता है—अमीर खुसरो। हज़रत अमीर खुसरो देहलवी के बाद इतिहास मे केवल एक ही व्यक्ति ऐसा दिखाई देता है जिसने

लगभग साढे पाच सौ वर्ष बाद उनकी याद को पुन ताजा कर दिया। दोनो की कृतियो को ध्यान से पढने पर अमीर खुसरो और वाजिदअली शाह दोनो मे कुछ बाते उभयनिष्ट दिखाई देती है, जैसे—

1 हज़रत अमीर खुसरो पूरे हिन्दुस्तानी थे और वाजिदअली शाह भी।

2 अमीर खुसरो ने अपनी समकालीन भाषाओ को अपनाकर अपनी बात कही और वाजिदअली शाह ने अपने समय की भाषा को अपनाकर।

3 अमीर खुसरो ने सगीत को नया आयाम और वाद्यो को नया रूप दिया तो वाजिदअली शाह ने भी सगीत व नृत्य को नये-नये आयाम प्रदान किये।

4 अमीर खुसरो ने अपने समय के सगीत-उस्तादो से अपना लोहा मनवा लिया तो वाजिदअली शाह ने अपने समय के सगीत और नृत्य के उस्तादो से अपना लोहा मनवा लिया।

5 अमीर खुसरो के कलाम मे अदबी गहराई के साथ-साथ सन्देश है भाइचारे और बन्धुत्व का। वाजिदअली शाह के कलाम मे अदब की गहराई भी है और सन्देश भी।

नाकूस बिरहमन से सदा–ए–अज़ां सुनी
मसजिद से मैने कस्द किया सोमनाथ का।।

6 अमीर खुसरो को लोक सगीत से बहुत प्यार था, और देश की विभिन्न लोक-भाषाओ मे उनके दोहे, सोरठे, विरह, बिदाई, बाबुल आदि इसके उदाहरण है। वाजिदअली शाह को लोक सगीत ही नही, लोक कलाओ से भी लगाव था और उनके समय मे लोक सगीत ही नही, नकल, भडैती, स्वाग, भगतबाजी, बहुरूप, कठपुतली, आदि लोक कलाओ को अच्छा प्रोत्साहन प्राप्त रहा। प्रस्तुत पुस्तक 'बनी' मे भी एक पूरा अध्याय नकल और भड़ैती के विषय मे है।

7 अमीर खुसरो राजाओ के दरबारो और जनता दोनो मे समान रूप से लोकप्रिय थे। वाजिदअली शाह भी दरबार और जनता दोनो मे ही अत्यधिक लोकप्रिय थे। एक बार अमीर खुसरो किसी गाव से जा रहे थे। प्यास लगी। एक कुए पर पानी पीना चाहा। चार पनिहारिने पानी भर रही थी। अमीर ने उनसे पानी

मागा । उन्होने अमीर मे नाम पूछा । अमीर ने अपना नाम बताया । पनिहारिनो ने कहा कि वे अमीर को जानती है । वह बहुत ज्ञानी है । हम कैसे जाने कि तुम खुसरो हो । अमीर खुसरो ने कहा तुम चारो एक-एक शब्द दो, मे अभी उसका छन्द बना दूंगा । चारो ने अलग-अलग चार शब्द दिये । एक ने कहा खीर, दूसरी ने चरखा, तीसरी ने कुत्ता, और चौथी ने ढोल । चारो शब्दो का कोई ताल-मेल न था । पर अमीर ने कुछ देर सोचा और प्रत्येक शब्द पर एक पक्ति कही और चारो को मिलाकर उन्हे सुना दिया

खीर बनाई जतन से
चरखा दिया चलाए
कुत्ता आया खा गया
तू बैठी ढोल बजाए ॥

और इस प्रकार अमीर को पीने का पानी मिला । दूसरी ओर वाजिदअली शाह जनता के मध्य इतने लोकप्रिय थे कि कलकत्ता चले जाने के बाद लगभग सत्तर पछत्तर वर्ष तक अवध के गाव-गाव मे यह गीत गाया जाता था

तोरे बिन बरखा न सुहाय ।
कलकत्ते वाले जूया कब आओगे तुम ॥

8 अमीर खुसरो की अनेक रचनाये ऐसी है जिनमे एक से अधिक भाषाओ का प्रयोग है जैसे यह

शबाने हिज्रा दारज चूं जुल्फ व रोजे वसलत चू उम्र कोताह ।
सखी पिया को जो मै न देखूं तो कैसे काटूं अधेरी रतिया ॥

इसमे पहली पक्ति फारसी और दूसरी अवधी भाषा मे है । वाजिदअली शाह ने भी यही तरीका अपनाया है

आस्ताई – एक रे जाने मोरा तोरा जियरा
अन्तरा – साकिया बर खेज़ो जामी वो मेरा
खाक बरसरे कुन गमे अय्या मेरा ॥

इसमे आस्ताई हिन्दी और अन्तरा फारसी मे है। ठीक अमीर खुसरो की लेखनी के समान ! इसी प्रकार ठुमरी, दादरा और ख्याल आदि मे उर्दू, हिन्दी, ब्रजभाषा और अवधी को इस प्रकार मिश्रित किया है कि बस देखते ही बनता है।

9 अमीर खुसरो की वफादारी अपनी चरम सीमा पर थी। दिल्ली-दरबार, जलालउद्दीन तुगलक के प्रति वफादार रहे और 1286 मे मुलतान की जग मे वे अपने अभिन्न मित्र और राजा मुलतान सुल्तान मोहम्मद कान के साथ थे। वह उस जग मे मारा गया। अमीर खुसरो पर उसकी मृत्यु ने कठोर आघात किया और उन्होने इस शोक मे एक लम्बा मरसिया लिखा। हजरत निजामउद्दीन औलिया के प्रति वे इतने वफादार थे कि जब दिल्ली लौटे और उन्हे पता चला कि हजरत ने यह दुनिया छोड दी तो गहरी चोट लगी उनके मन पर। वे हजरत निजामउद्दीन औलिया की मजार पर पहुचे। केवल एक दोहा पढा और वही सर रखकर प्राण त्याग दिये। वह अन्तिम दोहा अमीर खुसरो की वफादारी की एक मिसाल है

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस ।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुदेस ।।

वाजिदअली शाह की नसो मे भी वही खून था, वही चरित्र था। अग्रेजो के साथ हर सन्धि के प्रति वे वफादार रहे, यह बात दूसरी है कि अग्रेजो ने हमेशा बेई-मानी की। वाजिदअली शाह जनता के प्रति भी विश्वासी थे। अपनी सल्तनत छिन जाने के बाद भी जनता को खून-खराबे से बचाने के लिये वह अग्रेजो से नही लडे। वह स्वय लिखते है

न की जंग पर बवजूहाते चन्द
बयां मै करूं उनको ऐ अर्जुमन्द
अगर जंग करता तो दस साल तक
मगर आख़िरश थी शिकस्तो हतक ।।

यदि जग होती तो हजारो मर जाते। सैकडो अपाहिज हो जाते, सैकडो घर लुट जाते, अवध वर्बाद हो जाता और नतीजा कुछ न होता।

10 अमीर खुसरो मुसलमान अवश्य थे, पर अन्धविश्वासी नही थे। उनका पहला धर्म

था इन्सानियत । उनके मजार पर आज भी मुसलमान ही नही, सैकडो हिन्दू और दूसरे धर्म वाले भी हाजिरी देते है ।

दूसरी ओर वाजिदअली शाह का कथन कि 'मेरी दो आखो मे एक हिन्दू और एक मुसलमान' उनकी धार्मिकता को स्पष्ट करने के लिये पर्याप्त है ।

ऊपर लिखी गई कुछ बाते उभय होने के बावजूद अमीर खुसरो और वाजिदअली शाह दोनो मे कही पर कुछ अन्तर भी था । जैसे—

1 वाजिदअली शाह सल्तनते अवध के राजा थे और अमीर खुसरो एक सूफी ।

2 वाजिदअली शाह का प्रारम्भिक जीवन बहुत अच्छा व्यतीत हुआ, अमीर खुसरो का जीवन चौदह वर्ष की आयु तक बहुत खराब गुजरा, जब कि वाजिदअली शाह का अन्तिम जीवन कष्टदायक और अमीर का अन्तिम जीवन अच्छा गुजरा ।

3 अमीर खुसरो को अपने जीवन मे और उसके बाद भी नेकनामी मिली, जबकि वाजिदअली शाह को उनकी जिन्दगी मे अग्रेजो ने और उसके बाद स्वय हमारे देशवासियो ने बहुत बदनाम किया ।

वाजिदअली शाह की रचनाओ को पढने से स्पष्ट होता है कि उन्होने हजरत अमीर खुसरो की परम्परा को ही आगे बढाया है । वे स्वय अमीर के लिये इसी पुस्तक मे लिखते है

' फने मौसीकी मे वो वो ईजाद किये कि चतुरग, तिरवट, तराना के बदले जो बतरीके हिन्दवी मुश्तमिल है, कौल, कबाना, नकशे-गुल बनाये । सभी को निहायत पसन्द आये । हिन्दी पोथियो की तालो मे भी दस्त अन्दाजी की । जल्दतिताला, धीमा-तिताला, चौताला, आडा-चौताला सूलफाख्ता, रूपक, ब्रह्मलक्ष्मी, तीवरा, पटताल, कोकिला के एवज मे सवारी, झूमरी, फिरोदस्त, खम्सा, दोबहर ईजाद की । अलहक एक-एक जरब और उसके खालियो और झूलो मे मिसरी की डलिया कूट-कूटकर भर दी । ध्रुवपदो के बदले ख्यालो की बिना डाली । शौकीनो की उमग तीनो मे खूब अच्छी तरह से निकाली · '

अब कुछ इस पुस्तक के विषय मे

सुर ताल, लय, कृष्ण की रासलीलाओ और नकल कला पर आधारित यह पुस्तक लेखक

ने कुछ इस अन्दाज मे रची है और उसमे इतना द्रव्य भर दिया है कि कोई भी सगीतज्ञ और नाट्य-प्रेमी इसके रचयिता की प्रशसा किये बिना रह ही नही सकता ।

पुस्तक मे हजरत अली की मनकबत के लिये ठुमरी है तो गणेश-स्तुति के लिये दादरा । यदि उर्दू के शेर है तो हिन्दी के दोहे भी । कही पजाबी है, कही बगाली, कही हिन्दी, कही उर्दू और फारसी । ठुमरी भी है, दादरा भी । सावन भी है और ख्याल भी । हर प्रकार के राग और रागनियो को गाये जाने का समय भी इनके साथ ही साथ दिया है । पूरी पुस्तक पढने के बाद दो बातो का अहसास होता है .

1 पुस्तक के रचयिता ने यह पुस्तक एक गुरु की हैसियत से रची है और इसमे इतना द्रव्य भर दिया है कि कोई भी सगीत-प्रेमी इसे पढने के बाद बिना प्रभावित हुये नही रह सकता ।

2 रचयिता को न केवल उर्दू और फारसी पर महारत थी वरन् अन्य देशी भाषाओ जैसे हिन्दी, अवधी, बगाली, पजाबी का भी अच्छा ज्ञान था । इस बात से यह स्पष्ट होता है कि भाषा के माध्यम से लेखक ने एक राष्ट्रीय चरित्र (National Character) बनाने की चेष्टा की है ।

मन मे यह भावना जागृत हुई कि यह खजाना ढका-छिपा अन्धेरे मे पडा है । इसका प्रकाशन दूसरी भाषाओ मे भी होना चाहिये । हिन्दी मे इसका प्रकाशन होने से कम से कम दो लाभ अवश्य होगे पहला तो यह कि सगीत, नाट्य और ललित कलाओ के प्रति रुचि रखने वालो को यह खजाना मिल जायेगा, और दूसरा, न केवल आलोचको वरन् साधारण जनता के सम्मुख रचयिता का कृतित्व, सौ सवा सौ वर्ष पूर्व लखनऊ का सास्कृतिक वातावरण, राष्ट्रीय चरित्र की उत्पत्ति तथा हिन्दुस्तानी तमद्दुन के लिये रचयिता का अगाध लगाव भी उजागर होने मे सहायता मिलेगी ।

इस भावना के साथ मैने डॉ० कृष्णमोहन सक्सेना के साथ मिलकर पुस्तक का हिन्दी लिपिकरण आरम्भ किया, पर बीच मे ऐसी-ऐसी अडचने आई जिससे लगा कि यह कार्य पूर्ण होना मुश्किल है । पर हमने अपना साहस नही छोडा । कहावत है, 'जहा चाह वहा राह', और इस चाह व साहस ने ही अनेक अड़चनो और बाधाओ को पार करने मे सहायता की । अन्तत लगभग एक वर्ष की लगातार मेहनत के बाद यह काम पूरा हो सका ।

आभार

इसी सदर्भ मे डॉ० नय्यर मसूद का जिक्र भी आवश्यक है। 'बनी' की एकमात्र प्रति उनके पास महफूज है और उसी प्रति से इसे हिन्दी मे किया गया है। उन्होने भी इस काम के लिये उत्साहित किया और पुस्तक का ट्रेण्ड क्या रखा जाये इस विषय पर भी मार्गदर्शन किया। हम उनके आभारी है। वीरेन्द्र बाथम ने इस पुस्तक के चित्र आदि लेने मे सहायता की है। हम उनके भी आभारी है।

यह पुस्तक वास्तव मे देखा जाये तो बहुत पहले ही हिन्दी मे प्रकाशित हो जानी चाहिये थी, पर कुछ ऐसे कारणो से देर हो गयी, जिन्हे टाला नही जा सकता था।

—रौशन तक़ी

दीपावली,
1 नवम्बर, 1986

भूमिका

सक्षिप्त परिचय

जिस समय मिर्जा वाजिदअली ने इस दुनिया मे आखे खोली, चारो ओर फिरगी राजनीति का जाल फैला हुआ था । अवध के तख्त पर बादशाह नसीरूद्दीन हैदर राज्य कर रहे थे पर हुक्म कम्पनी सरकार का चल रहा था । मिर्जा वाजिद अली ने अपने बचपन से जवानी तक नसीरूद्दीन हैदर के राज्य का ढग देखा और कम्पनी सरकार के आगे उन्हे मजबूर देखा, दादा मोहम्मद अली शाह की सल्तनत देखी और उन्हे अग्रेजी सरकार के अहदनामो मे फसे देखा, अपने पिता अमजद अली शाह का अहदे-हुकूमत देखा और उन्हे कम्पनी के साथ कभी न सुलझने वाली राजनीतिक गुत्थियो मे उलझते देखा और इस तरह जिन्दगी के चौबीस बरस गुजर गए (1822—1847) । इतने निकट से देखने के बाद मिर्जा वाजिद अली ने राजनीति को भली प्रकार समझ लिया था । कहने और करने को कुछ नही बचा था । सन् 1847 मे अवध की राजगद्दी सम्भालने के बाद दो साल तक रात दिन अथक परिश्रम करके मिर्जा वाजिद अली ने सुधार के यत्न किए और उसमे सफल भी हुए । किन्तु अग्रेजो ने तुरन्त अपना जाल कसना

आरम्भ कर दिया। राजा को बदनाम करना शुरू कर दिया। बचपन से आज तक की सारी राजनीतिक गुत्थिया मिर्जा वाजिद अली की नजर मे थी और आगे उलझने से राजनीतिक दशा उलझती ही जा रही थी।

शारीरिक और मानसिक शक्ति से परिपूर्ण राजा ने अपना ध्यान राजनीतिक उलझाव से हटाकर कला के सरक्षण और 'अदब' की खिदमत की ओर लगा दिया। कला और अदब के ओजपूर्ण वातावरण का अवध मे चारो ओर बोलबाला था। राजा का ध्यान इधर आते ही जैसे इसमे चमक आ गई। कवियो, शायरो और कलाकारो को प्रोत्साहन मिल गया।

1847 ई० से 1856 ई० तक शाही के दौरान तथा इसके बाद 1887 ई० तक जिलावतन मटिया बुर्ज कलकत्ते मे रहकर मिर्जा वाजिदअली शाह ने सौ से अधिक ग्रन्थो की रचना की। इन्हे अपने निजी शाही प्रेस से प्रकाशित कराके तत्कालीन विद्वानो, साहित्य प्रेमियो तथा अपने इष्ट मित्रो तक इन्हे सम्प्रेषित किया। इस विषय मे प्रो० मसूद हसन अदीब लिखते है— 'वाजिदअली शाह का हकीकत से हटकर जो रूप जनता के दिमागो मे बिठा दिया गया है उससे ये शक पैदा हो सकता है कि पैसे की लालच और बादशाह के सम्मुख अपने को वफादार दिखाने के लिए दूसरो ने किताबे लिख-लिखकर उनको दे दी होगी जिनको लेखक बनने के शौक मे बादशाह ने अपना नाम दे दिया होगा। लेकिन ये शक बिलकुल गलत है वाजिद अली शाह शायरो के बडे सरक्षक थे। जब तक वह बादशाह रहे लखनऊ मे शायरो की भीड रही। सल्तनत समाप्त होने के बाद बीसियो शायर उनके सरक्षण में कलकत्ता मे ही रह गए।'[1]

वाजिदअली शाह द्वारा रचित पुस्तको अथवा ग्रन्थो मे जीवन के हर पहलू को उजागर किया गया है। इनमे उनकी आत्मकथा भी है, सगीत भी है, शेरो-शायरी भी और रहस व नाटक भी। जहा वे अपने विषय मे लिखते है, निर्भीकता के साथ स्पष्टत बेलाग भाषा मे। यह साफ़ प्रतीत होता है उन्होने कुछ भी छिपाया नही। भारतीय सगीत को एक नया आयाम देने मे वाजिदअली शाह का बहुत बडा हाथ है। शुद्ध सगीत पर लिखी गई उनकी चार पुस्तको, बनी, दुल्हन, नाजो और सौतुल मुबारक का अत्यधिक महत्व है। इसी प्रकार "मरसिये" के अनेक ग्रन्थ तथा रहस व नाटक की तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें—'दरयाम-ताश्शुक',

---

1 सुल्तान-ए-आलम वाजिद अली शाह—पृ० 95, 108, 109

'अफसाना-ए-इश्क' और 'बहारे-उल्फत' का अपना अलग स्थान है। अमजद अली खा लिखते है—'बहरहाल इसमे कोई शक नही कि वाजिदअली शाह हिन्दुस्तानी अदब और पूर्वी सस्कृति के सरक्षक और प्रेमी थे। उन्होने उर्दू अदब और हिन्दुस्तानी सगीत व नाटक की महत्वपूर्ण सेवाए की है।'[2]

इन पुस्तको और ग्रन्थो मे बनी को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है "दुल्हन"। इस ग्रन्थ मे बादशाह ने गायन, वादन, नृत्य तथा नाट्य (रहस तथा भडैती) पर जो सामग्री प्रस्तुत की है वह बहुमूल्य है और उसका एक ऐतिहासिक महत्व है। 'बनी' की भूमिका एव पूरी पुस्तक की भाषा-शैली से यह स्पष्ट है कि वाजिदअली शाह ने यह पुस्तक एक निर्देशक एव गुरु की हैसियत से रची है।

व्यक्तित्व

वाजिदअली शाह शारीरिक रूप से शक्तिशाली और चेहरे से सुन्दर एवं रोबदार व्यक्तित्व के मालिक थे। अनेक लेखको ने उनकी शक्ति के विषय मे लिखा है कि अँगूठे और अँगुली के बीच मे सिक्के को रखकर ऐसा घिसते थे कि उस पर के चिन्ह मिट जाते थे और उसे दबाकर गोली बना देते थे।[3] वह एक शक्तिशाली, कार्यकुशल और अच्छे व्यवहार के व्यक्ति थे। रेजीडेन्ट कर्नल सलीमन अवध का सबसे बडा दुश्मन और वाजिदअली शाह के चरित्र को धूमिल करने वाला था, उसने भी अनेक स्थानो पर वाजिद अली शाह के विषय मे इस प्रकार लिखा है—

Oct 11, 1849—He has never been a cruel or badly disposed man [4]
Jan.–12, 1853-He is neither tyrannical nor cruel [5]
June 1, 1854–There never was on the throne I believe a man more ineffensive of heart than he is [6]

2—हुज्ने अख्तर—सकलन अमजद अली खा [उर्दू], पृष्ठ 56
3—चमनिस्ताने मुजफ्फर—वाजिद अली शाह और उनका अहद, पृष्ठ 668
4—सलीमन का पत्र, हेनरी एलियट, सेक्रेटरी गवर्नर जनरल के नाम
5—सर जेम्स को रेजीडेन्ट सलीमन द्वारा लिखा गया पत्र
6—सलीमन का पत्र कर्नल लू के नाम

11 अक्टूबर, 1849—वह कभी भी निर्दयी या दुर्व्यवहार व्यक्ति नही रहे ।
12 जनवरी, 1853—वह जालिम व बेरहम नही है ।
1 जून, 1854—मै समझता हू कि उनसे ज्यादा शरीफ व्यक्ति आज तक तख्त-ए-शाही पर कभी नही बैठा ।

दबीरूल इशा मु शी मोहम्मद जहीरउद्दीन खा बहादर बिलगिरामी शाही दारूल इशा के मीर मुशी थे । मोहम्मद अली शाह, अमजद अली शाह और वाजिद अली शाह के समय मे वह शाही दारूल इन्शा (सचिवालय) के मीर मुशी (मुख्य सचिव) रहे । सल्तनत के दावपेचो के विषय से वह भली प्रकार परिचित थे । साथ ही बादशाह के विषय मे भी एक एक बात जानते थे । वाजिद अली शाह के लिए वह लिखते है कि वह बहुत दयालु, शरीफ और दूसरो का ध्यान रखने वाले बादशाह थे ।

मौलवी अब्दुल हलीम शरर ने वाजिद अली शाह की जिन्दगी का कलकत्ते का दौर अपनी आखो से देखा था । वह लिखते है—'उनमे तहजीब थी, देनदारी थी, कद्रदानी थी, और बहुत ज्यादा खुदफरामोशी थी [7]'

परिपूर्णानन्द वर्मा लिखते है 'ये जो खुदा और भाग्य पर विश्वास रखते है। उन्हे बादशाह की जिन्दगी से नही पता चलेगा कि सभी विशेषताए होते हुए भी अगर खुदा की मरजी नही है तो इन्सान कुछ नही कर सकता । वाजिदअली शाह ऐसे ही साहसी, दयालु व चरित्रवान बादशाह थे । उनमे दूरअदेशी की कमी थी । लेकिन प्रशासन योग्यता की कमी न थी ।
. जैसे-जैसे सल्तनत का काम करना असम्भव होता गया । वह साहित्य, सगीत नाटक, पुस्तके लिखने और ऐतिहासिक जानकारी एकत्र करने, हिन्दू मुस्लिम एकता और दूसरे सास्कृतिक कार्यों की ओर आकृष्ट हुए । हिन्दुस्तानी कला और सस्कृति की रक्षा का उन्होने महत्वपूर्ण काम किया । किसी शरीफ लडकी की तरफ उन्होने कभी बुरी नजर नही डाली । जबरदस्ती किसी को अपनी पत्नी बना लेना उन्होने सीखा ही न था—— सबसे बडी बात ये थी कि उनमे साम्प्रदायिक भावना छू तक नही गई थी । वह वास्तव मे सच्चे हिस्दुतानी थे ।'[8]

7—हुज्ने अख्तर, पृ० 10
8—वाजिदअली शाह और अवध राज्य का पतन—डॉ० परिपूर्णानन्द वर्मा, पृष्ठ 15, 16

मिर्जा मोहम्मद तकी 'आफताबे अवध' मे उनकी इन्साफ पसन्दी के विषय मे लिखते है कि "जिस मुकद्दमे की उनको खबर पहुची कभी इन्साफ को हाथ से जाने न दिया ।" नज्मुल गनी ने तारीखे अवध मे लिखा है कि "यह बादशाह अपने व्यक्तित्व से इन्साफ पसन्द था, किसी सहपथी या वामपथी या अमीर या गरीब के इन्साफ मे कभी पक्षपात नही किया ।"

एक बार बादशाह की एक बेगम नवाब निशात महल के भाई मोहम्मद बाकर के हुक्म से उनके नौकर ने किसी हिन्दू कुम्हार के सर पर तलवार की मूठ मार दी जिससे वह मर गया । इस पर कानूनी दफा के अनुसार वजीरेआजम अली नकी खा ने दीवानखाना के दारोगा को हुक्म दिया कि सारे हालात का पता लगाकर बताया जाए । बादशाह को जब इसका पता चला तो उन्होने कहा कि वजीरेआजम और दारोगा दीवानखाना निशात महल, निशातमहल की इज्जत के कारण इन्साफ न कर सकेगे इसलिए मै इसका फैसला करूँगा । ऐसा सुनकर नवाब निशात महल ने बादशाह से मिलना चाहा पर बादशाह ने मिलने से इनकार कर दिया और हुक्म भेज दिया कि जब तक मुकद्दमे का फैसला न हो जाए आप हमसे नही मिल सकती । उस कुम्हार के घर की औरते बहुत इज्जत के साथ निशात महल के पास पहुचाई गई और निशात महल ने उनके पैरो पर सर रखकर माफी माँगी । महल की अन्य औरते यह देखकर काप गई और उन्होने भी उनके पैरो पर सर रख दिए । इन औरतो ने आठ सौ रुपये लेकर 'राजीनामा' लिख दिया कि तलवार की मूठ कत्ल करने के इरादे से नही मारी गई थी और यह एक दुर्घटना थी । बादशाह ने ये राजीनामा पढा फिर कहा कि जो कानूनी हुक्म है, जारी किया जाएगा, किसी की सिफारिश नही सुनी जाएगी ।[9]

इसके अतिरिक्त प्रो० ममूद हसन ने दो घटनाएँ उनकी इन्साफ पसन्दी की लिखी है । वह लिखते है कि एक दिन बादशाह बाग की सैर से वापस आ रहे थे कि एक गरीब बुढिया ने अपने आपको बादशाह के घोडे के आगे गिरा दिया । बादशाह को बताया गया कि इस बुढिया की एक बहुत सुन्दर नवजवान लडकी थी । कस्बे का जमीदार घर मे घुसकर लडकी को उठा ले गया है और उसे अपने घर मे डाल लिया है । अब वह बुढिया इन्साफ चाहती है । पूरी बात सुनकर बादशाह गुस्से से कापने लगे और हुक्म दिया कि तुरन्त लडकी को वापस लाने का हुक्म दिया जाता है । शाही फौजें तुरन्त उस कस्बे मे पहुची जहाँ यह घटना घटित

9–इसरारे-वाजिदी—(सुल्ताने आलम वाजिदअली शाह–प्रो० मसूद हसन), पृष्ठ 59

हुई थी और उस जमीदार को गिरफ्तार करके उसके घर मे आग लगा दी और लडकी को उसके घर से निकालकर उसकी मा के यहा पहुचा दिया गया ।[10]

इससे भी बढकर एक घटना उस समय की है जब बादशाह अपने बेटे वलीअहद की बारात लेकर दुल्हन के घर जा रहे थे कि लोहेवाले पुल के निकट एक हाथी के धक्के से एक हलवाई की दुकान का एक भाग गिर गया । बादशाह ने तुरन्त अपनी सवारी रोक दी । वजीरो ने तथा अन्य लोगो ने कहा कि उसका नुकसान भर दिया जाएगा, बारात चलाई जाए, निकाह का वक्त निकला जा रहा है । पर जब तक उसका नुकसान भर नही दिया गया, बादशाह ने अपना हाथी आगे नही बढाया ।[11]

शासनकाल

वाजिदअली शाह के शासनकाल के विषय मे लिखने के लिए पूरी एक पुस्तक अलग से लिखी जा सकती है । किन्तु यहाँ पर इस पुस्तक 'बनी' के हमराह पाठको की जानकारी एव ज्ञान हेतु सक्षेप मे इस विषय पर प्रकाश डाला जा रहा है ।

अमजद अली शाह की मृत्यु के बाद 13 फरवरी, 1847 ई० को सूरज ढलने के बाद वाजिदअली शाह अवध के तख्त-ए-सल्तनत पर विराजे । उस समय उनकी आयु हिन्दुस्तानी कैलेण्डर के अनुसार लगभग चौबीस वर्ष चार महीने और अग्रेजी कैलेण्डर के अनुसार लगभग तेईस वर्ष छह महीने थी । उस समय सल्तनत के पुराने उस्ताद अमीनउद्दौला वजीरेआजम थे जो केवल 5 मास और 12 दिन इस पद पर रहे और 5 अगस्त, 1847 ई० को बादशाह ने नवाब अली नकी खा को अपना वजीरेआजम बनाया । रेजीडेन्ट ने इस बात को अस्वीकार करना चाहा, पर बादशाह अपने फैसले पर अटल थे और रेजीडेन्ट को झुकना पडा ।

सल्तनत की बागडोर हाथ मे आते ही सुल्ताने आलम ने कडी मेहनत और शाही वसूलो से राज्य आरम्भ किया । अहसनुल तवारीख का लेखक लिखता है कि "बादशाह सुबह सवेरे उठकर आधी रात तक एक मिनट का आराम नही करते थे ।" सुबह परेड के मैदान पर पहुच

10 वाजिदअली शाह—मसूद हसन, पृष्ठ 57-59
11 वही

जाते और स्वय परेड लेते । कडी धूप और धूल मे दोपहर तक फौज की तैयारी पर लगे रहते । अनेक नई पलटने बादशाह ने स्वय बनाई थी और फारसी अन्दाज की अनेक नई तैय्यारिया फौज को शुरू करवा दी थी । दोपहर मे दीवाने खास मे राजकाज के विषय मे मत्रणा आदि तथा आदेश, दोपहर के खाने के बाद सल्तनत के वजीरो तथा जमीदारो से हालात का पता लगाना । शाम को हवाखोरी के समय गरीबो और जनता की फरियाद सुनना । रात मे दीवाने आम और फिर लिखना पढना, यह थी उनकी नित्य चर्या ।

दो वर्षो तक इसी प्रकार राजकाज चलता रहा, अवध फलता-फूलता रहा कि अचानक इसको किसी की नजर लग गई । सल्तनत मे चारो ओर अमन था पर कम्पनी की ओर से कहा जाने लगा कि चारो ओर हाहाकार है । जनता प्रसन्न थी, कम्पनी बहादर की ओर से इल्जाम लगाया गया कि जनता बहुत परेशान व दुखी है । बादशाह की फौजी शक्ति बढ रही थी । कम्पनी बहादर की ओर से कहा गया कि अवध की सैन्य शक्ति के लिए देशी सिपाही नही अग्रेज सिपाही रखे जाएँ और उनका वेतनादि बादशाह की ओर से ही दिया जाए ।

बादशाह की निरन्तर यह लगन थी कि सलतनते-अवध का शासन अच्छे से अच्छा हो जाए और फिरगियो की यह राजनीति थी कि शाह को अपने बिछाए हुए जाल मे अधिक से अधिक कसा जाए । केवल दो वर्ष का राजकाज और बादशाह की मेहनत को देखकर कम्पनी सरकार को शाह की बढती हुई लोकप्रियता और शासन की सैन्य शक्ति से खतरा पैदा हो गया और गोरो ने 'लडाओ और राज्य करो' की राजनीति के अनुसार राज्य मे घुसपैठ आरम्भ कर दी ।

अली नकी खा को अग्रेजो ने बादशाह बनाने का लालच देकर अपनी ओर मिला लिया और बादशाह पर दबाव डाला गया कि वह फौजी सरगर्मी छोड दे । मिर्जा मोहम्मद तकी लिखते है कि 'एक दिन नवाब अली नकी खा बहादर वजीरेआजम ने अर्ज किया कि ये फौजी तैय्यारी रेजीडेन्ट बहादर को पसन्द नही है और क्योकि अग्रेजी सरकार की बात हमे हर तरह मानना चाहिए थी, इसलिए उस दिन से इस ओर से बिलकुल किनारे हो गए ।[12] फौजी दिल-चस्पी से उनका ध्यान मोड दिया गया । और इस प्रकार बचपन से दबे शौक को शाही रूप मे सरक्षण प्राप्त हुआ । उनका झुकाव अदब व साहित्य की ओर हो गया तथा अवध की विभिन्न ललित कलाओ को इस प्रकार सरक्षण प्राप्त हुआ ।

12 आफताबे अवध—मिर्जा मोहम्मद तकी

वाजिदअली शाह स्वय लिखते है कि 'अख्तर शाहे आखिर अवध यह फकीर हकीर राकिम ओ-मुसबिफ-ओ-मोअल्लिम सरापा तकसीर है। पन्द्रह बरस के सिन मे वालिद जन्नत मका ने वली अहद और वजीर किया। बीस बरस के सिन मे तख्ते अवध पर बजाए हजरते आला कायम हुए। तीस बरस के सिन मे बिला सुदूर जुल्म और नाइन्साफी ओ बेआजार रय्यत बेसबब तख्त से महरूम किया गया। बीस बरस से कलकत्ता मोहल्ला मोची खोला मुलक्कब बा मटियाबुर्ज मे कयाम है। पचास बरस का सिन हुआ। छब्बीस महीने किला विलियम फोर्ट मे नाहक कैद रहा।'[13]

राजेश्वर प्रसाद नारायण सिह ने भी अपने शब्दो मे वाजिदअली शाह के जीवन के घटनाक्रम को इस प्रकार सयोजित किया है—'कम उम्र थी जब वह गद्दी पर बैठे, शरीर मे बल था, मन मे उत्साह, अवध की ढलती हुई सल्तनत को पुन दृढ करने की दिल मे तमन्ना। अत- राज्य की बागडोर हाथ मे आते ही उन्होने जोश खरोश के साथ राज्य का सचालन शुरू किया। रिआया खुश कि अब उसके ऊपर जो राज्याधिकारियो का जुल्म था, वह समाप्त हुआ। चूकि बादशाह अब स्वय भी उनकी बाते सुनते और उन पर फैसला देते, कोई किसी पर ज्यादती नही कर सकता था। फौज मे ढीलापन आ गया था, अत वह स्वय घण्टो धूप मे खडे रहकर उसे ट्रेनिग देते, परेड करवाते थे। उनकी यह कार्यपटुता और लोकप्रियता डलहौजी की आँखो मे काटे की तरह चुभने लगी थी। तभी नवाबे अवध बनने का स्वप्न देखता हुआ नकी खा उनके साथ जा मिला।'

लगभग नौ वर्षों तक अवध सल्तनत पर राज्य करने और ललित कलाओ का सरक्षण करने के बाद अग्रेजो ने बादशाह को और समय नही दिया और अपनी पूर्व नियोजित राजनीति के अनुसार 7 फरवरी, 1856 ई० को अवध सल्तनत को अग्रेजी राज्य मे मिलाने की घोषणा कर दी। पूरे अवध मे तहलका हो गया। फिरगियो के खिलाफ क्रोध की एक लहर चारो ओर दौड गई। पर बादशाह ने लडना ठीक न समझा और सल्तनत की वापसी के लिए कम्पनी के खिलाफ मुकद्दमा करने की सोची। वाजिदअली शाह फिरगियो के विरुद्ध सघर्ष न करने का कारण

---

13 बनी—वाजिदअली शाह, अध्याय पाच

स्वय बताते है—

न की जग पर बावजूहातेचन्द[1], बयाँ मै करूँ उनको ऐ अर्जुमन्द[2]
थी एक वजह यह बाहमी[3] था करार[4], हलफ उस प थे बाहमी आशकार'[5]
अगर जग करता तो दस साल तक, मगर आखरश थी शिकस्तो हतक[6],
लडाई का पहला ही फन है फरेब,[7] मै सय्यद मुझे मक्र[8] था कब नसीब
सोमे[9] ये कि हो जाती बेवा जना[10], बहुत कुश्तो खून होता उस दम अया[11]
जवाबे खुदा देता क्या रोजे हश्र,[12] जो ये खून होता जहाँ भर मे नश्र[13]

इस प्रकार ये बात सामने आती है कि बादशाह के अमन पसन्द स्वभाव ने दूरदर्शिता से काम लिया । जग मे सैकडो हजारो का निरपराध रक्त-स्राव होगा । सैकडो सुहागिने विधवा हो जाएँगी, हजारो बच्चे अनाथ हो जाएँगे और फिर भी परिणाम वही होगा जो इस समय होना है । अत यह निश्चय किया कि कम्पनी के विरुद्ध एक मुकद्दमा करने और इगलिस्तान की रानी से इन्साफ लेने के लिए लन्दन को जाया जाए । इस निश्चय के साथ बादशाह ने 12 मार्च, 1856 ई० को रात के अन्धेरे मे लगभग आठ बजे इस आशय से लखनऊ छोडा कि शायद यहा फिर आना हो पर किस्मत ने हमेशा के लिए उनसे उनका वतन छुडा दिया । लखनऊ छोडते समय बादशाह की जुबान पर ये शेर था—

दरो दीवार पर हसरत से नजर करते है ।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते है ।।

वाजिद अली शाह अपने छोटे से शासनकाल मे जनता मे इतने लोकप्रिय हो गए थे कि जिस समय वह लखनऊ छोडकर जा रहे थे लखनऊ के हिन्दू और मुसलमान इस प्रकार रो रहे थे कि जैसे कोई नातेदार मर गया हो । यही नही, एक लम्बी-चौडी भीड़ उनके साथ कानपुर तक गई और वाजिद अली शाह के बहुत आग्रह करने के बाद ही वे लौटे । अनेक शायरो ने अपने दर्द को अपने अपने शब्दो मे व्यक्त किया है—

वाजिद अली मोरा प्यारा, आप लन्दन को सिधारा
गलियो गलियो खाक उडत है, गलियो मे अधियारा

1—कुछ, 2—मेरे भाई, 3—आपसी, परस्पर, 4—प्रेम सम्बन्ध, 5—खुले हुए, 6—हार व अपमान, 7—धोखा, 8–धोखा देने की कला, 9— तीसरे, 10—औरते, 11—प्रकट, 12—कयामत के दिन, 13—प्रचारित

आप लन्दन को सिधारा (लोक गीत)

लखनऊ बेकस हुआ हज़रत जो लन्दन को गए,
हम यहाँ नाला है, वह फरियादे दुश्मन को गए।
—शहीद

गाववाले एक गीत गाते थे, जिसका मुखडा था—

हज़रत जाते है लन्दन, हम पर कृपा करो रघुनन्दन।

लन्दन जाने के विचार से ही वाजिद अली शाह ने अपना सफर आरम्भ किया था पर कलकत्ते तक पहुचते-पहुचते तबियत खराब हो गई और उन्हे वही रुक जाना पडा। मटिया बुर्ज कलकत्ते मे ही लगभग तीस वर्षो का कष्टदायक जीवन व्यतीत करने के बाद 20 सितम्बर, 1887 ई० को शाह का देहान्त हो गया। कलकत्ते के उन तीस वर्षो का अपना एक अलग इतिहास है।

'बनी' का रचनाकाल

हिन्दुतान के मुसलमान बादशाहो मे ऐसा कोई बादशाह दिखाई नही देता जो वाजिद अली शाह जैसा कुशाग्र बुद्धिवाला, बुद्धिजीवी एव रचनात्मक मस्तिष्क वाला हो और जो अत्यधिक साधारण और लगभग सौ पुस्तको का लेखक हो। राजेश्वर प्रसाद नारायण सिंह लिखते है—"वाजिद अली शाह विद्वान् पुरुष थे—उर्दू, फारसी, अरबी के अलावा फ्रेंच और इग्लिश भाषाओ के भी निपुण ज्ञाता थे। उन्होने इनमे पुस्तके भी लिखी थी, जिन्हे अग्रेजी सरकार ने जब्त करके उनकी सारी उप्लब्ध प्रतिया जलवा डाली थी।

एक गुमनाम लेखक के अनुसार, 'बादशाह मे सगीत नाट्य के प्रति जन्मजात अभिरुचि थी। वे कुशल प्रशासक तथा कलाविद् दोनो रूपो मे समान गति से सक्रिय रहे ·· यदि वे अग्रेजो की कूटनीति के जाल मे न उलझते तो अवध का सास्कृतिक वैभव कैसा होता इसकी एक अनुभूतिजन्य कल्पना ही की जा सकती है।'

ये सच है कि वाजिद अली शाह के शासन काल से पहले युवराजी के समय मे, शासन काल मे और शासन की बागडोर हाथ से छिन जाने के बाद भी मृत्यु के समय तक अवध की ललित कलाओ को उनका सरक्षण प्राप्त रहा, लखनऊ मे भी और कलकत्ते मे भी।

12 मार्च, 1856 ई0 को लखनऊ से चलकर कानपुर और बनारस होते हुए वाजिद अली शाह 12 मई, 1856 को कलकत्ता पहुचे और मोहल्ला मोची खोला [मटियाबुर्ज] मे ठहरे। सफर से बहुत थक जाने के कारण ऐसे बीमार पडे कि खाट पकड ली। लन्दन जाने का इरादा छोडना पडा। अन्तत उनकी मा मलिका किश्वर और बेटा नौशेरवा कदर ही लन्दन को गए।

इधर अवध मे क्रान्ति के समाचार कलकत्ते तक पहुच रहे थे। कम्पनी सरकार को सन्देह हुआ कि क्रान्ति मे वाजिदअली शाह का हाथ है और उन्हे फोर्ट विलियम मे कैद कर लिया गया। दो वर्ष फोर्ट विलियम मे बादशाह ने कठोर कारावास मे व्यतीत किए।

फोर्ट विलियम से आजाद होने के बाद बादशाह के पास एक बादशाह, एक शासक, एक सेना नायक के रूप मे कुछ शेष न था। अत वाजिद अली शाह का ध्यान फिर ललित कलाओ की ओर आकृष्ट हुआ और इस समय से देहावसान तक के समय मे वाजिद अली शाह ने अपनी अधिकतर पुस्तको की रचना की।

'बनी' की रचना

उर्दू अदब मे उस समय मे तरीका था कि पुस्तक के लिए 'तारीख' कही जाती थी। 'बनी' के लिए भी अनेक शायरो ने तारीख कही जिसे पुस्तक के साथ ही अन्त मे प्रकाशित किया गया है। वजीर-उल्-सुल्तान नवाब मोहम्मद अली खॉ बहादर, गुलशन-उद्दौला बहादर 'बहार', ताशउद्दौला बहादर 'ऐश', मुजफ्फर अली 'हुनर', सादिक अली 'मायल' शार्गिद बादशाह, मालिकउद्दौला बहादर 'मुखलिस', राजा गगाप्रसाद बहादर 'बदर', खुलासतउद्दौला मुशी अली नकी बहादर, आगा हज्जू 'शरफ', नुसरतउद्दौला बहादर 'नादिर', अब्दुल हकीम 'खाविर', शार्गिद शाह अली गौहर, मेहदी हसन 'अहसन', मुशी अली बख्श 'हाशिम', शिवप्रधान महाराजा जगपाल सिह बहादर, मीर हसन जान 'जिया', शायर खुशगो 'रियाज़', मीर सरवत अली 'हुमायु', मीर कासिम हुसैन 'जौहर', मोहम्मद अली दारोगा कुतुबखाना शाही, रईसउद्दौला बहादर, सभी विद्वानो के कथनो से सन् 1878 ई० की पुष्टि होती है। हाशिम के अनुसार, यह पुस्तक 1877 ई० मे लिखकर तैयार हुई, इसी सन् मे प्रेस कापी बनी और सन् 1878 ई० मे प्रकाशित होकर चर्चित हुई।

कलकत्ता मे शाही छापाखाना के दारोगा [प्रबन्धक] अमीर अली खॉ 'हिलाल' थे।

उनके विषय मे बादशाह लिखते है—"वे अहदे शाही मे छापाखाना से सम्बन्धित रहे, दारोगा रहे, सल्तनत समाप्त होने के बाद जब मै कलकत्ता पहुचा मेरे साथ थे, और मेरे ही साथ किला विलियम फोर्ट मे दो साल दो महीने तक कैद रहे, और आजादी के बाद मरने तक यह शख्स मेरे सेवको मे रहा।"[14] यही हिलाल एक स्थान पर लिखते है—

'शह किशोरे हिन्द सुल्ताने आलम।
सुलेमाने अख्तर नगर जानेआलम॥'

हामिदउद्दौला सैय्यद महमूद अली खा बहादर 'बरतर' ने 'बनी' और वाजिद अली शाह के विषय मे लिखा है—

'कोई कामिल ऐसा जहाँ मे नही।
किताबे हर एक फन मे तसनीफ की॥
हकीकत मे है माहिर हर जुबा
अरब से अजम तक है सब मदहा ख्वाँ॥
एक अदना सी जिद्दत है यह शाह की
हुई पहले 'नाजो', 'दुल्हन' फिर 'बनी'॥'

इन शेरो से निकलता है कि सन् 1875 मे 'बनी' लिखना आरम्भ हुई[15] और 1877 ई० मे पूरी हुई। अत यह बात स्पष्ट है कि 'बनी' 1875 ई० और 1877 ई० के बीच लिखी गई, 1877 ई० मे इसकी प्रेस कापी बनी और 1878 ई० मे यह पुस्तक पहली बार प्रकाशित हुई।

वही 'बरतर' एक दूसरे स्थान पर लिखते है—

अख्तर बडा जुग-जुग जियो
मुख सेहरा सर मुकुट बिराजे
"बनी" बनाई चचल महने
सुन्दरी के मन मन प्यारे
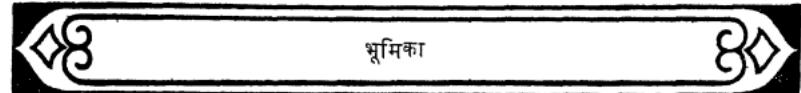
---

14 बनी—अध्याय पाँच

15 परिशिष्ट देखिए—उर्दू मे तारीख कैसे कही और कैसे निकाली जाती है।

"बरतर" ने तारीख बिचारी रसभीनी नित बतियाँ करके
हसमुख पाए 'बनी' रगीली जाओ घनेरी राज दुलारी।

'बनी' के अन्य प्रकाशनो के विषय मे अभी तक और कुछ पता नही चलता। इस एकमात्र प्रकाशन मे 'बनी' छ अध्यायो मे विभाजित है—सुर, ताल, नृत्य, रहस, भडैतो, महलात और बेगमात के खिताब।
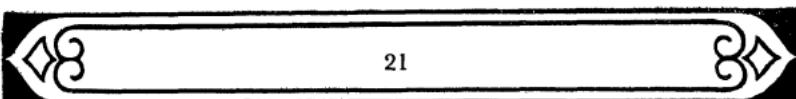
वाजिदअली शाह, ललित कलाए और कुछ भ्रान्तियाँ
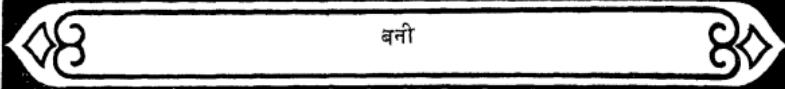
वाजिदअली शाह को बचपन मे ही सगीत से लगाव था। प्रसिद्ध है कि प्राय अपने उस्ताद अमीनउद्दौला मे पढते समय एक सधी थाप पर पैर की थाप दिया करते थे और इसी बात पर एक बार अमीनउद्दौला ने उन्हे मारा भी था। पर आदत नही गई और समय के साथ-साथ शौक बढता ही रहा।

सन् 1842 ई० मे, वलीअहद (युवराज) बनने के बाद इस शौक को पूरा करने का अवसर मिला। मण्डली तैयार करने के लिए मिर्जा वाजिद अली ने कुछ पेशेवर नाचने-गाने-वालियो को एक स्थान (कोठी लका) 'केसरबाग' मे एकत्र किया और उसका नाम परीखाना रखा। परीखाना मे रहनेवाली विभिन्न परियो को नाम दिए गए और उन्हे रहस के नृत्यो एव रहस के खेलो का उपयुक्त प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रकार राधा-कन्हैया की प्रेमगाथा पर आधारित पहला रहस, मिर्जा वाजिद अली द्वारा रचित 'किस्सा राधा-कन्हैया' केसरबाग की एक इमारत कोठी लका, जिसे परीखाना कहा जाता था, मे खेला गया।

इस रहस की तैयारी, वाजिदअली शाह के अनुसार, हर कला के उस्ताद ने कराई थी। ये सख्या मे सात थे और मिर्ज़ा वाजिद अली के मासिक नौकर थे। इस नाटक मे सुल्तान परी ने राधा का चरित्र और माहरूख परी ने कन्हैया जी का चरित्र अभिनीत किया था—अन्य परियो मे यासमीन परी, इज्जत परी, दिलरूबा परी और हूर परी ने कृष्ण जी की अन्य प्रेमिकाओ के चरित्र अभिनीत किए थे।[16]

---

16 इश्कनामा (फारसी)——वाजिद अली शाह, पृष्ठ 148-150

सुल्तान परी एक नर्तकी थी जिसका वास्तविक नाम हैदरी था। यह परीखाना की दारोगा भी थी। उसकी बडी बहन दिलबर नृत्य मे अद्वितीय थी।[17] माहरूख परी एक वेश्या थी जिसका वास्तविक नाम महबूब जान था। वह सरोद बजाने और नृत्य मे निपुण थी।[18] दिलरूबा परी भी एक प्रसिद्ध वेश्या फैजू चूनेवाली की लडकी थी और उसका वास्तविक नाम चुन्नी था।[19]

यासमीन परी और इज्जत परी का नाम न पता चल सका पर परीखाना मे आने के समय वे नृत्य, सगीत आदि नही जानती थी, वही आकर सबकी शिक्षा पाई थी। हूर परी अमीरन डोमनी की लडकी थी और उसका वास्तविक नाम नज्जा था। वह सगीत व नृत्य मे निपुण थी और बाद मे वेश्यावृत्ति करने लगी थी।[20]

सन् 1847 ई० मे 13 फरवरी को वाजिदअली शाह बादशाह बने। बादशाह बनने के बाद भी ललित कलाओ को सरक्षण प्राप्त रहा। सन् 1850 ई० मे वाजिदअली शाह का लिखा-रहस 'दरया-ए-ताश्शुक', पुनः 1851 ई० मे दूसरा रहस 'अफसाना-ए-इश्क' तथा 1852 ई० मे तीसरा रहस 'बहरे-उल्फत' नाटक के रूप मे कैसरबाग के विभिन्न स्थलो पर खेले गये।[21]

1860 ई० मे किला विलियम फोर्ट से आजाद होने के बाद तथा 1887 ई० मे देहावसान तक बादशाह का ललित कलाओ को सरक्षण प्राप्त रहा। प्रो० मसूद हसन के अनुसार—"1292 हिजरी (1873 ई०) तक वाजिदअली शाह ने कलकत्ते मे तेईस रहस किये थे। उस समय भी मटियाबुर्ज मे दो इमारते रहस आदि के लिए प्रयुक्त होती थी—राधा मजिल और सारदा मजिल। इसमे कुल मिलाकर 216 रहसवालिया थी और इनकी तन्ख्वाह 9598 रु० माहवार थी। उन्हे सिखाने के लिए उस समय 134 उस्ताद (साजिन्दे) थे जिनका मासिक वेतन 3261

---
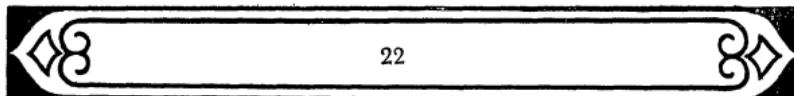
17 महलखाना शाही, पृष्ठ 42, 116

18 वही, पृष्ठ 41, 61

19 वही, पृष्ठ 52, 53

20 महलखाना शाही—वाजिदअली शाह, पृ० 42

21 लखनऊ का शाही स्टेज—प्रो० मसूद हसन, पृ० 121, 140, 155

रु० माहवार था। इन रहसो की शिक्षा स्वय बादशाह् देखते थे । वह् रहस जो कलकत्ते मे हुए नाच गाने तक ही सीमित थे ।"[22]

लखनऊ मे तथा कालान्तर मे कलकत्ता मे इतने कलाकारो को सरक्षण देना तथा सबको नियत्रित करना कोई आसान काम नही था । बादशाह् ने कलाकारो के साथ उनके परिवार-जनो को भी आश्रय दिया । रहसवालियो को खिताब देकर उन्हे सामाजिक सम्मान दिया तथा उनमे से अनेक से शादिया भी की । इससे इन महिला कलाकारो को सम्यक् सरक्षण मिला और वे बिना किसी भ्रम अथवा हस्तक्षेप के कला-साधना मे सलग्न हो सकी । इस पद्धति के पीछे बादशाह् का कला के प्रति शुद्ध लगाव था किसी प्रकार के वासनात्मक सम्बन्ध की प्रवृत्ति नही थी । शिक्षा के समय बादशाह् पूर्ण नियत्रण रखते थे । इसके लिए राज्यादेश बनाए गए थे । तालीम के समय वे स्वय बिना खाए-पिए पहरो बैठे रहते थे ।

ललित कलाओ मे उस समय लखनऊ और अवध मे नकल कला और भडैती का भी बोल-बाला था । जन मनोरजन का यह् भी एक साधन था । अत इसे भी ललित कलाओ मे जोड लिया गया था । इस कला को भी बादशाह् का सरक्षण प्राप्त था । अनेक भाड शाही दरबार से मासिक वेतन पाते थे । यही नही, अपनी इस पुस्तक बनी मे वाजिदअली शाह् ने भाडो के करने के लिए लगभग 200 नकले भी लिखी है जिनमे कुछ नकले बहुत उच्चस्तरीय है और कुछ जन-मनोरजन की । एक नकल मुशायरे की अपने आपमे साहित्यिक पुट लिए हुए अद्वितीय है । इसमे 52 प्रसिद्ध शायरो की नकले उतारी गई है जिसमे 26 उर्दू के तथा 26 फारसी के है और इन सारे शायरो के कहे हुए कलाम का पहला शेर बादशाह् ने स्वय लिखा है । इस नकल को ध्यान से पढने के बाद वाजिदअली शाह् के अद्वितीय भाषा ज्ञान, साहित्य-परख और कला-सरक्षण-क्षमता का सरलतापूर्वक अनुमान लगाया जा सकता है ।

कुछ भ्रान्तिया तथा निवारण

प्राय ये भ्रान्ति जनता मे व्याप्त है कि वाजिदअली शाह् राजा इन्द्र थे और सैकडो व हजारो स्त्रियो के बीच रहकर नृत्य व सगीत मे लीन रहते थे और इन्द्र-सभा के नाम से

---

22 लखनऊ का शाही स्टेज—प्रो० मसूद हसन, पृष्ठ 121, 140, 145

कैंसरबाग मे नाटक खेला जाता था। इस सदर्भ मे सीतला सहाय का एक लेख 'चाँद' मासिक पत्रिका मे मार्च, 1934 ई० मे प्रकाशित हुआ था। उसके मुख्य भाग यहाँ दिये जाते है," ..... जब तक अमजद अली शाह जिन्दा रहे, नृत्य कला का इनका (वाजिदअली शाह का) यह प्रेम कुछ विशेष व्यक्तियो को छोडकर बाकी सब लोगो से छिपा रहा। अमजद अली शाह को वाजिदअली शाह का यह रग ढग पसन्द नही था। वे मरते समय वसीयत कर गये थे कि उनके बाद राज्य का अधिकारी न बनाया जाए जाडे की ऋतु मे किसी महीने नवाब साहब एक नाटक 'इन्द्रसभा' खेला करते थे। यह नाटक शाही ढग का होता था अर्थात् इनका नाटक · दस दिन तक रात-दिन बराबर चलता रहता था। इस नाटक को केवल महल की स्त्रियाँ और राज परिवार वाले ही देख सकते थे। इसका रगमच सारा कैंसरबाग होता था। कैंसरबाग की सफेद बारादरी मे, जिसमे आजकल अनेक सभाएँ होती है राजा इन्द्र का दरबार लगता था।" और इसके बाद गिजाला और राजा इन्द्र की न जाने कौन सी मनगढत कहानी दी है जिस पर वह नाटक खेला जाता था। आगे वह फिर लिखते है, ' कैंसरबाग बारादरी तीन भागो मे बाटी जाती थी। एक भाग मे राजा इन्द्र का दरबार लगता था दूसरे भाग मे राजा का कमरा सजाया जाता था ......' और तीसरे भाग के विषय मे कुछ नही पता। कथानक बताने के बाद लेखक ने यह दर्शाया है कि उस नाटक मे नायक अर्थात् राजा की भूमिका स्वय वाजिदअली शाह करते थे और गिजाला नायिका का चरित्र उनकी कोई एक बेगम अभिनीत करती थी।

इस लेख से जो बाते सामने आती है वह इस प्रकार है कि—

1 अमजद अली शाह की वसीयत थी कि वाजिदअली शाह को उनके बाद अवध का बादशाह न बनाया जाए।
2. इन्द्रसभा कैंसरबाग मे खेली जाती थी।
3 बादशाह कभी राजा इन्द्र और कभी नायक बनते थे।
4 सफेद बारादरी मे इन्द्रासन लगता था।
5 इन्द्रसभा का दिया गया कथानक—ग़िजाला की कहानी।

वाजिदअली शाह के फूफा इक्तिदारउद्दौला ने कैंसरबाग के सारे जलसे एव रहस देखे थे। वह अपनी पुस्तक 'तारीखे-इक्तिदारिया' मे दरया-ए-ताश्शुक के विषय मे लिखते है कि

1267 हि० (1850 ई०) मे पहली बार एक वर्ष की तैयारी के बाद खेला गया। कही किसी ने कहानी गिजाला महरूख की, हजरत की खिदमत मे अर्ज की। हजरत ने उसे नज्म करके एक मसनवी कही और कई लाख रुपये व्यय करके उसका एक रहस तैयार करवाया। उसके पहले दिन के जलसे का यह बयान है कि कैसरबाग मे जो फरहत मजिल थी उसमे उस जलसे की तैयारी हुई और वाजिदअली शाह ने सब शाहजादो को बुला भेजा। सब आकर फरहत मजिल मे कुर्सियो पर बैठे और बादशाह स्वय सबसे आगे एक ऊँची कुर्सी पर जब नाच समाप्त हुआ तो एक कारचोबी मसनद लाकर बिछाई गई और एक शख्स बादशाह बनकर उस पर आकर बैठा और सब औरते ये बोल गाने लगी "जाने आलम रहस मुबारक— जाने आलम रहस मुबारक" · · दूसरे दिन फिर इसी तरह वाजिदअली शाह आकर बैठे और सब शाहजादे अपनी-अपनी कुर्सियो पर बैठे उस रात सारी रात इसी जलसे मे कट गई और सबेरे यह रहस खत्म हो गया।[23]

वाजिदअली शाह स्वय लिखते है कि—"हकीकत मे ऐसा जलसा मैने कभी नही देखा, यह जलसा सुबह को नही होता, शाम के वक्त होता है।[24]"

अमजद अली शाह ने वाजिदअली शाह को अपना वलीअहद बनाया था और अपनी मोहर उनको दे दी थी। 'इन्द्रसभा' के लेखक अमानत लखनवी थे और 'इन्द्रसभा' न कभी कैसरबाग मे खेली गई और न वाजिदअली शाह से उसका कोई सम्बन्ध था।[25] जो कथानक सीतला सहाय ने 'इन्द्रसभा' के नाम से लेख मे दिया है, वह वास्तव मे 'इन्द्रसभा' का नही, वाजिदअली शाह द्वारा रचित 'दरया-ए-ताश्शुक का टूटा-फूटा रूप है।

सफेद बारादरी के विषय मे शरर लखनवी लिखते है कि कैसरबाग मे एक बहुत बडी शानदार बारादरी पत्थर की बनवाकर उसका नाम कसरूल-अजा रखा। ये बारादरी भी हकीकत मे इमामबाडा थी जिसको बादशाह की जिद्दत पसन्द तबियत ने अलग रूप दिया था[26]—

---

23 तारीखे इक्तिदारिया, पृ० 265-281

24 महलखाना शाही, पृ० 110

25 लखनऊ का अवामी स्टेज, प्रो० मसूद हसन

26 सुल्तानेआलम वाजिदअली शाह, मौलाना शरर लखनवी, पृष्ठ-70

जिसकी तारीख मकबूलउद्दौला मेहदी अली खा 'कुबूल' ने कही थी। अमीरउद्दौला लाइब्रेरी मे एक अग्रेजी की पुस्तक मे उसका एक चित्र भी दिया है जिसमे ताजिया रखा है और मजलिस हो रही है।

अत सीतला सहाय के लेख का कोई ऐतिहासिक महत्व नही रह जाता है।

कुछ महानुभावो के विचार

"मदानुल मौसीकी" के रचयिता हकीम करम इमाम लखनऊ के प्रख्यात सगीतज्ञ, सगीत-शास्त्री, चित्रकार तथा उस्ताद बादशाह के समकालीन रहे है। उन्होने उक्त पुस्तक मे बादशाह वाजिदअली शाह के सास्कृतिक योगदान की चर्चा करते हुए लिखा है—"नवाब वाजिदअली शाह इस युग के श्रेष्ठ सगीत प्रेमी, कलाकारो के आश्रयदाता है तथा वे सभी कलाओ के पूर्णत जानकार भी है आज कलकत्ता मे इस स्थिति मे पडे रहने पर भी उन्होने अपना शौक कम नही होने दिया है नादिर शाह ने दिल्ली की जितनी लूट की थी उससे अग्रेजो की लखनऊ की लूट अधिक वीभत्स रही है।"

जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के अध्यक्ष मोहम्मद हसन के अनुसार, 'वाजिदअली शाह का मुकद्दमा लन्दन मे मलका विक्टोरिया और ब्रिटिश साम्राज्य के सामने पेश करने के लिए अब्दुल हलीम शरर के नाना लन्दन गए थे। इससे अन्दाजा हो सकता है कि उनका खानदान अवध के नवाबो से कितना निकट था। अवध के अन्तिम दिनो की कहानी को जितने दर्दनाक और प्रभावशाली ढग से शरर ने बयान किया है वह खुद अपनी जगह एक क्लासिक है।'

यही शरर लिखते है—'वाजिदअली शाह कालीन लखनऊ के सगीत ने चाहे उच्चकोटि के सगीत को रिवाज न दिया हो मगर उसकी सुधा से उसे आमपसन्द या लोकप्रिय बनाने का यह शहर बडा जबरदस्त स्कूल बन गया था मटिया बुर्ज मे जो साजिन्दे और गवैये वाजिदअली शाह के दरबार मे नौकर थे उन सबको मैने खुद सुना था। अहमद खाँ, ताज खाँ, और गुलाम हुसैन खाँ उस समय के धुरन्धर सगीतकार माने जाते थे। दुल्ली खाँ, जिसने सारे कलकत्ते मे अपनी धूम मचा रखी थी और अपने जादू भरे कण्ठ से हर छोटे बडे को मोहित कर लिया था, लखनऊ का ही था।"

प्रोफेसर असद उल्ला खा 'कौकब' सगीत के धुरन्धर पडित थे और कलकत्ते मे भारतीय सगीत के प्रोफेसर के रूप मे प्रसिद्ध थे । वे लिखते है—'वाजिदअली शाह के शासनकाल मे लखनऊ मे सगीताचार्यो का एक बहुत बडा समुदाय जमा हो गया था सगीत के आचार थे—प्यारे खाँ, जाफर खाँ, हैदर खाँ, बासित खाँ । ये सब मिया तानसेन के खानदान की यादगार थे। ..मेरे वालिद नेयमत उल्ला खाँ ने बासित खाँ से ही सगीत की शिक्षा ली थी । वे लगभग ग्यारह वर्षो तक मटियाबुर्ज कलकत्ते मे वाजिद अली शाह के साथ रहे ।'

ब्रज सस्कृति के विद्वान् रामनारायण अग्रवाल अपने ग्रन्थ 'सागीत · एक लोकनाट्य परम्परा' मे लिखते है—"वाजिद अली शाह स्वय एक भावुक लेखक, सौन्दर्य के अनन्य उपासक, कला के क्षेत्र में मौलिक उद्भावनाओ के स्रष्टा तथा पूरी भारतीय नाट्य-परम्परा और लोक-धर्मी नाट्यविधा से भलीभाँति परिचित थे । इसीलिए उन्होने मुक्त-हस्त से धन लुटाया था ।"

राजा दुर्गाप्रसाद सन्देलवी 'बोस्ताने अवध' मे लिखते है—"उनका-सा कोई बादशाह कला के इस उच्च स्तर के साथ हिन्द की जमीन से नही उठा और इन विशेषताओ के किसी बाद-शाह ने हिन्दुस्तान के वातावरण मे बादशाही का झडा नही उठाया ।"

भाषा

पुस्तक छह अध्यायो मे विभाजित है—सुर, ताल, लय, रहस, नकल और नाम व खिताब। पुस्तक का आरम्भ पुरानी तर्ज की उर्दू से होता है। सुर अध्याय मे सुरो का बखान आम बोलचाल की भाषा मे है । ध्रुवपद, ख्याल, सावन, ठुमरी, होली, दादरा की भाषा ब्रज और अवधी है । अनेक दादरे और ठुमरियो की भाषा बगाली भी है । कुछ मुखडे ऐसे भी है जिनका आस्ताई हिन्दी मे है और अन्तरा किसी और भाषा मे—

आस्ताई : दे दे बनी को दूध पूत नारी को
अन्तरा . भालो चौपराल तुम्हार भालो
नजरिया अख्तर असमाई को ।

इसमे अन्तरा की भाषा बगाली है । ताल और लय अध्यायो की भाषा उर्दू है। रहस अध्याय मे नृत्य की मुद्राओ को समझाने के लिये रचयिता ने शुद्ध लखनवी भाषा का प्रयोग किया है पर रहस ब्रज भाषा मे है ।

नकल और भडैती के अध्याय मे फारसी के भी कुछ शेर है पर सामान्यत भाषा उर्दू ही है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि विभिन्न अध्यायो मे हिन्दी, ब्रजभाषा, अवधी, बगाली, फारसी आदि भाषाओ का रचयिता ने खुलकर प्रयोग किया है और उन सारी भाषाओ के मोतियो को उर्दू के धागे मे बाध दिया है जो पूरी पुस्तक मे आरम्भ से अन्त तक दिखाई देती है। प्रस्तुत बन्दिशे पढने के बाद लेखक का सगीत और विभिन्न भाषाओ के गहन अध्ययन की पुष्टि होती है। जिस प्रकार उन्होने हिन्दुस्तान की अनेक भाषाओ को मिलाकर सगीत की एक डोर के द्वारा हर सगीत प्रेमी ही नही वरन् हर हिन्दुस्तानी के मन मे जो भावना उत्पन्न करने की कोशिश की है उसका प्रत्यक्ष स्वरूप दीखने लगता है।

–रौशन तकी

बऔने खानकाह् कौनो मकाँ वा यमने सानी जमीनो जमा नुस्खा-ए-हाजा तस्नीफ बन्द-गान सिकन्दरशान ।[1]
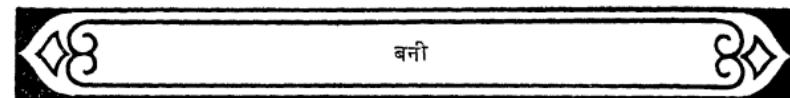
मुसम्मा-बा बनी[2]

दर दारूल अमान कलकत्ता
मोहल्ला मटिया बुर्ज
बमुतबे सुल्तानी बा एहतिमाम
रईसुद्दौला जेवरतबा पोशीद[3]

1—यह् पुस्तक आलीशान उसके नाम जो जमीन और आसमान और सारे जहान का मालिक है ।

2—बनी नाम दिया इसका ।
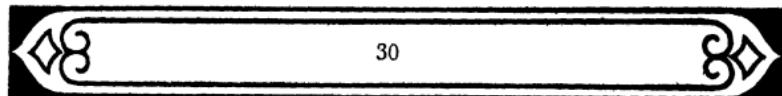
3—मोहल्ला मटिया बुर्ज कलकत्ता मे रईसुद्दौला ने शाही प्रेस से प्रकाशित कराया ।

बिस्मिल्लाह्-इर-रह्मान-इर-रहीम।[1] बाद हम्द[2] खानकाह्-हफ्त-पैकर[3] और नात[4] सय्यद-खैरुल-बशर[5] और मनकबत-शेरे दावर[6] वाजिद अली शाह "अख्तर" खिदमते तालेबीन[7] और शायकीन[8] मे अर्ज करता है, वादीए-इत्तलादेही[9] मे पाव धरता है। कब्ल[10] इसके दो किताबे "नाजो" और "दुल्हन" तकसीम हो चुकी है। हत्तुलवसा[11] सबको दी मगर उनमे फकत आस्ताई-अन्तरे है। याददाश्त की कुम्बी गडी है, अलबत्ता सैरबाग[12] नही है। इश्क और आशिकी का दाग नही है। अक्सर नाजरीन[13] उसे तआम[14] बे-नमक जानते है, निरी राकिम[15] की बकबक जानते है अलबत्ता उसके मुतालेए[16] से लुत्फ उठेगा। जो पढेगा आपे मे न रहेगा। हरचन्द वो दोनो जिल्दे भी मेरी सरकार मे रायगा[17] नही गई। सब ध्रुवपद और ठुमरिया वगैरा बाकायदा जोहरा-जमाल ने याद की। मगर इसका रग नया है। जो नक्ल और किस्सा है, एक ताजा गुल खिला है, बाल की खाल खीची है, हिन्दी की चिन्दी की है। इन्साफ तब्बाओ[18] के हाथ है। मेरा तो बगालियो का साथ है। मुकफ्फा-मुसज्जा[19] इबारत[20] का ख्याल नही किया। मगर किसी मतलब को हाथ से जाने नही दिया। बल्कि इसी लिहाज से तर्क[21] मजूर हुआ कि मतलब न जाए इबारत आराई[22] से किसी को सरे मोशुबह[23] न आए।

इसका नाम बनी है, हकीकत मे बनी ठनी है और इसमे छ बाब[24] है।

1—शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बहुत दयावान और दयालु है। 2—प्रार्थना 3—अल्लाह 4—आरती 5—मोहम्मद-ए-मुस्तफा 6—हजरत अली की प्रशसा 7—पाठको की सेवा मे 8—शौकीनो 9—सूचनाओ की घाटी 10—पूर्व 11—जितना हो सकता था 12—बाग की सैर 13—पाठक 14—खाना 15—बस लेखक 16—पढने से 17—व्यर्थ 18—पाठको 19—पद्यमयी 20—बयान 21—छोडना 22—जबरदस्ती के बयान 23—बढने मे बनावटी सजावट का सन्देह 24—अध्याय

पहला अध्याय

सुर

वाजिद अली शाह ने सगीत की विधिवत् शिक्षा उस्ताद बासित खाँ से प्राप्त की थी। प्यारे खाँ, हैदर खाँ और बासित खाँ—इस युग मे तानसेन के खानदान की यादगार थे। इनमे उस्ताद बासित खाँ की शिष्य-परम्परा का विशेष महत्व है। माने जाने सगीतज्ञ तथा सगीत-शास्त्री प्रोफेसर असद उल्ला खाँ "कौकब" के वालिद नेमत उल्ला खाँ ने भी उस्ताद बासित खाँ से सगीत शिक्षा प्राप्त की थी। असद साहब लगभग ग्यारह वर्ष तक वाजिद अली शाह के साथ मटिया बुर्ज (कलकत्ता) मे रहे। वाजिद अली शाह के मुसाहिब गवैयो मे से अनीसउद्दौला और मुसाहिबउद्दौला ने उस्ताद प्यारे खाँ से शिक्षा प्राप्त की थी।

वाजिद अली शाह के सम्यक् संगीत ज्ञान के कारण ही उनके युग से सगीत को पर्याप्त प्रश्रय मिला। पुस्तक मे प्रस्तुत सुर-अध्याय से स्पष्ट होता है कि ध्रुवपद धमार, ख्याल, ठुमरी-

टप्पा सभी शैलियो का उन्हे ज्ञान था । उन्होने 'अख्तर' उपनाम से पूर्वोक्त शैलियो मे काव्य रचना की जिसे उनके युगीन गवैयो ने प्रस्तुत किया । किन्तु इस सामग्री का इस समय मात्र ऐतिहासिक महत्व ही रह गया है क्योकि उन्होने स्वरलिपि प्रस्तुत नही की । ललनपिया ने हजार से अधिक ठुमरियॉ रची, जो कि ललन सागर मे प्रस्तुत है । सगीतज्ञ भारतेन्दु बाजपेयी ललनपिया की परम्परा से जुडे, अत उन्होने ललनपिया की 150 ठुमरियॉ स्वरलिपि सहित प्रस्तुत कर दी, जिससे ललनपिया की गायन शैली की आज हमे जानकारी उपलब्ध हो जाती है । वाजिद अली शाह की शिष्य-परम्परा मे ऐसा न होने से आज ऐसा कोई साधन नही है, जिससे गायकी की जानकारी सुलभ हो सके । उन दिनो रिकार्डिग पद्धति नही थी और एक अनुमान के अनुसार वाजिद अली शाह के युग मे स्वरलिपि की प्राचीन भारतीय पद्धति लुप्त हो गयी थी, इसे स्वय वाजिद अली शाह ने नया रूप दिया था जिसका पुनरुद्धार कालान्तर मे सगीत के चतुर पडित भातखण्डे ने किया था ।

प्रस्तुत अध्याय मे जानेआलम ने भारतीय सगीत परम्परा के तत्वो को एक आयाम प्रदान किया है । उर्दू लिपि मे यह हिन्दी की रचनाये उन्हे लोकजीवन का एक सजग चितेरा सिद्ध करती है ।

गायन मे सर्वाधिक महत्व आलाप का होता है । सगीतज्ञ ध्रुवपद गायन मे लयबद्धता के लिए 'ओम नारायण अनन्त हरी' का प्रयोग करते रहे है, जो कि आज भी प्रचलित है । इन शब्दो के प्रवाह को 'आलाप' मे 'अख्तर' ने कायम रखा और एक प्रकार से 'आलापचारी' को धार्मिक भावना से मुक्त कर दिया । उनके आलापचारी मे वस्तुत अधिक सरसता विद्यमान है । ध्रुवपद के चार अग रहे है—स्थायी, अन्तरा, सचारी और आभोग । वाजिद अली शाह ने दो अग स्थाई तथा अन्तरा मे ही ध्रुवपद गायन प्रस्तुत किया । उन्होने पूर्व प्रचलित रागो मे अपने पदो को बाधा । वे राग आज भी प्रचलित है ।

ख्याल की परम्परा मे जानेआलम ने छोटा ख्याल प्रस्तुत किया जिसे बदिश की ठुमरी भी कहा जाता है। सदारग तथा अनेक सगीतज्ञो की परम्परा का सुल्ताने आलम ने निर्वाह किया है ।

ठुमरी के क्षेत्र मे सुल्तानेआलम 'अख्तर' के योगदान की पर्याप्त चर्चा की गई है किन्तु अब इस अनुवाद कार्य के साथ ही यह प्रमाणित हो जाएगा कि सगीत की अन्य शैलियो के क्षेत्र मे भी उनका विशिष्ट योगदान रहा है ।

उन्होंने स्वनिर्मित नयी रागनियों का नामकरण अपनी अभिरुचि के अनुरूप किया है। यथा कन्नड (श्याम), जूही, शाहपसद हुजूरी आदि।
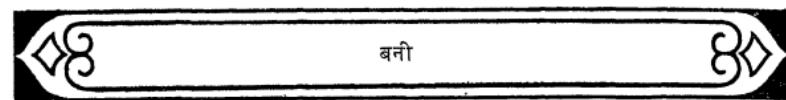
प्रोफेसर कौकब के अनुसार, "उनकी 'आम-पसद' रुचि ने लखनऊ मे सगीत को अपने अत्यधिक उच्च स्तर से खीचकर जनसाधारण के स्तर पर ला दिया। समय की यह रीति देख कर सुरुचि रखने वाले गवय्यो ने भी राग-रागनियो की क्लिष्टता को त्याग कर छोटे-छोटे, सादे, दिलकश और आम लोगो के लिए सुगम विषयो पर सगीत रचना आरम्भ की। जनता मे गजल और ठुमरी का प्रचलन हो गया। किन्तु वास्तविकता यह है कि वाजिद अली शाह की इन कृतियो के माध्यम से उस युग का सास्कृतिक एव सागीतिक माहौल जीवन्त रूप मे आज भी उपस्थित हो जाता है और यह प्रमाणित होता है कि लोक अभिरुचि से उन्होने सीधा साक्षात्कार किया था। लखनऊ की मैखी की सम्पूर्ण भारत मे अपनी एक पहचान इसी युग मे बनी थी। मुहर्रम मे "सोज" पढने वाले गायक-गायिकाओ ने शाही युग मे प्रचलित आमफहम रागनियो का ही अवलम्बन ग्रहण किया, जो कि धर्म के माध्यम से महिलाओ के गले मे प्रवह-मान हो गई। इन मर्मियो को सुनकर सुविज्ञ गायक भी आश्चर्यचकित हो जाते थे। "सोज-ख्वानी" की परम्परा ने दीर्घकाल तक लखनवी सगीत धारा को प्रभावित किया है और यह गायकी विशिष्ट शैली के रूप मे सम्मानित हुई। यहाँ की गायकी का तेवर और अन्दाज ही बदल गया। यह परम्परा आज भी किसी न किसी रूप मे जीवित है।" प्रोफेसर कौकब ने जो लिखा है उससे यह स्पष्ट होता है कि वाजिद अली शाह शुद्धतावादी थे और सगीत के शास्त्रीय रूप को अधिक मान्यता देते थे। अत तद्युगीन सगीत की उस समय आलोचना की गई किंतु कालान्तर मे उनके योगदान को सभी ने स्वीकार किया।

वाजिद अली शाह ने अपने सुर-ज्ञान का कथक नृत्य तथा रहसलीला मे सार्थक उपयोग किया है। 'रहस' मे प्रयुक्त विभिन्न राग-रागनिया इसका प्रमाण है।

इस अध्याय के विषय मे

लेखक ने पूरी पुस्तक को पाच बाब अर्थात् अध्याय मे विभाजित कर दिया है। और बाब एक—पहला अध्याय (सुर-अध्याय), बाब दो—दूसरा अध्याय (ताल अध्याय) आदि नाम दिए है। प्रत्येक बाब को फसल अर्थात् वर्ग मे विभाजित किया है तथा प्रत्येक वर्ग मे उस वर्ग से सम्बन्धित द्रव्य दिया है।

जैसे इस अध्याय की पहली फसल मे आलापचारी के सम्बन्ध मे, दूसरी फसल मे ध्रुवपद, तीसरी मे होरी, चौथी मे ख्याल आदि के विषय मे बताया है। पुस्तक के ऐतिहासिक और सागीतिक रूप को बरकरार रखने के लिए इसमे प्रयुक्त तकनीकी शब्दो जैसे आलापचारी, आस्ताई, आदि शब्दो को ज्यो का त्यो रखा गया है।

बाब पहला यानी सुर अध्याय

इस अध्याय मे दस फसले है।

फ़सल पहली : अलफाज आलापचारी मे–सुरी[1] राग।

आस्ताई–अरी नता तदा तदाना आ आ नोम
पहली उपज रिखब से–री न ना ता तना तोम
दूसरी उपज गधार से–री नना ता तना तोम
भाग के आस्ताई—री ई नना ना नान्न नाना
ता तना नान्न ना तना तोम
अन्तरा—रो रो नना नना नाना
नना आ आ नो तना तोम
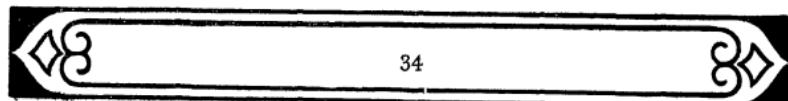
फ़सल दूसरी ध्रुवपद मे ध्रुवपद, राग तिलक कामोद।
यह शबाना [2]रोज[3] बरती जाती है।

ताल सूलफाख्ता

आस्ताई—मृगनयनो की कटारी लगी अब हमका रिझना
अन्तरा—नोक चुभन लागे मोहे बाढा काटन लागे
फिर अग से उतारो "अख्तर" अबही ये कछना ॥

ध्रुवपद, राग तिलक कामोद, ताल सूलफाख्ता

आस्ताई—चाल चलत अपनी कोऊ जोबन,
मधमा तिसल दिखाए दे

1 आलापचारी के सुरो को लेखक ने सुरी राग का नाम दिया था। 2 रात 3 दिन

अन्तरा—अब रसमा मा सखियन के रग को
अख्तर पिये दिखाए दे ।

राग ऐजन,[1] ताल तीवरा

आस्ताई—नाम बताऊँ तोहे तालो का
पटताल, तीवरा, झूमरा, सूलफाख्ता,
रूपक, ब्रम, लछमी, तिताला ।

अन्तरा—रच पच की माता सकून की रूध
नारि मे अब मन की दीजै
लीजै रूप दरूस कन्दकलास रितु पर
सीधे परवन मनत खटाल ।

राग ऐजन, ताल चौताला

आस्ताई—प्यारे सुल्ताने आलम मेरी बात को मान लो तुम ।

अन्तरा—विनती करत तुमसे व्याकुल, लखनऊ चलियो जरूर ।

ध्रुवपद, पिन्हाडी झझवटी, ताल चौताला
यह शबाना रोज बरती जाती है ।

आस्ताई—इतना जाई कहियो हमरी ओर से
हरिसूँ कर जोर-जोर के

अन्तरा—दरस दीजै बिरहन ब्याकुल तरपत
सहो न जात बिछुरन को दु ख भारी ।

सचारी—जब धरी गोपाल अख्तर को ई बिनत
बन अनूप ससा की मल दुखियारी ।

ध्रुवपद, राग ललित, ताल चौताला
इसका वक्त सुबह से दिन चढे तक है ।

आस्ताई—भोर भई आए मेरे द्वारे
जोगिया अलख जागे कहि जागे ।

---

1 पूर्वोक्तानुसार

अन्तरा—चैन सखी कहत राधा जी
अख्तर पत राम किसन मे मन लागे

ध्रुवपद, रागिनी कौकब, ताल चौताला
पहर दिन से दोपहर दिन तक इसका वक्त है ।

आस्ताई—भरन जो गई जल जमुना ठाढो पनघट नागर परगास दरस गयो ।
अन्तरा—कर मुरली-सीस मुकुट 'अख्तर' मन हर लीनो ।

ध्रुवपद, दरबारी कान्हडा, ताल चौताला
दोपहर दिन से तीन पहर दिन तक इसका वक्त है ।

आस्ताई—औ हैदर ए-कर्रार दुलदुल सवार मीर कौसर के वचन तिहारी ।
अन्तरा—खैबर कुसाए मार मरहब को 'अख्तर' जुल्फिकार कर निकारी ।

ध्रुवपद, रागिनी मुजीर, ताल चौताला
पहर दिन रहे से चार घडी दिन रहे तक इसका वक्त है ।

आस्ताई—मुजीर रागिनी नेक तान उपज स्वर मोरे मन मे आई ।
अन्तरा—'अख्तर' दोऊ कोमल धैवत की मिलन बात है ज्ञान की ।

ध्रुवपद, श्रीराग, ताल चौताला
इसका वक्त दो घडी दिन रहे से चिराग जले तक है ।

आस्ताई—वशीधर नटनागर गिरिधर गोपाल स्वरूप को
ई विनत बन अनुप ससा के मलमार पिछाडी ।

अन्तरा—बाम बावनी मन खपचे दात लहर फूके
फूक देवन के दो दाता 'अख्तर' डड मार लताडे ।

ध्रुवपद, श्रीराग, ताल चौताला

आस्ताई—तरनी तेरो मन मे आयो स्याम ग्यान
जोबन बजत मन मे रग बिहार प्यादे ।

अन्तरा—बाजी लगे चौसर की प्यारे 'अख्तर',
मोहे चाल याद दिला दे ।

ध्रुवपद, रागिनी खमाज, ताल सूलफाख्ता
यह तमाम शब बरती जाती है ।

आस्ताई—माता ममता मधुवारी दवाई दीजै दवाली ।

अन्तरा—मृगनैन लमछुई तीखी नजर 'अख्तर' मतवाली ।

रागिनी खमाच, ताल लक्षमी

आस्ताई—करना नाथ गजपत हरी हरपत गजपत पद्पाल गोपाल ।

अन्तरा—"अख्तर" जान दिल के चैन तुमसे सच मान लगा है हरि लाल ।

ध्रुवपद, राग मालकोस, ताल चौताला
इसका वक्त आधी रात से पहर रात रहे तक है ।

आस्ताई—पीत पछोरा और कटसीर्ली ई काधी कामरी धरे
बिरह रूप आ आ रागे ।

अन्तरा—मोहिनी मूरत देखी जो स्याम की
'अख्तर' दुख दर्द सब भागे ।

ध्रुवपद, रागिनी सोरठ, सिदूरा, ताल सूलफाख्ता
यह फसल बरसात की ताबे है ।

आस्ताई—तेन रे माथे तिलकम् अतबोला पूरी पूरी आही आही आही ।

अन्तरा—जब कानन कुन्दल त्रिसूल भक्तरानी तेरे
नयनन विधिया 'अख्तर' नायक कहात आही आही आही ।

फसल तीसरी होरी में होरी धमार, रागिनी पीलू

इसका वक्त दोपहर ढले दिन से चार घडी दिन रहे तक है ।

आस्ताई—मेरी मुरली अधर बिराजे मै तुम्हे प्यार करती हू ।

अन्तरा—कान्हा मोरी लाज गयी 'अख्तर' अपनी विपत मन पे धरती हू ।

दूसरी होरी धमार, राग परज
इसका पिछली पहर रात का वक्त है ।

आस्ताई—अलसाने को आई तेरी माँ रे वजन तिहारी पहचाने

अन्तरा—सप्त सुरन को गाओ बजाओ 'अख्तर' तान की लय जाने ।

फसल चौथी ख्याल में ख्याल, रागिनी लोम ताल, जल्द तिताला

यह रात-दिन गायी जाती है ।

आस्ताई—सावरा मोरे मन भावा देखो

सइया ने चेरे वाला यार आख लगावा जावा ।

अन्तरा—दाग जिगर के भमरे रूप के 'अख्तर' नजरिया लावा ।

ख्याल, रागिनी रामकली, ताल धीमा तिताला

इसका वक्त सुबह से पहर दिन चढे तक है ।

आस्ताई—हाजिरी दीजिए जनाबे हजरते अब्बास

अलेहिस सलाम की हुस्न जवानी ठानी ।

अन्तरा—शेर-ए-खुदा के पुत्र बीर हुसैन के

"अख्तर" नज्र उन्ही की मानी ।

ख्याल, तोडी, ताल धीमा तिताला

इसका भी वक्त सुबह से पहर दिन चढे तक है ।

आस्ताई—माई रे यह जोबन मदमातियाँ ।

अन्तरा—'अख्तर' के सग पीत करूँगी

धकधक होत मोरी छतिया ।

ख्याल, रागिनी गौड सारग, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त बाद भैरवी के दोपहर दिन तक है ।

आस्ताई—बाबू का छोरा बीन बजावे गावे नीकी तानन सुर से ।

अन्तरा—बाजत मन्दल लुभावत मन को 'अख्तर' हमरे द्वारे आवे ।

ख्याल, रागिनी पीलू, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त दोपहर ढले दिन से चार घडी दिन रहे तक है ।

आस्ताई—लडीला हमार खम्भड लाडला यार ।

अन्तरा—भवे कमान सी आखे नशीली "अख्तर" रसीला हमार ।

ख्याल, दरबारी कान्हणा, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त बाद दोपहर दिन के पहर दिन रहे तक है ।

आस्ताई—आप ही करीम रहीम पाक परवरदिगार
धरती को कर वजूद अपनी दुनिया को निरकार।

अन्तरा–जो तेरा रूप उन दाता "अख्तर" नारायन करतारा।

ख्याल, राग मुलतानी, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त पहर दिन रहे से चार घडी दिन रहे तक है।

आस्ताई—उई घुडदे रे अरी प्यारे बैर
सुन रे मदरियाँ मोरी रे

अन्तरा—पायल पग की झनन झनन बाजे
हट न सहूगी "अख्तर" तोरी रे।

ख्याल, पहाडी झिझौटी, ताल जल्द तिताला

इसको हर वक्त बरता जाता है।

आस्ताई—ऐ सजन उन बिन कोई नही अपना।

अन्तरा—रामानुद्धी मुख्डा "अख्तर" सा।

ख्याल, रागिनी भटियार, ताल जल्द तिताला

इसको भी हर वक्त बरता जाता है।

आस्ताई—आज मोरे घर काज, मदीला बाजे माई रे।

अन्तरा—गलियो-गलियो हुस्न बरसत है धलकत है नग्गारा
'अख्तर' प्यारा मुल्क अवध पर राजे माई रे।

ख्याल, रागिनी भटियार की माझ, ताल जल्द तिताला

यह तमाम रात बरता जाता है।

आस्ताई—बगला खूब छवायो जामे नारायन बोले।

अन्तरा—कोठो ऊपर दरजवा "अख्तर" बद खोले।

ख्याल, खमाच, ताल धीमा तिताला

इसका वक्त तमाम रात है ।

आस्ताई—कही होवत बिजली चमक-चमक ।

अन्तरा—"अख्तर" धक-धक छातिया बाजत
चौध-चौध मन लपक-लपक ।

ख्याल, खमाच, ताल सवारी

आस्ताई—अब मै कैसे आऊँ रे ए री तिहारे पास ।

अन्तरा—"अख्तर' क्योकर पाऊँ रे मै तुम्हारी लाज,
नाचत प्यारी जाऊँ रे एहि तिहारे पास ।

ख्याल खमाच, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—सूर बजरिया रोहू महासेर,
मिया मछली पाली हमने ।

अन्तरा—पडआ नैन भगती सुनारन "अख्तर"
देखो कटिया निकाली हमने ।

रागिनी व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—कल कुछ जो हो गया कहू क्या
दस्ते शफकत फेर फेर कर यो ही रखा दिल थाम थाम कर ।

अन्तरा—भिचक रहा मन मे "अख्तर"
उस पिया के मुख का नाम नाम कर ।

ख्याल, राग भोपाली, ताल धीमा तिताला

इसका वक्त चार घडी रात गये से आधी रात तक है ।

आस्ताई—जानी प्यारी आओ कलेजा
आशिक तुझको प्यार करेगा ।

---

1. ऐजन—पूर्वोक्तानुसार

अन्तरा—"अख्तर" लाओ हाथो को अपने
दोनो उगली मे हार करेगा ।

ख्याल, जुबान टोन अंग्रेजी मार्च, रागिनी व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—मजे तुजम सिजे किजा कजहजा हजै (मैने तुमसे क्या कहा है ?)

अन्तरा—तुजुम नजे मुझुज सेजे कुछुज सुज नजा हजै
(तुमने मुझसे कुछ सुना है ?)

ख्याल, रागिनी शहाना, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त भी चार घडी रात गये से आधी रात तक है ।

आस्ताई—सागर मोरा खटोलना अरे सैयाँ बोलो क्यूँ न रे ।

अन्तरा—जिया मस्कत मोरा बार-बार "अख्तर"
बद अगिया के खोलो क्यो न रे ।

रागिनी व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—अलबेली जच्चा तारे देखन चली ।

अन्तरा— ए री जच्चा तेरा बच्चा सलामत
"अख्तर" नाजो पले ।

ख्याल, रागिनी सोरठ लम्बी ताल ईजादी

यह फसल बरसात और ताबे[3] अब्र[4] की है ।

आस्ताई—मोरा मन धरम अँखियाँ सुख धन लगन बतियाँ ।

अन्तरा—बदन तन चमन हस्तियाँ तुम "अख्तर" लिखो खतिया ।

रागिनी ऐजन, ताल धीमा तिताला

1-2 पूर्वोक्तानुसार, 3 पाबन्द, 4 बादल

आस्ताई—मेल पे धारो मारो राज महारी सुख मानडी राजा हो ।

अन्तरा—भूली अकासमुखी देखत जौवन "अख्तर" हुडी तिहारी राजा हो ।

ख्याल, रागिनी नट मल्हारी, ताल जल्द तिताला
यह भी फसल बरसात की ताबे अब्र की है।

आस्ताई—लागी लागी "अख्तर" प्यारे से नजरिया माँ ।

अन्तरा—करक-करक बिजली चौध-चौध गई
भीज गई अगना मे लहरिया माँ ।

रागिनी व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—मध घटोर कमचा बिहारी मध कर गई पायनात
पर सुधनी ताको अजात सैया दु ख मदारा सायनात ।

अन्तरा—लाख जतन किये दिल ने बहुतेरे
"अख्तर" न पूँछे मेरी बात ।

राग, ताल ऐजन[2]

आस्ताई—इन सावरिया की लटक चाल आज
मोरे जिया मे बस गई रे ।

अन्तरा—रोवत-रोवत जी निकस गयो
"अख्तर" बैरनियाँ हस गई रे ।

राग, ताल ऐजन[3]

आस्ताई—इस धुलबुलिया की बाकी नोख
आज मोरे मन मे चुभ गई रे ।

अन्तरा—"अख्तर" पायल बाजत मोरी
हाथड डोख मे खप गई रे।

रागिनी ऐजन[4], ताल धीमा तिताला

1-4 पूर्वोक्तानुसार

आस्ताई—कुछ कह बैठूगी प्यारे
फिर अपना सा मुह ले रह जाओगे हा ।

अन्तरा - खट्टी-मीठी बतिया जो कुछ मन की होगी "अख्तर"
प्यारे सच-सच बोलो दिल से तुम सब सह जाओगे हा ।

फसल पॉचवी सावन मे : सावन, तिलक कामोद, ताल रूपक
यह शबाना रोज बरता जाता है ।

आस्ताई—सैया बिन लागत बूद कटारी ।

अन्तरा—सपने मे आयो मेरा मन लगियो
"अख्तर" बिन जिया भारी ।

सावन, राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—पदमनियाँ बूदन बरसे रे
लखमनियाँ बूदन बरसे ।

अन्तरा—ताल तलैया सागर नदिया है भरे
कैसे निकसूँ "अख्तर" मै घर से ।

सावन, राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—अरी घटा ओ बैरी घुँघरू
मेरा रे सिपाही राकिब आवे ।

अन्तरा—गरजत बादर "अख्तर" बरसत मेघा
चुनरी रगीली कैसे लावे ।

सावन, राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—सैया मोरी बहियाँ पकर लीनी हो
येह दुख सहो न जाए ।

अन्तरा—चुडियाँ मोरी करकी बाजू लाल भये
"अख्तर" मोहे हाथ न लगाए ।

1-3 पूर्वोक्तानुसार

सावन, राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—सैया मोहका चुनरी रगा दे हो
मन मोरा होवत है उदास।

अन्तरा—ऐसा रग रगियो कबहुँ न छूटे
धोबिया धोवे रे पचास।

सावन, राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—कही कूकत बैरी मुरली री

अन्तरा—कोयल कूके बोले पपीहरा
'अख्तर' प्यारे चिढाकर सुर गारी।

सावन, राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—ऐ मधुवर वा रात बुरी।

अन्तरा—भीजूंगा क्योकर "अख्तर" प्यारे
बूद कटारी धार छुरी

फ़सल छठी ठुमरी में · ठुमरी, झझौटी, ताल जल्द तिताला।
यह हर वक्त गाई जाती है।

आस्ताई—मुखडा दिखा जा मेरी सीमतन प्यारी।

अन्तरा—"अख्तर" तुम घूँघट तो खोलो
पायल बजा जा मेरी दुल्हन प्यारी।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—सीली मेर व रात चूडा बल खा गयो।

अन्तरा—करवट लेते-लेते भोर भयी सजनी,
"अख्तर" पर मन आ गयो।

1-4. पूर्वोक्तानुसार

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—गोरी लट खोल दे लट मे काला नाग ।

अन्तरा—छती की तू बनी बज्झी "अख्तर" सुनाओ राग ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—तोहे तडपहियो सारी रात ।

अन्तरा—सगरी रैन मोहे तरपत बीती ब्याकुल भई
मै तुम बिन "अख्तर" सुख क्यूँ सारी रात ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—कलकती वाकी चूडिया सैया लै दे पिया रे ।

अन्तरा—लाही की अगिया बनारस की साडी,
"अख्तर" प्यारे मोरा चाहे जिया रे ।

तिलक कामोद की माझ, ताल जल्द तिताला
इसको भी हर वक्त गाते है ।

आस्ताई—सग अजब बनी रे बनी की बनी ।

अन्तरा—तुम हो छत्रपति राजा "अख्तर" मै हूँ राजमनी ।

रागिनी भैरवी, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त सुबह से पहर दिन चढे तक है ।

आस्ताई—मन मोरा तूने लगाया प्यारे ।

अन्तरा—रैन दिनन मोहे कल न परत है
"अख्तर" जप गिरधारी ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—मोहका बार-बार भर दे अरी ओ मधुवरवा ।

अन्तरा—आप छकी वारे मोहका छका दे भर-भर मधवा

1-4 पूर्वोक्तानुसार

मोहका पिला दे "अख्तर" कुलखा ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—राजा मेडे राझडिया दे राजा जी
मै वा मड चलिया ।

अन्तरा—मूक लगा है दरसन करन को
"अख्तर" प्यारे गिर पड चलिया ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—ए मन लाडली बनी का बना ब्याहन आया ।

अन्तरा—हीरा मोती दास हर अब राजी लपपट झूमर लाया ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—मै बारी लोगो साँवर मे नही जा दियाँ ।

अन्तरा—राह तकत हूँ प्यारे के मिलन की
'अख्तर' जानी आज आदियाँ ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—बन सारी की निंदिया खोई रे ।

अन्तरा—ना मै बोली "अख्तर" ना मै चाली
ठडी नीद ना सोई रे ।

ठुमरी, राग व ताल ऐजन[5] ताल अद्धा

आस्ताई—राजा की गलियाँ मे ना जाऊँगी
मोरी सारी मछलिया लुटा देना रे ।

अन्तरा—गिरती पडती आई हूँ "अख्तर"
मधु मे छका देना रे ।

ठुमरी, राग पीलू, ताल जल्द तिताला

यह दोपहर ढले दिन से चार घडी दिन रहे तक बरती जाती है ।

आस्ताई—बलम सगरी रैन मोहे तरपत बीती करवटिया लेने दे ।

1-5. पूर्वोक्तानुसार

अन्तरा—बिनती करत "अख्तर" कर जोरत मुख चूम लेने दे।

ठुमरी, पीलू, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—विरह का दाग सहो नाहि जाए हो।

अन्तरा—लाम्बा खटोलना दोऊ जने

"अख्तर" बिन देखे यह रहो नहि जाए हो।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—तोरा रे बैरन महका भारे ननदिया हो।

अन्तरा—रास न आए साझ बहाने "अख्तर" बहनिया हो।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—क्या समझते थे नैना लग जाएँगे।

अन्तरा—पहले तो सुख देखेंगे अख्तर फिर पाछे पछिताएँगे।

राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—अरी आली लाद चला बनजारा।

अन्तरा—खेप उतारे आज पुखा मे

लाडला मोरा अख्तर प्यारा।

राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—पाने कैसे जाऊँ अब रे कीच।

अन्तरा—चूनर मोरी भीज गई "अख्तर" जमुना बीच।

ठुमरी, राग पीलू जगला ठेका सितारखानी

आस्ताई—ऐ साजन उन बिन नाही परत मोहे चैन।

अन्तरा—"अख्तर" नगर अख्तर का है रे

गवायो कैसे कटे दिन रैन।

राग व ताल ऐजन[5]

आस्ताई—तू कैसे चली धोबनिया धोबिया बारह बारह बाट।

1-5 पूर्वोक्तानुसार

अन्तरा—"अख्तर" चोली मैली मोरी क्योकर उतरूँ घाट ।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—रात महका निदणिया जगाए रे ।
अन्तरा—तन मन धन सब प्रेम पिया को
अच्छे रग नीकी एक बतिया सुनाए रे ।

रागिनी जगला, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—सवलिया तोरे कारन जिया जाए रे ।
अन्तरा—कल न परत मोहे पल भर "अख्तर"
कैसे मन सुख पाए रे ।

ठुमरी, रागिनी गौरी, ताल जल्द तिताला
इसको दो घडी दिन रहे से चिराग जले तक गाते है ।

आस्ताई—सुधि आई प्यारी आज रे,
गोरी चली कदम की बाडी ।
अन्तरा—सुनो साझने मै आज करूँगी,
"अख्तर" के सग यारी ।

ठुमरी, गौरी की माझ, ताल जल्द तिताला
यह तमाम रात बरती जाती है ।

आस्ताई—रे सावरिया हम पर गौना, अरे ले है आयो ।
अन्तरा—सुकन के "अख्तर" पायल बाजत, दाग दिए है आयो ।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—मजानन रे रात क्यो नहि आए ।
अन्तरा—साझ न आए अकेले जनिया "अख्तर" को सग लाए ।

राग व ताल ऐजन[2]

1-2 पूर्वोक्तानुसार

आस्ताई—तेरे गुर ये रे चद्रबदन दे जोत ।

अन्तरा—ना लगे है मधु की माती, "अख्तर" सग क्या होत ।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—छैल मोरे नाजुक मइया रे

अन्तरा—"अख्तर मोरा प्यारा कलेजा, क्योकर छोडूँ सइयाँ रे ।

ठुमरी, रागिनी खमाच, ताल जल्द तिताला

इसका वक्त तमाम रात है ।

आस्ताई—मोहन स्याम हमारा रे कुबडी ने जादू डाला ।

अन्तरा—घूँघट खोलो मुख से बोलो "अख्तर" नजरौदा गुजारा रे ।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—ननदिया को मै पररासन पन्हइयाँ जाऊँ ।

अन्तरा—जोगी नही यह तो कामनहारा
'अख्तर' कर ये बैरन करवाऊँ ।

राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—जान चली जाए बहियाँ मरोरी से ।

अन्तरा—छाँड न महका 'अख्तर' प्यारे
छतियाँ लगा के जोगी से ।

राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—चलो सखी मिल कैखड चलिए
झमकता आया रे बनरा ।

अन्तरा—"अख्तर" बाजू झम-झम होवत,
मोतियन कगन लाया रे बनरा ।

राग व ताल ऐजन[5]

आस्ताई—शिवशकर बम-बल बोला रे, सगरी रैन मोहे
तरपत बीती, तन भयो जलकर होला रे ।

1-5 पूर्वोक्तानुसार

अन्तरा—"अख्तर" बतिया दुख की कब तक
मन तोरा कम-कम बोला रे।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—तेरी चाल ऐ दुपट्टे वाली लटपट भाई।
अन्तरा— पिस-पिस गयो पिया जियरा हमरा "अख्तर" लाई।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—जाके कारन मै वारी जइया,
वारूंगी तन मन धन सभी।
अन्तरा—आह से मोरी सुलगत जियरा,
"अख्तर" प्यारे बन-बन मभी।

राग व ताल ऐंजन[3]

आस्ताई—उलझ रहेगी दोउ नयना नथ पर।
अन्तरा—बूढा भी हो राम-राम जपो,
पीत करन तुम छोडो "अख्तर"।

राग व ताल ऐंजन[4]

आस्ताई—ऐ गुइयाँ मैहका जीना न भावे रे।
अन्तरा—गाए बजाए भाव दिखाए "अख्तर" लुभावे रे।

राग व ताल ऐंजन[5]

आस्ताई—मोरी नीहड-नीहड भीजी चुनरी,
जमुना फिरी जमुना फिरी
अन्तरा—इश्क लगा "अख्तर" पनिहारिन से,
इधर आम्हरी इधर आम्हरी।

राग व ताल ऐंजन[6]

आस्ताई—चादगज मे लगी मोरी यारी।

1-6. पूर्वोक्तानुसार

अन्तरा—जोबन सवारो चलो पानी भरने
"अख्तर" की मैं बलि-बलिहारी ।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—फुलवा बीनन जाऊँ ऐ मै
देखो री गवार तोरी बगिया मे ।
अन्तरा—माली दिखत "अख्तर" बार-बार मोहे
तोड-तोड धरूँ अगिया मे ।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—कलारे महका दारोरा मद से छका दे ।
अन्तरा—"अख्तर" नैनन मोरे अलसाने
भर-भर प्याला पिला दे ।

ठुमरी, सोर, ताल जल्द तिताला

यह फसल बरसात और ताबे[3]— अब्र[4] की है ।

आस्ताई—मेरे नैना अरे वह तो रूप जौबन मे लालची भए।
अन्तरा—जिया को सभालू "अख्तर" कैसे मगता रहे ।

फसल सातवीं होली चाचर में : होरी, रागिनी झझवटी, ताल चाचर यह हर वक्त बरती जाती है ।

आस्ताई—मै भोली न लाया रे न लगाया ।
अन्तरा—अख्तर पिया की कदर न जानी
आशिक नाम दोहराया ।

राग काफी

यह भी हर वक्त बरती जाती है।

आस्ताई—तुम तो होरी खेल आए सौतन से
फिर मोहसे कहत घूघट खोलो ।

1-2 पूर्वोक्तानुसार, 3. पाबन्द, 4 बादल

अन्तरा—भीज गई चूनर मोरी सारी
"अख्तर" पिया मुख बोलो।

राणिनी व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—भाई रे मै केसर घोलूँ
केसर घोलू मै रग बनाऊँ।
अन्तरा—काजर दे मुँह देखत बोलूँ
"अख्तर" पिया को मै सग बनाऊँ।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—झूमर घाघर ले गइया रे,
नयी रे नैल मेरी जोबनहारी रे।
अन्तरा—छलक छलक गयी मटकी "अख्तर"
तोरा बिछरना जिया पर भारी रे।

राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—जाओ रे सइया को ले आओ रे।
अन्तरा—मेरी ओर से "अख्तर" को बुलाओ
साजन उन्हे लाओ रे।

राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—कौसर का जाम भर दे ऐ नजफ के बसइया।
अन्तरा—अली ओ बली सग रग मचा है
"अख्तर" होरी के खिलइया।

राग व ताल ऐज़न[5]

आस्ताई—यह ब्रजबाला ख्याल पडो रे
मै किसी के नक्स पाऊँ रे।
अन्तरा—आओ सखी मोह से रग तो खेलो
"अख्तर" पिया को मनाऊँ रे।

1-5 पूर्वोक्तानुसार

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—होरी खेलन की सौ-सौ घाते
ऐसे खिलारी से डरिए रे।
अन्तरा—अबीर गुलाल को फेंकत पल-पल
"अख्तर" को मुख न करिए रे।

राग पीलू जगला

आस्ताई—अगिया बेजी चटकीली सुन्दर नार।
अन्तरा—इस अगिया मे लाल लगे है,
मोती लगे है हजार।

राग बहार

आस्ताई—तू कह रे भौरा पिया को
पिया की बात मोरे जिया के साथ।
अन्तरा—चदा सा मुखडा कवल ऐसे गात
तरप-तरप बीती सिगरी रात।

राग बहार की माझ, जल्द तिताला
यह तमाम रात बरती जाती है।

आस्ताई—एक रे जाने मोरा तोरा जियरा।
अन्तरा—साकिया बरखेजो जामी वो मेरा
खाक बरसरेकुन गमे अय्याम रा।

राग लोम, ताल ऐजन[2]
यह शबाना रोज बरती जाती है।

आस्ताई—जाओ रे "अख्तर" को मनाओ रे।
अन्तरा—मेरा उठता जोबनवा दिखाओ सखी यही आओ रे।

1–2 पूर्वोक्तानुसार

होरी, कौकब, ताल ऐज़न[1]
इसका वक्त पहर दिन चढे से दोपहर तक है ।

आस्ताई—डूबते दिल के पार लगइया
"अख्तर" साई नाव खिवइया ।
अन्तरा—पार करो मझधार से नइया
जिया धरकत मोरा साझ से दइया ।

राग जगला
यह दोपहर ढले दिन से चार घडी दिन रहे तक गाया जाता है ।

आस्ताई—चिलम भरत मोरी जल गई चुटकिया
सइया निरमोहिया राज ऐ रामा ।
अन्तरा—जियरा मोरा सुलगत 'अख्तर'
होरी खेलत तोह से आज ऐ रामा ।

टेसू रागिनी झिझवटी, ताल चाचर
इसका वक्त तमाम रात है ।

आस्ताई—टेसू टको न ले है चले है ।
अन्तरा—एक हाथ रुपया दूजे हाथ सुनवा
साल-दोसाले देहै चले हैं ।

झझिया, रागिनी खमाच
इसका वक्त तमाम रात है ।

आस्ताई—झझिया मागन आए रे मेरी बाली रे भोली ।
अन्तरा—इस झझिया मे लाल लगे है, मोती लगे अनमोल रे ।
मोरी बाली रे भोली ।

नौबत, रागिनी ऐजन[2]

1-2 पूर्वोक्तानुसार

आस्ताई—नौबत चुनी गाम्बरा
हरियाले बनो का बनरा।
अन्तरा—देखा "अख्तर" सोहाना मुखडा
प्यारी राजदुलारी का बनरा।

फ़सल आठवीं दादरा मे : दादरा, रागिनी जिला, मुताहिलक[1] झिझवटी, ताल जल्द तिताला इसको दिन और रात बरतते है।

आस्ताई—बिरजवा के मद पियो
पियो मेरी जान।
अन्तरा—लाए कलारे भर-भर प्याले अख्तर सुल्तान।

दादरा, रागिनी काफी, ताल अद्धा
यह हर वक्त बरती जाती है।

आस्ताई—आवत है "अखतर" प्यारे गलन मे धूम डाले।
अन्तरा—चेरी वाले कह दो कोई आकर
अब मोरे मन से कँटवा निकाले।

राग व ताल ऐजन[2]।

आस्ताई—बाबू कलवा कलवा को पुकारे
अरे हो जमादार।
अन्तरा—मेज लगत है आओ 'अख्तर' पिया
चलो खानसामा[3] कहा।

दादरा, रागिनी लोम, ताल अद्धा।
इसका वक्त शबाना रोज है।

आस्ताई—वाह जी वाह यह ठठ्ठा नही अच्छा
राह चलतो का दामन पकड लेते हो।

---

1 पूर्वोक्तानुसार, 2 सम्बन्धित, 3 बावर्ची

अन्तरा—जाने नही देते हो मुझको बाहर
हाथो से नाहक जकड लेते हो ।

दादरा, रागिनी सारग वृन्दावनी, ताल अद्धा
इसका वक्त पहर दिन चढे से दोपहर दिन तक है ।

आस्ताई—हमारे बनो कुछ न जाने ।
अन्तरा—वो मुरगा बना, बनी को कुँकडू बुलावे ।
वो बकरा बना, बनी को मे-मे बुलावे ।

दादरा, रागिनी पीलू, ताल अद्धा
यह दोपहर ढले दिन से चार घडी दिन रहे तक बरती जाती है ।

आस्ताई—आजा निदिया मेरे बलम को ।
अन्तरा—दु ख न होवे सपने मे "अख्तर"
मौला रक्खे तेरे धरम को ।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—बाँके बाँके रे सिपहिया तोरी नजर बुरी ।
अन्तरा—भाल लगाए "अख्तर" मन ले जाए
हाथ सरोही कमर छुरी ।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—कोई गर या डूबे मझधार जोबन दोऊ तेरे ।
अन्तरा—रोवत-रोवत कल न परत है,
"अख्तर" अखियाँ है न हेरे ।

राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—नैना झमकाए जाए बननिया ।
अन्तरा—"अख्तर" प्यारे रग मचाओ,
सेहरा गूध लायी मोरी मालनिया ।

1-3 पूर्वोक्तानुसार

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—जा बेदरदी मै तोहसे नही बोलती ।
अन्तरा—"अख्तर" प्यारा आली हमारा
बद अगिया के अभी तो नही खोलती ।

दादरा, रागिनी पीलू बिखा, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त तीन पहर दिन से दो घडी दिन रहे तक है ।

आस्ताई—कीली डालो लाल गोजरिया मे ।
अन्तरा—लहगा मोरा भीजत "अख्तर"
दाग लगा मोरे पहरिया मे ।

दादरा, रागिनी धानी, ताल जल्द तिताला
इसका वक्त पहर दिन रहे से दो घडी दिन रहे तक है ।

आस्ताई— दे दे बनी को दूध पूत नारी को ।
अन्तरा—भालो चौपराल तुम्हार भालो
नजरिया "अख्तर" अम्रमाई को ।

दादरा, रागिनी गौरी, ताल कहरवा
इसका वक्त दो घडी दिन रहे से चिराग जले तक है ।

आस्ताई—सुल्तान जाने आलम ने दी हमको वर्दियाँ ।
अन्तरा—घनन घनन घुघरू बाजे "अख्तर"
पल-पल बाजे-बाजे इक दो, इक दो थिरके महरियाँ ।

राग व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—रे बटोहिया बैरा जाए रे बटोहिया बैरा ।
अन्तरा—इधर "अख्तर" आए रे इधर 'अख्तर'
परख हीरा लाए रे परख हीरा ।

1-2 पूर्वोक्तानुसार

दादरा, रागिनी गौरी माझ, ताल अद्धा
इसका वक्त भी तमाम रात है ।

आस्ताई—सरा राधिका चली जा हमारा देख चली जा ।
अन्तरा—अरे वो उल्टे तीतर मेरे लहँगे के भीतर ।

दादरा, रागिनी खमाच
ये भी तमाम रात गायी जाती है ।

आस्ताई—बाली ननद रे कुएँ पानी न जाओ
नैना लगाए कोई ले जाएगा ।
अन्तरा—"अख्तर" प्यारा नजर पडा है
मन को दाग दे जाएगा ।

रागिनी गौरी, ताल जल्द तिताला

आस्ताई—बम्हना रे मै नाही तोरे राजी ।
अन्तरा—"अख्तर" से मै पीत करूँगी
सग चलूँगी बाके आजी ।

रागिनी गौरी, ताल अद्धा

आस्ताई—राम कैसे उतरूँ पडाकर नदैया ।
अन्तरा—मोरे नोडिया यू है पडे है
पार लघ गए "अख्तर" बेल बिछइया ।

रागिनी व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—आचम बीती ऐलम उठी धूम रोया चा चौकी ।
अन्तरा—गाजपा सुगनाबाडी मे बागे "अख्तर" हरे-हरे सखी ।

राग व ताल ऐजन[2]

1-2 पूर्वोक्तानुसार

आस्थाई—भाई रे दे दे ग्हबोना घोरी ।
अन्तरा—बाडी मे तोरी रहियो "अख्तर"
जइयो साझ न भोरी ।

दादरा, जवानी जिन्नाती

आस्ताई—ए जी मुमीना सलीचा करे बीबी
शीशे की शीशी के पोतरे ।
अन्तरा—कच के तुच के लाचके पचचके,
'अख्तर' कचक हुर बहुत रे ।

राग व ताल ऐंजन[1]

आस्ताई—पीत के कही फदे पडे है
नाहक सैंया मोह से लडे है ।
अन्तरा—तन ने पाया मन ने पाया
'अख्तर' प्यारे दर पर अडे है ।

रागिनी व ताल ऐजन[2]

आस्ताई—जालिम से नैंना लगो
कोई दिन याद करोगे ।
अन्तरा—बलि-बलि जाऊँ छछडे तुम्हारे,
उल्टी तोहमत 'अख्तर' धरोगे ।

राग व ताल ऐंजन[3]

आस्ताई—गूदो गोरे बदन पर गुदना ।
अन्तरा—नाक की कील झलक गई 'अख्तर'
मुठिया का लटक आया फुदना ।

दादरा, रागिनी भोपाली, ताल कहरवा
इसका वक्त चार घडी रात गए से आधी रात तक है ।

1-3 पूर्वोक्तानुसार

आस्ताई—पूछो तो प्यारी किधर गई ।
अन्तरा—बलि-बलि जाऊँ रैन दिनन में
'अख्तर' के सग नजर गई ।

राग व ताल ऐजन[1]

आस्ताई—तेरे बसीर मे गधा लटके
तेरा झुझवा से पेट जुदा लटके ।
अन्तरा—मदभरी अखिया देखत 'अख्तर'
जट मे जोगिया बिला लटके ।

रागिनी ऐजन[2], ताल अद्धा

आस्ताई—गेदवे की आई रे बहार
सइया मेहका गेदवा मगा दे ।
अन्तरा—'अख्तर' तोरे पइया मै लागू
फूलो के बिरवन का बाग लगा दे ।

राग व ताल ऐजन[3]

आस्ताई—मुझे खुम्मू की जान की सौ हाँ-हाँ
मुझे और मदान की सौ क्या-क्या दिया है जहेज ।
अन्तरा--दो छहरिया है, दो पहरे है
'अख्तर' पुकारा बरेज ।

राग व ताल ऐजन[4]

आस्ताई—कल मारकीमी मे हम भी होगे
तुम भी होगे वाह-वाह ।
अन्तरा—नाचे गाये भाव बताएँ तिस पर हमसे रूठे हो
"अख्तर" प्यारे घर की झिडकी हमको दोगे वाह-वाह ।

1-4 पूर्वोक्तानुसार

फसल नवी–सरगम में : सरगम भैरो, मिजाज तीन लय के ठह, दगुन तिगुन

आस्ताई—सा रे गा मा पा धा नी सा
सा नी धा पा मा गा रे सा ।

अन्तरा—सा नी धा पा मा गा रे सा ।

सरगम कल्याण, ताल सूलफाखता

आस्ताई—धा मा धा मा गिरि धा मा
गिरि सा धा नी रे सा नी ।

अन्तरा—पा पा धा पा पा धा मा गा
मा गा सा नी धा पा मा गा
रे सा रे गा पा रे गा मा
गा रे सा नी ।

फ़सल दसवी टप्पा में और मुतफ़र्रिकात[1] में टप्पा, रागिनी खमाच, ताल धीमा तिताला इसका वक्त तमाम रात है ।

आस्ताई—यार बदनाम मेडी मुल्क जहाँ दे ।

अन्तरा—तारे अकास पर "अख्तर" साझ भी है
चन्द्रमुखी मे भवे दोऊ धनक कमान दे ।

राग व ताल ऐज़न[2]

आस्ताई—रब नूँ मै तो तेरी बादिया छोहरिया बी
मै तो तोरी बादिया मिला दे रब नू ।

अन्तरा—तरक तरक गयी अगिया मोरी
"अख्तर" देखो अब नू ।

---

1 विभिन्न, 2 पूर्वोक्तानुसार

मुतफ़र्रिकात[1] मतले

आस्ताई—आया सावन का महीना पहनो जानी चूड़ियाँ ।
अन्तरा—सुर्ख जोडा बरमी होय और धानी चूड़ियाँ ।

आस्ताई—छल्ला जडाऊ दाबरी हाथ यमनी छल्ला ।
अन्तरा—जरूर रहता है, 'अख्तर' के साथ यमनी छल्ला ।

दूसरा आस्ताई—मेरा हरियाला बना आ बैठा दालान के बीच ।
अन्तरा—गोया जान आ गयी मुझ गमजदा जान के बीच ।

1. विभिन्न
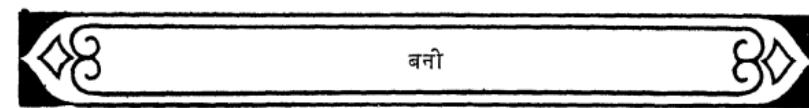
दूसरा अध्याय
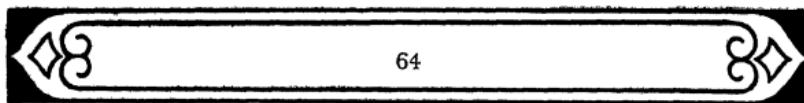
ताल अध्याय इस ग्रथ का सबसे छोटा अध्याय है । यह मात्र तीन पृष्ठ का है । ऐसा इसलिए भी है कि ताल विषयक् जानकारी लेखक ने अपनी दो अन्य पुस्तको 'नाजो' और 'दुल्हन' मे भी प्रस्तुत की है ।

सुर के साथ लेखक को ताल का सम्यक् ज्ञान था । उन्होने ताल का ज्ञान नृत्य के अनुकूल प्रयुक्त किया है । प्राचीन काल मे विलम्बित, मध्य और द्रुत तीन लय रही है—यही ठह, दुगुन और चौगुन कही गईं । लेखक ने ठह, दुगुन और तिगुन लय को अपनाया कदाचित् इसका सीधा सम्बध गायन वादन के स्थान पर नृत्य से अधिक जुडा । ऐसा मालूम पडता है कि शिष्य वर्ग को सिखाने की उनकी यह निजी तरकीब रही है । अब नौ तरह की लय प्रचलित है जिनमे अतिद्रुत का विशेष स्थान है ।

एक टुकडा नाम "अख्तर" पसन्द लेखक की खोज है, जिसका कदाचित् अधिक प्रचलन रहा होगा। अब्दुल हलीम "शरर" के अनुसार 'ढोल-ताशा बजाने की कला कितनी महत्वपूर्ण और नियमबद्ध थी, इसका सबूत इससे बढकर क्या होगा कि अवध के आखिरी शासक वाजिद अली शाह को, जो सगीत के माने हुए आचार्य थे, मैने कलकत्ता मे अपनी आख से देखा कि मुहर्रम की सातवी तारीख को जब मेहदी का जुलूस उनकी आसमानी कोठी से रवाना होता तो वे खुद गले मे ताशा डाल कर बजाते थे। यह प्रथा आज से कुछ वर्ष पूर्व तक अवध और कलकत्ता मे प्रचलित थी कि मोहर्रम की सातवी तारीख को बडे-बडे राजा, और नवाब हिन्दोस्तानी रीति और मोहर्रम से श्रद्धा के कारण मेहदी के जुलूस मे कम से कम एक बार ताशा मे हाथ जरूर लगाते थे।'

इस बाब यानी अध्याय मे भी लेखक ने तालो को दो फसलो अर्थात् सवर्गों मे बाटा है।

बाब दूसरा यानी अध्याय दो

यह बाब ताल के सम्बन्ध मे है ।

इसमे एक मुकद्दमा[1] और दो फसले है ।

मुकद्दमा–जानना चाहिए कि नाच और गाने मे तीन तरह की लय दुरुस्त है और इससे सिनततबई है ।

पहली ठह, दूसरी दुगुन और तीसरी तिगुन ।

ठह–इसके यह माने है कि एक मिजाज सौलियत का साहबे लय मुकर्रर[2] करे ।

दुगुन—इसके यह माने है कि उसी मिजाजे मुकर्रिर–ए-ऊला[3] मे वही अल्फाज[4] सहल मुजाफ हो जाये ।

तिगुन—इसके यह माने है कि उसी मिजाज पर एक हिस्सा और बढाया इस तरह कि जैसे एक (शख्स) ने एक राह को दस कदम पर तय किया और फिर उसी राह को बीस कदम पर तय किया—उसका नाम दुगुन है । फिर उसी राह को तीस कदम पर तय किया, उसका नाम तिगुन है ।

फ़सल पहली, टुकड़ों के बयान मे—यह टुकडे अल्फाज से अदा होते है ।

पहला टुकडा, मोहरा इत्तदा, पहले की खाली से धा कट धी धी गन्हा कह धत ता धा धी धत ता धा धी धत ता धा धी धत ता धा धी धत ता धा ।

दूसरा, परन नाम इत्तदा, सम से धा ता धी धत ता धा करढा करढा करढा करढा करढा करढा करढा करढा करढा ।

तीसरा, लवनाम, इत्तदा तीसरे की खाली से धा कडधत ता ता करढा करढा करढा ।

चौथा, अकीक नाम, इत्तदा सम से ततकत धी दे धना धना धा ता धा ता धा कत तधा तधा तधा ।

---

1. बहस 2 निश्चित 3 पहले कहे गए स्वभाव 4 शब्द

पाचवा, मोती नाम, इत्तदा तीसरे की खाली से तट कत धी धी धना धा तट कत खी कहना धा तट कत खी कहना धा तट कत धी धी धना ।

फ़सल दूसरी, टुकड़ों के फेरियों के बयान मे—टुकडो की ये फेरिया गिनती से अदा होती है । टुकडा तीन का इकहरा दो तरफी फेरी इत्तदा सम से सम तक ।

एक दो तीन और फिर सम से सम तक और फिर सम से सम तक । इस हिसाब से तीन मर्तबा मे आता है और फिर तीसरे से सम तक एक बार मे । टुकडा तीन का सवाया दो तरफी फेरे, सम से सम तक आता है । तफसील उसकी यह है—एक दो, एक दो, एक दो तीन । तीन बार मे आता है ।

टुकडा चार का सवाया दो तरफी फेरी सम से सम तक तीन मर्तबा मे यह भी आता है । तफसील इसकी ये है—

एक दो, एक दो, एक दो तीन चार ।

टुकडा पाच का—ठह, दुगुन, दोतरफी, फेरी इत्तदा खाली से बीच मे एक आवर्द जाती है । तफसील उसकी यह है—एक, दो, तीन, चार ।

पाच नाम लच्छा दो तरफी फेरी सम से शुरू सम तक । एक दो तीन-तीन मर्तबा फिर सम से सम तक । एक, दो, तीन, चार, पाच—फिर सम से खाली तक । एक, दो, तीन, एक दो तीन, एक दो फिर खाली से सम तक । दुगुन मे—एक, दो, तीन चार, पाच—तीन बार फिर सम से खाली तक । एक दो तीन, चार, पाच, छह । फिर खाली से सम तक—एक दो तीन, एक दो तीन, एक दो ।

नाम सोहराठा दुगुन एकतरफी फेरी दाहिनी तरफ से इत्तदा खाली से तीन आवर्दों मे आता है और दुगुन मिलाकर चार आवर्दों मे आता है । तफसील उसकी यह है कि एक, दो, तीन, चार पाच । टुकडा नाम अख्तर पसद—दो तरफी फेरी बाये से सम्पूर्ण है । तफसील उसकी यह है कि एक दो तीन, एक दो, एक दो पर सम है और छक्के जवाहर लच्छे छौहो टुकडे कब्ल-अजी[1] नाजो और दुल्हन मे हवाला-ए-कलम कर चुका हूँ, लिहाजा तकरार मुनासिब न जानी । वो टुकडे भी मेरी तालीम[2] यापतगान[3] जबान से और गिनती से और फेरियो से और हाथो से और पावो से ठह, दोवन ततकार मे बिठाकर बराबर अमल मे लाते है ।

---

1. इससे पूर्व, 2. शिक्षा, 3 पाने वाली

तीसरा अध्याय

रहस

इस अध्याय मे लेखक ने चित्रो सहित इक्कीस नृत्य गतो का वर्णन किया है। वाजिद अली शाह द्वारा उपजित रहस के नृत्यो मे इन गतो का अत्यधिक महत्व था। कालान्तर मे इन गतो ने नृत्य-ससार, मुख्यत कथक, मे स्थान प्राप्त कर लिया। यह सारी गते लेखक ही द्वारा उपजित है। गतो को भली प्रकार समझाने के लिए 'हाथस्केच' भी दिए गए है।

इन इक्कीस नृत्य गतो मे से सोलह कथक गत तथा पाच कहरवा नृत्य की गते है। कहरवा के चार तोडो के विपय मे भी सक्षेप मे बताया गया है। अपनी युवराजी के समय से ही वाजिद अली शाह ने रहस आरम्भ कर दिए थे, किन्तु राजा बनते ही यह सारी व्यस्तताएँ समाप्त हो गई थी और राजकाज मे अधिक लीन हो जाने के कारण इस प्रकार के सारे रहस आदि समाप्त हो गए थे। सल्तनत समाप्त होने के बाद जब वाजिद शाह को कलकत्ते जाना पडा और वहाँ पहुचकर उन्हे आभास हुआ कि अब सल्तनत वापस नही मिलनी है तो वे फिर अपने पुराने शौक की ओर लौट आए और उस समय जो कुछ नयी नृत्य-गतो की स्थापना, नए रहस तैयार किए, उनमे यह गतें प्रयुक्त की और इस पुस्तक मे भी उन्हे स्थान दे दिया।

बाब तीसरा यानी अध्याय तीन

इसमे दो फसले है—पहली फसल मे नाच की गतो की गिनती और उनके नाम है। यह सोलह गते है। मुझसे जो तालीम हासिल कर रहे है वे उन्ही गतो की बिना पर सीख रहे है। मेरा दिल चाहता है कि इन गतो का मै विस्तृत वर्णन करूँ, जिससे हर इच्छुक नृत्य-प्रेमी इसे अपना सके।

फ़सल पहली :

पहली सलामी गत ·

वह यह है कि नर्तक दर्शक की ओर मुह करके खडा हो और दाहिने हाथ की पहली उगली से सारी उगलिया मिली हो और माथे पर हो, अँगूठा अलग हो, बाया हाथ मुट्ठी बाधकर कूल्हे पर रखकर सारा हाथ कधे तक आधे चाद के रूप मे रहे। ऐसा करने के बाद सामने दर्शक के नाचे। इस वक्त नर्तक का दाहिना पहलू नाच देखनेवालो के सामने हो।

दूसरी दाहिना हत्था गत

दाहिना हाथ लम्बा करे—न जमीन की ओर न आसमान की ओर, बल्कि नाच देखनेवालो की ओर हो। हाथ की सभी उगलिया मिली रहे और बाया हाथ पहली गत के अनुसार ही रहे। नाचे जाने के वक्त की भी सूरत पहली गत की तरह ही हो।

तीसरी बायाँ हत्था गत

दाहिना हत्था गत की तरह हो।

चौथी फरियाद गत

इसमे दोनो हाथ फैले रहे यहा तक कि बगल के अदर तक दिखाई पडे, नर्तक का चेहरा दर्शक की ओर हो और पीछे होते वक्त दाहिना हाथ नाच देखनेवालो की तरफ रहे ।

पाचवीं मोअद्दब गत

दाहिने हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर दोनो हाथो को नाभि से मिलाकर नाचे और पीछे होते वक्त दाहिना पहलू नाच देखनेवालो की ओर रहे ।

छठी नाज़ गत

दाहिने हाथ की उगलिया मिलाकर उसी हाथ के बीच की उगली को ठुड्डी के ऊपर इस प्रकार रखे कि उस हाथ की हथेली नजर आए और बाएँ हाथ की सूरत मोअद्दब गत के बाएँ हाथ की सूरत की तरह हो। नाच मे पीछे होते वक्त दाहिना पहलू दर्शक की तरफ हो।

सातवी गमज़ा गत

दाहिने हाथ की मुट्ठी बाधकर सीने पर रखे और बाया हाथ नाज गत के हाथ की तरह हो। नाच मे पीछे होते वक्त दाहिना पहलू दर्शक की तरफ रहे।

आठवी पेशवाज गत

पेशवाज के सिरे को दाहिने हाथ से दाहिनी तरफ खीचे और बाएँ हाथ की सूरत नाज गत की तरह सामने कमर पर रखकर नाचे । पीछे होते वक्त भी नाज़ गत की तरह हो ।

नवीं मुकुट गत

दोनो हाथो की उगलिया इस तरह की जाये कि हर उगली दूसरी उगली के अन्दर खाइयो मे बैठ जाए । दोनो कोहनिया और बाजू कधो तक चौदहवी रात के चॉद की तरह चार अगुल सर से ऊँचा करके सर पर लाए और नाचे । पीछे होते वक्त पहली गतो की तरह हो ।

दसवी, लखनव्वा घूंघट गत

बाएँ हाथ से घूँघट को नाभि तक इस तरह खीचे कि आधा दाहिना चेहरा घूघट से बद हो जाए। दाहिना हाथ दाहिनी तरफ सिर पर उलटा इस तरह से रहे कि हथेली नज़र आए। नाच मे पीछे जाते वक्त इससे पहली गत की तरह रहे।

ग्यारहवीं घूघट गत

घूघट के दो सिरे बनाकर दोनो हाथो से इस तरह खोले कि दोनो बाहो के बीच मे दो बालिश्त से कम फासला न हो। सिर के पीछे से सिर के ऊपर लाकर घूँघट को इस तरह चौडा करे कि हाथ से एक बालिश्त घूँघट की चौडान हो और नाचे। पीछे हटने का तरीका पहले जैसा ही हो।

बारहवी, बगाली घूघट गत

घूँघट निकालकर नाज गत की तरह नाचे ।

तेरहवी बंधी सलामी गत

दाहिना हाथ सलामी गत की तरह रहे । बाएँ हाथ की मुट्ठी बाधकर सीने पर रखे और नाचे । पीछे जाने का तरीका पहले जैसा अपनाए ।

चौदहवी दाहिनी बांकी गत

इस गत मे दाहिना हाथ दाहिना हत्था गत की सूरत की तरह हो, मगर बायाँ हाथ कोहनी तक खुला हो और सीने पर रखकर नाचे। इस तरह से कि दोनो हाथो के बीच की उगलियाँ हाजरीन की तरफ हो। पीछे जाने का तरीका पहले जैसा ही हो।

पन्द्रहवीं बायीं बांकी गत

दाहिनी बाकी गत का उलटा।

सोलहवीं प्यारी गत

दोनो हाथो की हथेली दोनो बाजुओ के नीचे रखकर नाचे और पीछे जाने का तरीका पहले की तरह अपनाए ।

फसल दूसरी कहरवा नाच में—इसमे सिर्फ पाच गते है ।

पहली मछहरा गत

दाहिने हाथ की हथेली बाएँ हाथ की हथेली पर रखकर दोनो अँगूठो को लय मे हरकत दे और एक दो की गिनती पर नाचे । दाहिने पाव से एक और बाएँ पाव से दो कहरवे का सम एक ही पर होता है । दाहिनी तरफ से घूमना एक तरफ का तरीका पहले की तरह है ।

दूसरी भैगा गत

दाहिने हाथ का अगूठा दाहिने कधे पर रखे और बाए हाथ का अगूठा बाईं कमर पर और उगलियॉ खुली रहे ।

तीसरी ठगा गत

दाहिने हाथ का अगूठा खडा रख के और सभी उगलियॉ बद करके सीने पर रखे और बाई बाह की मुट्ठी बाधकर बाए पहलू पर रख कर नाचे ।

चौथी लहगा गत .

लहँगे को दोनो हाथो मे नेफे[1] के पास से उठाकर नाचे ।

पाचवीं पंखा गत

दोनो हाथो के अगूठो की उगलिया खुली हुई दोनो कधो पर रखकर नाचे । जानना चाहिये कि कहरवा मे सिर्फ चार तोडे है । पहला बाएँ नितम्ब पर, दूसरा दाहिने पर, तीसरा दोनो जानू[2] पर, चौथा खडे होकर ।

---

1. जिसमे कमर बन्द डाला जाता है ।
2. घुटने

चौथा अध्याय

रहस विस्तृत

इस अध्याय मे रहस का विस्तृत वर्णन किया गया है । रहस शब्द, रहस खेल, रहस नृत्य वाजिद अली शाह के ही मस्तिष्क की उपज है । रहस वास्तव मे रास शब्द का अपभ्रश है । श्रीकृष्ण की रासलीलाओ पर आधारित कुछ लीलाओ को सामयिक रूप देकर वाजिद अली शाह ने नई लीलाये बनाईं । इसके अतिरिक्त लखनऊ के वातावरण और हिन्दू मुसलमानो की मिश्रित सस्कृति ने कुछ नई रासलीलाओ को भी जन्म दिया जिन्हे उन्होने रहस का नाम दिया ।

इन रहसो मे 'दरया-ए-ताश्शुक' और 'अफसाना-ए-इश्क' लेखक ने स्वय लिखे है तथा 'क़िस्सा राधा-कन्हैया' का कथानक उन्होने राधा और कृष्ण की प्रेम-गाथा से उद्धृत किया है । इन रहसो मे होने वाले नृत्य पर उनका विशेष ध्यान रहा और रहस के नृत्यो को, जो

उनकी स्वय की उपज है, उन्होने छत्तीस-ईजादी रहसो मे विभाजित कर दिया जिसका बखान इस अध्याय मे मिलता है । अध्याय के दूसरे भाग मे राधा और कृष्ण के दो रहस दिए गए है जो सक्षिप्त भी है और सारी रात खेले जाने योग्य भी ।

अन्त मे इन रहसो के कलाकारो के विषय मे और उनके वेश-विन्यास के विषय मे भी बताया गया है ।

रहस मजिल के बारे मे मेहताब-उद्-दौला बहादर दरवशा ने सन् 1294 हि० मे लिखा था—

रहस मजिल है परियो का अखाडा,
अजब कमरा सुलेमानी बना है ।
दरवशा जलवागर है, साले तामीर,
मकाने जश्न खाकानी बना है ।

रहस की परम्परा मे ही अमानत ने इन्दरसभा की रचना की जिसे पर्याप्त लोकप्रियता मिली । इन दोनो नाट्य-रूपो मे अन्तर यह था कि रहस शाही स्टेज था तो 'इन्दरसभा' अवामी स्टेज । इसी 'इन्दरसभा' से पारसी रगमच तथा फिल्म जगत ने प्रेरणा ग्रहण की । इस प्रकार वाजिद अली शाह की रासलीला अवलम्बित "रहस" परम्परा आज भी जीवित है । कालान्तर मे भ्रमवश यह प्रचार हो गया कि बादशाह वाजिद अली शाह ने 'इन्दरसभा' की रचना की थी जब कि ऐसा कहना नितान्त अप्रासगिक है । सन् 1934, मार्च की हिन्दी पत्रिका 'चॉद' मे "वाजिद अली शाह और उनका नाटक 'इन्दरसभा' " के नाम से प्रकाशित लेख से कदाचित हिन्दी जगत मे यह भ्रम फैल गया था ।

बाब चौथा यानी अध्याय चार

रहस के बयान वाले इस बाब मे दो फसले है ।
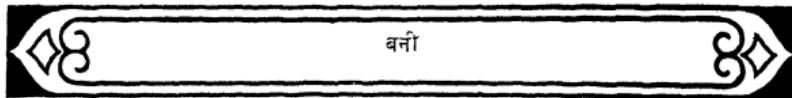
फसल पहली छत्तीस ईजादी रहसों मे

सखिया पेशवाज वगैरा से आरासता[1] होकर आए और खामोश होकर आए । उनके हमराह साजिन्दे यह तसनीफ-राकिम[2] गाए ।

आस्ताई—चलो चलो सखी अब रहस करे
'अख्तर पिया' के मन को रिझाए ।

जिस वक्त राकिम का तखल्लुस लबो[3] पर आए फौरन सब सखिया खडी हो जाएँ और जिस मुकाम[4] पर रहस के वास्ते सफ[5] बाधकर जहाॅ खडा होना मुकर्रर[6] हो चुका है, वहाँ पर सफबस्ता[7] हमवार[8] उस्ताद हो और रहस के वक्त लाज़िम[9] है कि हर गूना अक्ल ओ शुएब[10] और शोरगुल से महफूज़[11] रहे और न मुकामे रक्स[12] से ताइखतेमाम[13] बाहर जाएँ और दो जोडे छोटे-छोटे झाझो के जाबी सफ के बजाए जाएँ । कुमकुम हर रहस के माकब्ल[14] जरूर है कि राकिम की तसनीफात[15] गाएँ । बादहू[16] पखावजी के टुकडे के हमराह वो नगमा सम पर तमाम किया करे और हर रहस के खत्म के बाद 'चिरजीव रहो जानेआलम' या 'जानेआलम की जय' सुर मे कहा करे और एक टुकडा दाहिनी जानिब और दूसरा बायी जानिब और तीसरा बालाए नाफ[17] तमाम[18] करे । उसकी शक्ल यह है कि पहले दाहिने जानिब[19] दोनो हाथ लय मे बढाएँ और दूसरी दफा बाएँ जानिब भी इसी तरह से और तीसरी मर्तबा नाफ पर बाएँ हाथ की अगुष्तेकलमा[20] और अगुष्तेनर[21] मिलाकर चुटकी की सूरत बनाकर रखे और दाहिने हाथ की चुटकी बधी होवे । पेशानियो पर और एक दो तीन पर कमर को हिलाएँ । एक

---

1 सजधज कर, बन-सवरकर, 2 लेखक द्वारा लिखी गई, तसनीफ—लेखक के द्वारा लिखी गई चीज, राकिम–लेखक, 3 होठो, 4 स्थान, 5 पक्ति, 6 निश्चित, 7 एक पक्ति मे, 8 साथ मे, 9 जरूरी है, 10 खाने-पीने, 11 दूर, 12 नृत्य का स्थान, 13 समाप्ति तक, 14 पहले, 15 लिखित चीजे, 16 इसके बाद, 17 नाभि पर, 18 समाप्त, 19 ओर, 20 तर्जनी, 21 अँगूठा ।

दाहिने कूल्हे पर और दो बाएँ कूल्हे पर और तीन फिर दाहिने कूल्हे पर तमाम करे। इसके बाद लय-ताल मे गुलदस्ते उठाया और धरा करे। चक्करो मे एक दो के कदम लिए जाते है। टुकडे पखावजी बोलता है।

पहला रहस सलाम नाम

साहिबानेसफ[1] पहले तसनीफेराकिम[2] गाएँ और दाहिना हाथ मुनकलिब[3] पेशानी पर रखे और एक बाजू के अन्दर दूसरी अपना बाजू डालकर जजीराबदी करके दस्तेचप[4] बाए पहलू पर रखे फिर सलाम। अब "नाचो सखी रे" गाती हुई आगे आएँ और हल्का[5] बाधे यानी मुदब्बिर[6] हो। तब एक दो, एक दो के पाव से रक्स करे। मनबाद[7] हाथ जोडकर वही चीज गाती हुई पस्पा[8] होकर जाए मामुली[9] पर ताल मे एक दो, एक दो पाव से निकालती हुई जाएँ और 'चिरजीव रहे जानेआलम' कहे।
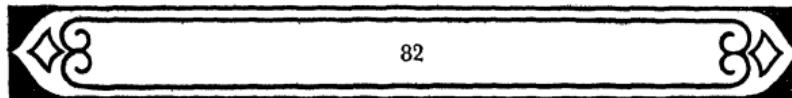
दूसरा रहस सीधी गुलमाल नाम

बालाए कमर जजीराबदी[10] करे। इस तरह से कि एक दूसरे अपना पजाएदस्त[11] मिला-मिलाकर कमर पर धरे और मिली रहे। फिर सीधे 'गुलमाल नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आये और हल्का[12] बाधे और रक्स करे और बतरीके अव्वल[13] अमल[14] मे लाएँ।

तीसरा रहस ताउस-पखी[15] नाम

इसमे अपने-अपने दाहिने हाथो को बाए हाथो पर रखकर बुलद करके पेशानियो[16] के ऊपर रखे और एक के बाजू के अदर से दूसरी का बाजू निकला हुआ हो और जजीराबदी करे। फिर 'ताउसपखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे बढे और हल्का करे और रक्स के बाद तरीके अव्वल अमल मे लाएँ।

---

1. पक्ति मे खडे नर्तक, 2. लेखक की कृति, 3 उल्टा, 4. हाथ बाया, 5 वृत्त, 6 एकत्र, 7 इसके बाद, 8 पीछे को जाना, 9 पुराने स्थान पर, गुलमाल नाम रहस का। मकान बनाने वाला मिस्त्री एक औजार प्रयोग करता है जिसे करनी या कन्नी कहते है, उसे गुलमाल भी कहते है। 10 जजीर के समान बधना, 11. हाथ का पजा, 12 गोला, 13 पहले के समान, 14 प्रयुक्त, 15 मोरपखी नाम रहस का, 16 माथा।

चौथा रहस मरूहा[1] नाम

अपने-अपने दाहिने हाथों से एक-एक कोना दाहिने तरफ़ के दुपट्टे का पकडकर सीधा दराज[2] करे और दूसरा आचल पसेगर्दन[3] से अटकाए रखे और मुट्ठी बाधकर अगुष्तेनर[4] और अगुष्तकलमा[5] से तना हुआ सिरा दुपट्टे का पकडे और बाया हाथ एक दूसरे की कमर पर रखकर जजीराबदी करके 'मरूहा नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्का करे और नाचे और बतरीके-अव्वल अमल मे लाएँ।

पाचवा रहस शिनाई[6] नाम

दुपट्टे का एक कोना दस्तेचप मे और दूसरा दस्तेरास्त[7] से पकडे। फिर लय-ताल मे जेर-ओ-बाला[8] करती हुई नाव खेने की तरह से और 'शिनाई नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ। अम्माबाद[9] यही गाती हुई मशरिकरूह[10] बरपुश्त[11] होकर एक के पीछे दूसरी एक-दो, एक-दो पाव से निकालती हुई पुरानी जगह पर जाए और 'चिरजीव रहो जानेआलम' सुर मे कहे। नाव खेने की यह शक्ल है कि लय मे पहले दस्तेचप नीचे लाएँ इस कद्र कि दस्तेरास्त कमर तक आए और फिर दस्तेरास्त बुलद करे मयपायचा[12] इस कद्र की दस्तेचप कमर तक पहुचे।

छठा रहस 'मेहताबमुखी[13] नाम

दोनो हाथो की कलमे[14] की उगलिया जोडकर मिस्लहिलाल[15] पेशानी पर रखे और एक के बाजू से दूसरी अपना बाजू निकाल लाए और जजीराबदी करे और 'मेहताबमुखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्का करे यानी मुदब्बिर हो और रवस करे। अम्माबाद[16] हाथ छोडकर यही गाती हुई एक दो, एक दो ताल मे पाव से निकालती हुई पस्पा[17] होकर जाए—मामूली[18] पर जाएँ और 'चिरजीव रहो जानेआलम' सुर मे कहे।

---

1 नाम रहस, अच्छा कार्यकर्ता, 2 लम्बा करे, 3 गर्दन के पीछे, 4 अगूठा, 5 तर्जनी 6 नाव खेने का अन्दाज, 7 दाहिना हाथ, 8 ऊपर नीचे, 9 इसके बाद, 10 पश्चिम की ओर, 11 पीठ करके, 12 लहँगे का सिरा, 13 नाम रहस, चन्द्रमुखी, 14 तर्जनी, 15 चाद के समान, 16 इसके बाद, 17 पीछे, 18 पूर्वस्थान।

सातवा रहस आफताबमुखी[1] नाम

दोनो हाथो की उगलियो को आपस मे मिलाकर उसके बाद दोनो हाथो की अगुष्तानेमियाना[2] को मुहाजी[3] एक दूसरे का करके इस तरह से कि अगूठा अलाहिदा रहे अपनी-अपनी पेशानियो[4] पर रखे और एक की बाजू से दूसरी अपना बाजू निकालकर जजीराबदी करे। फिर 'आफताबमुखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्का करे और रक्स करे और बतरीके अव्वल अमल मे लाएँ।

आठवा रहस आसमानमुखी नाम

अपना-अपना दाहिना हाथ मुनकलिब[5] सरो पर रखे और बाएँ हाथो को एक दूसरे के बाजू से निकालकर जजीराबदी करे और आखो से आसमान देखती जाएँ। फिर 'आसमानमुखी नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और हल्का करे और नाचे और बतरीके मरकूमाबाला[6] अमल मे लाएँ।

नवा रहस चौतरफा नाम

चार-चार सखी सफ[7] से निकलकर सामने आएँ। दो सखिया मुकाबिल[8] खडी हो। एक सखी दाहिने हाथ से अपने दस्तेचप[9] की कोहनी पकडे और बाएँ हाथ से मुकाबिल वाली[10] के दाहिने हाथ की कोहिनी पकडे और मुकाबिल वाली भी इसी तरह बजालाए[11] और दोनो हाथो को ताने रहे। अम्माबाद[12] दो सखियाँ रास्त ओ चप[13] से मुकाबिल होकर एक एक हाथ उन दोनो का अपने-अपने दोनो हाथो मे पकडें और चेहरे अदर की तरफ हो और जिस कद्र[14] हो अच्छा है। इसी तरह चार सखियाँ चौतरफा बन जाएँ। इस तरह से कि बाद की दोनो सखियो के दोनो हाथ पहली वाली दोनो सखियो के बदेदस्त[15] और बदे मुराफिक[16] पर कायम[17] हो। फिर 'चौतरफा नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और रक्स करे, यानी एक

---

1 नाम रहस सूरजमुखी, 2 बीच की अगुलिया, 3 सामने आमने, 4 माथा, 5. उल्टे, 6 पूर्वानुसार, 7 पक्ति, 8 सामने, 9 बाया हाथ, 10 सामने वाली, 11 वैसा ही करे, 12 इसके बाद, 13 दाहिने-बाये, 14. अधिक, 15 कलाई, 16 कोहनी, 17. स्थिर।

दो, एक-दो के पाव से घूमती जाएँ और चक्कर करती जाएँ और टुकडा बोलने के बाद हाथो को छोडकर यह गाती हुई पस्पा[1] होकर एक-दो, एक-दो ताल मे कहती हुई जाए-मामूली[2] पर जाएँ और 'चिरजीव रहो जानेआलम' कहे ।

दसवां रहस चौरुखा नाम

चार सखिया सफ[3] से निकलकर आपस मे हाथ से हाथ का पजा गाठकर हल्का करे और चेहरे बाहर हो और हाथो को ताने और खीचे रहे और जितनी हो उसी हिसाब से बन जाएँ और 'चौरुखा नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आएँ और रक्स करे । अम्माबाद हाथ जोड कर यही गाती हुई और ताल मे एक-दो, एक-दो पाव से कहती हुई जाए-मामूली पर जाएँ और 'चिरजीव रहे जानेआलम' कहे ।

ग्यारहवा रहस अफसर मुबारक नाम

अपने-अपने दाहिने हाथो के पजो को मुदब्बिर[4] करे और सीधा खडा करें और बाएँ हाथो से अपने-अपने दाहिने हाथो की कोहनियो को पकडे फिर 'अफमर मुबारक नाचो सखी रे' कहती हुई आगे आएँ और इसी तरह ता जाए-मामूल पिछले कदम ताल मे गाती हुई जाएँ । पुश्त[5] न होने पाए । मनबाद 'चिरजीव रहो जानेआलम' कहे ।

बारहवॉ रहस आदाब नाम

दाहिने हाथ मुनकलिब पेशानियो पर रखे और बाया हाथ एक-दूसरे की कमर पर रखे फिर 'जानेआलम रहस मुबारक' गाती हुई आगे आएँ और हल्का करे यानी मुदब्बिर हो और रक्स करे । मनबाद एक-दो पाव से निकालती हुई जाए-मामूल पर जाये ओर 'चिर-जीव रहो जानेआलम' कहे ।

तेरहवॉ रहस छत्र नाम

एक दूसरे के बाजू से बाजू निकालकर जजीराबदी करे और अपने-अपने दोनो हाथ के

---

1 पीछे जाना, 2 पूर्वस्थान, 3 पक्ति, 4 मिलावे, 5 पीठ ।

पजे गाठकर यानी मिलाकर पेशानियो पर मुनकलिब रखे और बतरीके-मरकोमाबाला[1] अमल करे ।

चौदहवा रहस खुशबुनियाद नाम

अपने-अपने दोनो हाथो को सीधा बुलद करे और हरेक अपने-अपने हाथ और बाजू को दूसरे के हाथ और बाजू से पेचीदा[2] रखे और बतरीके-मामूल-मरकमा[3] व मकतूबाबाला[4] अमल करे ।

पन्द्रहवाँ रहस बुरका नाम

अपने-अपने सिरो पर अपने-अपने दुपट्टो को बतरीके बगाली घूघट गत के छोड दे और एक दूसरे के बाजू से बाजू निकालकर एक दूसरे का पजा गाठकर कमरो पर धरे और जजीरा-बदी करे और बतरीके-मामूल अमल करे ।

सोलहवाँ रहस भला नाम

दाहिना हाथ खुला हुआ अपने-अपने सीने पर रखे और बाया हाथ एक दूसरे की कमर पर धर के बतरीके अव्वल बजा लाएँ ।

सत्रहवाँ रहस प्यारा नाम

अपने-अपने दाहिने हाथ की कलमे[5] की अगुली अपनी-अपनी ठुड्डियो पर रखे और बाया हाथ एक दूसरे की कमर पर धर के बतरीके-साबिक[6] अमल मे लाएँ ।

अट्ठारहवाँ रहस जाने-सखी नाम

बीच की सखी दोनो बगले जाबी[7] की सखियो को दोनो हाथो से पकडे और जाबी की

---

1 जैसा कि ऊपर बताया गया है, 2 बाधे, 3. जैसा कि ऊपर कहा गया है, 4 पूर्वोक्तानुसार, 5 तर्जनी, 6. पहले तरीके के समान, 7 साथ वाली ।

दोनो सखियाँ दाहिने हाथ के आपस मे पजे गाठ के बीच वाली के सिर पर रखे और मिस्ले एहकामे-साबिक[1] बजा लाएँ ।

उन्नीसवाँ रहस ह्रिया सखी नाम

एक सखी दाहिने हाथ से दूसरी सखी का दाहिना हाथ पकडकर पजे से पजा गाठकर खीचकर अपनी नाफ पर धरे और अपने-अपने बाये हाथ एक-दूसरे की कमरो पर धरे और मिस्ले-साबिक बजा लाएँ ।

बीसवाँ रहस चैन सखी नाम

एक दूसरे के हाथ का पजा गाठकर दर्मियान[2] वाली के सिर पर रखे । इस हिसाब मे दाहिने बाएँ हाथ दोनो पडते है और बीच वाली एक दूसरे के हाथ का पजा बखूबी[3] गाठकर कमरो पर रखकर जजीराबदी करे और मिस्ले-अव्वल[4] बजा लाएँ ।

इक्कीसवाँ रहस रास्तदस्त नाम

अपना-अपना दाहिना हाथ एक दूसरे के सिर पर सीधा मिस्ल दाहिना हत्था गत के बुलद करे और बायाँ हाथ एक दूसरे की कमर पर रखे और मुताबिक मक्तूबाए-अव्वल बजा लाएँ ।

बाईसवाँ रहस चपस्त नाम

तरकीब रास्तदस्त[5] के गरअक्स[6] बजा लाएँ ।

तेईसवाँ रहस राधा नाम

घूघट बतरीके लखनव्वा घूघट गत के निकाले और बतरीके एहकाम-साबिक[7] अमल करे ।

---

1 इससे पहले हुक्म के अनुसार, 2 बीच मे, 3 ठीक से, 4 पहले के अनुसार, 5 दाहिना हाथ, 6 उल्टा, 7 पूर्व ।

चौबीसवाँ रहस तसलीम नाम

दाहिना हाथ बालाए-पेशानी[1] रखकर आगे आएँ और उसी हाथ से ताल मे गुलदस्ता उठाएँ और पस्पा[2] होकर पाव से एक-दो, एक-दो निकालती हुई मुकामे सफ[3] पर आकर इस्तादा[4] हो और गुलदस्ते पेशानियो पर धरकर दस्तेचप[5] से दूसरे का बाजू पकडे और जजीराबदी करे और 'तसलीम नाचो सखी रे' गाती हुई आगे आये और हल्का बाधे यानी मुदव्विर हो और नाचे । मनबाद हाथ जोडकर यह गाती हुई पस्पा होकर जाए-मोमूल पर ताल मे एक-दो, एक-दो पाव से निकालती हुई जाएँ और फिर 'चिरजीव रहो जानेआलम' सुर मे कहे ।

पच्चीसवाँ रहस हूर नाम

बाजू से बाजू निकालकर गुलदस्ते हाथो मे कायम करके सिरो पर रखे और मुताबिक एहकामें बाला बजा लाएँ ।

छब्बीसवाँ रहस शमशाद नाम

दो सखियाँ मुकाबिल खडी होकर दस्तरास्त मयगुलदस्ता[6] बुलन्द करे और बाएँ हाथो के पजे से पजा मिलाकर आपस मे तानकर गाठ ले और एक-दो, एक-दो पाव से निकालती हुई घूमे और वादेरक्स[7] गुलदस्ते ताल मे रखकर मशरिक-रोया-रू-बरपुश्त[8] करके जाएँ और दुआए-मामूल[9] दें सुर मे ।

सत्ताईसवाँ रहस हुमायूँ नाम

दो सखियाँ मुकाबिल होकर दाहिने हाथो को मयगुलदस्ता पेशानियो पर रखे और बाएँ हाथो के पजो को आपस मे आमेख्ता[10] करे, ताने और मुताबिके हुक्म-बाला[11] अमल करे ।

---

1 माथे के ऊपर, 2 पीछे, 3 पंक्ति के स्थान पर, 4 एकत्रित हो, खडे हो, 5 बायाँ हाथ, 6 गुलदस्ता सहित, 7 नृत्य के बाद, 8 पश्चिम की ओर पीछे किए, 9 पुरानी दुआ "चिरजीव रहो जानेआलम", 10 मिलाकर, 11 ऊपर दिए गए हुक्म के अनुसार

अट्ठाइसवाँ रहस खन्दा नाम

दो सखियाँ मुकाबिल होकर अगुष्ताने कलमा[1] दस्तेरास्त[2] को जेरेलब[3] रखे और दस्त-हाएचप[4] मे आपस मे पजे से पजा गाँठे और मुताबिक[5] एहकामे मरकूमाबाला[6] बजा लाये ।

उन्तीसवाँ रहस बाअदब नाम

एक-दूसरे के बाजू से बाजू निकाल कर बालाएनाफ[7] दोनो हाथो से गुलदस्ते रखकर हल्का करके रक्स करे और मुताबिक एहकामे मरकूमाबाला रक्स हाय मुदब्बिर अमल करे ।

तीसवाँ रहस खूब नाम

दो सखियाँ मुकाबिल होकर दाहिने हाथ खुले हुए सीनो पर रखे और बाएँ हाथो को पजो से गाँठकर ताने और वक्ते रक्स[8] नजरे सीनो पर रखे और वक्तपसरूई[9] सीनो पर हाथ रखे जाएँ और मुताबिक एहकाम मरकूमाबाला बजा लाये ।

इकतीसवाँ रहस मुसफ्फी नाम

बाजू के अदर से बाजू निकालकर जजीरा करे और बाएँ हाथो को अपनी-अपनी नाफो पर खुला हुआ कफेचपीदा[10] धरे और दाहिने हाथो से गुलदस्ते सरो पर धरे और बगाली घूँघट निकाले रहे और सीने के ऊपर नजरे रखें । बादेरक्स[11] मुताबिक[12] एहकामे-मरकोमाबाला[13] बजा लाये ।

बत्तीसवाँ रहस मतलब नाम

बगाली घूंघट निकाले और दोनो हाथ पजे से पजे मिलाकर लटकाए रहे और बाहम[14] मिले रहे और बादेरक्स बतरीके एहकाम मरकोमाबाला अमल करे ।

---

1 तर्जनी, 2 दाहिना हाथ, 3 होठो के नीचे, 4 बाये हाथ, 5 अनुसार, 6 जैसा कि पहले कहा गया है, 7 नाभि पर, 8 नृत्य, 9 पीछे जाते समय, 10 हाथ का पजा, 11 नृत्य के बाद, 12 अनुसार, 13 पिछले हुक्म के, 14 नाभि के ऊपर ।

तैतीसवाँ रहस हमराज नाम

बाजू से बाजू निकालकर जजीरा करे और दाहिने हाथ की कलमे की उंगली ठोढी पर रखे और बायाँ हाथ मयगुलदस्ता बालाएनाफ[1] रखे और बादेरक्स[2] बतर्ज़ के एहकाम[3] मक्तूबे-बाला[4] बजा लाये ।

चौतीसवाँ रहस तोहफा नाम

बाजू के अदर से बाजू निकालकर जजीरा करे और दाहिने हाथ मयगुलदस्ता सिरो पर रखे और बाएँ हाथ खुली हुई नाफो पर धरे और बादेरक्स मुआफिक-अवामिर[5] मसतूराए-सुतूरबाला[6] बजा लाएँ ।

पैतीसवाँ रहस मनसुखी नाम

तीन सखियाँ पजे से पजा मिलाये । दो के चेहरे मुकाबिल[7] रहे, एक की पुश्त[8] हो । तीनो गुलदस्ता-बदस्त[9] हो और बादेरक्स[10] मुआफिक-अहवाल-मुहर्रिर बाला[11] बजा लाएँ ।

छत्तीसवाँ रहस माशूक नाम

बाजू से बाजू निकालकर जजीरा करे और कफेदस्तरास्त[12] कफेदस्तचप[13] पर धरकर बाला ए नाफ[14] रखे । बादे पाकोबी[15] मुताबिक हिदायत मरकूमाबाला[16] बजा लाएँ ।

फसल दूसरी राधा कन्हैया के दो तरह के किस्सो मे

पहला किस्सा राधा और कन्हैया के इज़हारे-हालात[17] और ताश्शुक[18] मे ।

---

1 नृत्य के बाद, 2 हुक्म के अनुसार, 3 पहले के, 4 पहले किए गए क्रत के अनुसार, 5 पूर्वोक्त आज्ञानुसार, 6 पक्ति मे खडी हुई नर्तकियाँ, 7 सामने, 8 पीठ, 9 गुलदस्ता लिए हुए, 10 नृत्य के बाद, 11 पहले किए गए क्रत के अनुसार, 12 दाहिने हाथ का पजा, 13 बाये हाथ का पजा, 14 नाभि पर, 15 नृत्य, 16. पूर्वोक्त निर्देशानुसार, 17 हालात के विषय मे, 18 इश्क ।

पहला किस्सा राधा और कन्हैया का

दो सखियाँ कारचोबी[1] पर लगाकर भारी जामाए-हुस्न[2] पहने । एक का नाम अरगवान परी, दूसरी का नाम जाफरान परी है । एक मर्द बशकल देव क्रियाए मजर बने, इसका नाम अफरियत है । एक सखी जोगन बने, इसका नाम सैहरा है और एक मर्द खादिम जोगन का बने, उसका नाम गुरबत है । बाद खत्म रहस सब सखियाँ बैठ जाएँ और एक जानिब दोनो परियाँ कुर्सियो पर बैठे और एक तरफ जोगन कुर्सी पर इजलास[3], करे और देव परियो के सामने गुर्ज[4] लिए हाथ बाधे खडा हो और गुरबत जोगन के सामने दस्तबस्ता[5] इस्तादा[6] हो और एक जानिब राधा कन्हैया बामुकुट[7] और नथ वगैरा लगाए हुए घूघट बगाली निकाले हुए कुर्सियो पर इजलास करे और रामचीरा दोनो की खिदमत मे दस्तबस्ता[8] हाजिर हो । चार सखियाँ एक नाम ललिता, दूसरी का साखा, तीसरी चीना, चौथी लडवा जीगा कलगी लगाए हुए झुरमुट किए हुए अलाहिदा खडी हो । चार पनिहारिन मसनवी[9] कुएँ से ठुमरी गाती हुई राकिम[10] की तसनीफ[11] पानी भरती हुई हो और एक मर्द मुसाफिर की सूरत बना हुआ मय गठरी और असाबदस्त[12] हाजिर हो । चार मक्खनवालियाँ होरी राकिम की तसनीफ गाती हुई और मक्खन निकालती हुई हो । जोगन को चाहिए गमजदा बैठना ।

सवाल गुरबत का और अर्ज सैहरा से ।

गुरबत— जुगजुग जियो आनन्द रहो जोगन साहब क्यो मुलूल[13] हो, काहे जिया मलीन है ।

सैहरा— (गुरबत से) चौबीस बरस हुए एक रज है ।

गुरबत— वो क्या रज है । हमसे कहने का हो तो कहिए ।

---

1 कारचोब एक लकडी का यन्त्र होता है जिस पर कपडा बाधकर कढाई की जाती है । उस कढाई को कारचोबी कहते है, 2 सुन्दर कपडे, 3 सभा, 4 गदा, 5 हत्था बाधकर, 6 खडे हो, 7 मुकुट सहित, 8 हाथ बाधकर, 9 बनावटी, 10 लेखक, 11 कृति, 12 लकडी लिए हुए, 13 दुखी ।

सेहरा— चौबीस बरस हुए महका इस गम मे कि राधा कन्हैया का नाच नही देखा ।

गुरबत— बस आपको इसी का गम है । जाता हूँ । तदबीर[1] करने को ।

गुरबत का तजस्सुस[2] करना । गुरबत चला और अफरियत से अलाहिदा[3] मुलाकात की और कहा—सलाम वालेकुम मियाँ अफरियत ।

अफरियत—वालेकुम अस सलामुसैन वल्लामुनताम वलकलाम अलकशमश वलबादाम मियाँ गुरबत अली खाँ बहादुर बहादुरान खटपट जगनामर्दी धबडचोद ।

फिर दोनो बगलगीर[4] हुए । अफरियत इस तरह से हुमा कॉव-कॉव, खिल-खिल-खिल ।

गुरबत— (अफरियत से) मियाँ अफरियत । हमारा-तुम्हारा मुद्दत से भाई-चारा है । हमको तुमसे एक अम्रे[5] जरूरी कहना है । अगर तुमसे हो सके ।

अफरियत—क्या काम है ?

गुरबत— एक जोगन है । उसको एक गम है ।

अफरियत—वह कौन सा गम है ।

गुरबत— जोगन साहिबा कहती है कि मुझे राधा-कन्हैया के नाच न देखने का गम है । मै वायदा कर आया हू कि कोशिश करता हूँ । अगर तुमसे हो सके तो मेरे वायदे को पूरा करो ।

अफरियत—तैनती मैनती दुम ख़बीशी लोटकलाटा झोटकझाटा सदूक मुअल्लक सुरा गाव की दुम और बच्चो की कसम जो मेरे किए बरामद मतलब होगा हरगिज दरेग न करूँगा । लो मै सई करता हूँ ।

बस उसी वक्त अफरियत गुरबत को हमराह लेकर रवाना हुआ और कहने लगा 'वाह-वाह सातूरबाजी, हम्मालबाजी, नैज़ाबाजी, खलालबाजी, शमशीरबाजी, रास्तबाजी चल मेरे साथ और ब-हुजूर जाफरानपरी और अरगवान परी हाजिर हो अर्ज की ।

---

1 यत्न, 2 चेष्टा, 3 अलग, 4 आलिगन, 5 काम ।

दोनो—एक जोगन राधा-कन्हैया का नाच देखने के गम मे जोगन हुई है और चाहती है कि वो नाच देखे ।

परियाँ— जोगन को ले आओ ।

अफरियत गुरबत के हमराह जोगन के पास आया और कहा ।

गुरबत— (सैहरा से) जोगन साहिबा चलो । परियो ने बुलाया है ।

जोगन साहिबा मय गुरबत और अफरियत परियो की खिदमत मे हाजिर हुई ।

अफरियत—(परियो से) जोगन हाजिर है ।

परी— बुला लाओ ।

जब जोगन आई तो दोनो परियाँ उठकर बगलगीर[1] हुई ।

परियाँ— (सैहरा से) क्या तुमको हुआ ? क्यो जोग लिया ?

सैहरा— चौबीस बरस से यह गम दामनगीर है कि किसी तरह से राधा-कन्हैया का नाच देखू ।

परियां— अरे अफरियत, राधा कन्हैया का नाच जोगन को दिखा दे ।

अफरियत—(चिल्लाकर) नही बे अफरियत ।

(राधा कन्हैया और सखियो पर) नाचो हिंडोले का नाच, नाचो हिन्डोले का नाच, नाचो हिन्डोले का नाच ।

उस वक्त सब सखियाँ बराबर इस्तादा[2] हो और एक सिरा दुपट्टे का कन्हैया थामे । दूसरा सिरा राधा जी बसते-सफ[3] मे थामे और वह हिडोला गाती जाये और एक-दो पाव के ताल मे लगाती जाय और सब सफ[4] के पिछले कदम और पसती पर रस्सी को ढीला किया करे । रहसवालियाँ रूपक ताल नाचे और तीन मर्तबा से कम आमदो-रफ्त[5] न करे और यह सावन फकीर[6] का बनाया हुआ गाती जाये ।

आस्ताई—सैया रे झकोरा दे गयो यह ऋतु सावन बहार,
सीस घूम गयो झूले प 'अख्तर' पेग बढाए ।

---

1 खडे, 2 एकत्र हो, 3 पक्ति के बीच, 4 पक्ति, 5 आना-जाना, 6 लेखक ।

सब सखियाँ, मुताबिक[1] राधा जी के करती जायें और कन्हैया जी पेशकदमी[2] पर मुका-बिल[3] राधा के होकर दुपट्टा खीच लिया करे और पसकदमी[4] पर ढील दिया करे।

आस्ताई—हिंडोला झूले श्यामा श्याम घने से घन
चलत पवन सन न न, स न न न, स न न न।

पहला अतरा– सब सखियाँ मिल पेंग बढाओ
लेके तान त न न न, त न न न, त न न न।

दूसरा अतरा—मोर मुकुट कर राख रध कुडर
पाएल बाजे झ न न न, झ न न न, झ न न न।

बाद इख्तिताम[5] हिंडोला सब सखिया राजा रामचन्द्र की जै कहे। मनबाद राधा कन्हैया मुकाबिल इस्तादा[6] हो और निसफ[7] सखियाँ कन्हैया की जानिब और आधी राधा की तरफ खडी होकर और राधा कन्हैया से सवाल और जवाब शुरू हो और अर्थ भाव होता जाए और अर्काने बहर[8] चक्करो मे दाहिनी जानिब[9] से दोनो के पाव से हर बैत[10] और हर दोहरे के बाद अदा होते जाएँ।

राधा—(अल मुसन्निफ[11]) मजमए गैर मे ऐसा सितम ईजाद किया
कातिला भूल के हमको न कभी याद किया।
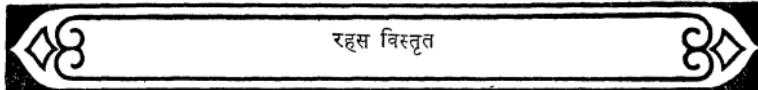
दोहरा— मै विरहिनी सजोग सग न कोउ साथ,
नारी छुवत बेद के फफला हो गए हाथ।

कन्हैया— (अल मुसन्निफ) नाम मेरा है कन्हैया मै तुझे जानता हूँ।
राधा जी जान से मै तुमको यहाँ मानता हूँ।

दोहरा— राधा जी अग पर बिंदिया इति छवि देत,
मानो फूली केतकी भोर बासन लेत।

राधा— (अल मुसन्निफ) मै तेरे इश्क मे दीवानी हुई ऐ काना,
मैने जी जान से तुझको तो यहा पहचाना।

---

1 अनुसार, 2. आगे बढने पर, 3. सामने, 4 पिछले कदमो, 5 समाप्ति के बाद, 6. स्थापित, 7. आधी, 8 पहले के अनुसार, 9 ओर, 10 शेर, 11 लेखक द्वारा।

दोहरा—आओ प्यारे मोहन पलक ढाक तोहे लेऊँ,
न मै देखू औरन को न तोहे देखन देऊँ ।

कन्हैया—(अल मुसन्निफ) इश्क मे तेरे राधा जी जगत-जगल छाना,
देवपरी ने मुझको कही नही पहचाना ।

राधा— मोर मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल,
इहि मानक मो मन बसे सदा बिहारी लाल ।

कन्हैया—राधा द्वारा दूर है जैसे पेड खजूर,
चढा तो चाखा प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर ।

दोहरा—साईं झरोखे बैठ के सबका मुजरा लेय,
जैसी जाकी चाकरी वैसा वाको देय ।

इस दोहरे के बाद कन्हैया हाजरीन[1] और नाजरीन[2] सबको जर-चाकरी[3] तकसीम[4] करे और सब हाथो मे ले सर से और आखो से लगाये और चूमे ।

राधा—नदी किनारे धुआँ उठे रे मै जानूँ कछु होय,
जाके कारन जोग रमाया, वह न जरत होय ।
मुँह मेहताब दा गुलाबी चश्मा दे हाथ विच सोडा दे हथकडियाँ,
दिल भी देखा परदेम भी जादा रहा दे वे खड कहडियाँ ।
खोल तबीबा पाटिया नैन मेडे अल्हडी घाव न पेड,
जेतू दर्द बरावन मेर बिछडे जानी मेर ।
तुम दाता दोऊ जग के तुम लग हमरी दौर
जैसे काग जहाज को सूझत ओर छोर ।
कान्हा तुम मत जानियो तुम बिछडन पीत गई,
जैसे बेल पोई की दिन-दिन होवत हरी ।
कागा सब तन खाईयो और चुन-चुन खाइयो मास,
दो नयनन मत खाइयो कि पिया मिलन की आस ।
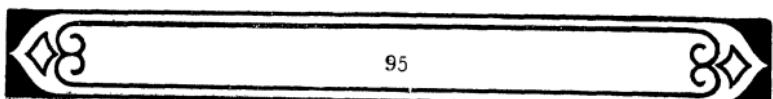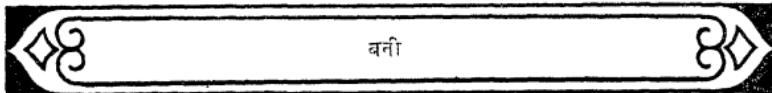
---

1 दर्शको, 2 सुननेवालो, 3 प्रसाद, 4 बाटे ।

बसी वाले मोहन हमरी ओर तो देख,
मै तोहे राखू नैनन मे काजर की सी रेख ।

कन्हैया--राधा काहे का दूर हो घर अगना न सुहाय,
ज्यो मेहदी के पातन माँ लाली लिखी न जाए ।

राधा— राजन के राज अधिराज जुग-जुग जियो
आनन्द रहो वो मुरली जामे छह राग छत्तीस
रागनियाँ बाजत थी वो मुरली कहा ये छोड आए, वही बजाओ ।

कन्हैया—(गोद फैलाकर) राजन की रानी अधिरानी महरानी कान्हा
सीस देत है जुग-जुग जियो आनन्द रहो ।
राम दुहाई वह मुरली खोय गई ।

राधा—महाराज मै तुमका खूब चीन्हत हू । तुम कुबरी को दे आय हो ।

यह कहकर राधा जी खफा हो गईं और रूठकर अलाहिदा[1] बैठ गईं । उस वक्त कन्हैया जी यह ठुमरी गाकर अर्थ भाव करने लगे और पाव पर गिरने लगे और हाथ बाधकर मनाने लगे—

आस्ताई—मेरी महारानी राधा रानी ।

अन्तरा—क्या मोसे कुछ चूक पडी,
मेरी रानी 'अख्तर' कदर न जानी ।

फिर मजबूर होकर कन्हैया जी रामचीरा अपने मुलाजिम[2] को पुकारें ।
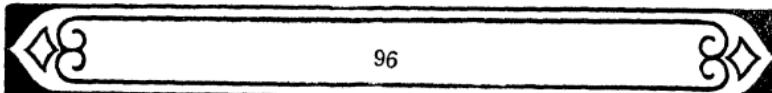
रामचीरा—हाजिर महाराज हाजिर (अर्ज रामचीरा) राजन के राज अधिराज महाराज
शिवप्रधान छत्रपति बताओ तो क्या हुआ ?

कन्हैया—राधिके खफा हो गईं । जानत है कि मै मुरली कुबरी को दे आया हू ।

रामचीरा—महाराज फिर मनाओ ।

इसी तरह तीन मर्तबा रामचीरा तलब हो और वह यही अर्ज करे । चौथी मर्तबा रामचीरा

---

1 अलग, 2. सेवक ।

अर्ज करे कि महाराज अब किसी सखी को बीच मे डाल कर सफाई कर लो। उस वक्त कन्हैया जी पुकारे, 'अरे ललिता!' ललिता जवाब दे—'आई महाराज' और ताल मे लहरो के साथ एक-दो, एक-दो, नाचती हुई हाजिर हो और बैठ जाये।

कन्हैया—ऐ ललिता। हमरी राधा हमसे नाही मानत है। क्या करूँ।

ललिता—विनती करो। नाक रगडो। पइया पडो। मूड घिसो। चिरौरी करो, जब तौ मनिहै।

कन्हैया—मैने सब जतन किया वो नाही मानत है और तेरे कहने से मै फिर मनाता हू।

दोबारा कन्हैया फिर मनाये और यह ठुमरी गाये और बतरीके अव्वल मिन्नत समाजत से अर्थभाव अदा करे—

आस्ताई—राधा जी मोहसे बोलो क्यो न रे ?

अन्तरा—क्या मोसे कुछ चूक पडी मोरी रानी
हँस-हँस घूँघट खोलो क्यो न रे ?

इसी तरह से चार दफा रामचीरा से शिकवा करे और बमुजिब अर्ज रामचीरा तीनो बाकी सखियो को भी उसी तरह ताल मे बुलाये और वो सखियाँ वही कलमाद-मरकोमाबाला[1] अर्ज करे। जब चौथी सखी के आने की बारी हो, उस वक्त कन्हैया जी यह ठुमरी गाएँ और आह-ओ जारी[2] व बेकरारी मिस्ल दफाते अव्वल अमल मे लाये।

आस्ताई—मेरी तो जीवन राधा।

अन्तरा—पैया परू मै तोरे ललिता, तोरे साखा, तोरे चीना,
तोरे लडवा ओके बिन देखे नहि चैन।

इस अतरा के गाने मे जिस सखी का नाम आए उसकी मिन्नत करे और पाव पर गिरे। फिर सब सखिया खडी हो जाए और राधा बैठी रहे। ताल सुर मे यह कहे—

सब सखियां—दे दी अता ता ता ता थई दै दी अता ता ता ता थई।

अन्तरा—थई, थई थई थई, दै दी अता ता ता ता थई दै दी अता ता ता ता थई।

---

1 पहले कहे गए कथन, 2 रोना।

कन्हैया—(उठ खडे हो और ताल-सुर मे कहे) राधा राधा राधा राधा
कुजगलिन मे राधा-राधा कुजभवन मे राधा-राधा ।
यह गाते हुए नाचते जाए और टुकडे-तोडे पाव से लेते जाए ।

उस वक्त रामचीरा अर्ज करे कि महाराज राधा को दाता से मागो और तपस्या करो शायद मिल जाये । उस वक्त कन्हैया जी आसन मारकर दाहिने हाथ से नाक पकडकर सास रोके । फौरन राधा जी उठकर गले से चिपट जाएँ । फिर सखिया लड्डू पूजा करे ।

लड्डू पूजा की तरकीब यह है—

कन्हैया जी गाल फुलाकर ऐसी आखे बनाये कि पुतलियो की हरकत न हो और बाए पाव के भल खडे हो । दाहिने पाव की एडी बाये पाव के घुटने पर रखे और चार सखिया दाहिने घुटने जमीन पर टेक के बाये पाव जमीन पर धरकर दोनो हाथो को मुदव्बिर करके गोल शक्ल पजो की मिस्ले निशान बताने लड्डू की गोलाई और दूर के मानिद बनाये और उन बने हुए हाथो को ताल से नचाती जाये और हरकत देती जाये । वक्ते गरदिशहाए दस्ती[1] हर मर्तबा लय-ताल मे कन्हैया जी के फूले हुए गालो पर गुचका यानी टहोका और जश्ब जैसा हलका घूँसा मारती रहे । मुट्ठी बाधकर देती जाये और यह अलफाज गाती जाये—

ले ले लाला लडवा ले ।

लड्डू पूजा के बाद सब सखिया बराबर इस्तादा[2] हो और यह दोहरा गाये ।

पहला तुक—एक नार ब्याकुल भई बरछी लगी जग वाके ।

दूसरा तुक—ऐ बिदाता[3] तू मोहे पख तो दे मै जाए करूँ दरसन पिया के ।

तीसरा तुक—समझाये सखिया मत सोक करो बिन ऊधो बूझे जमी पर वाके ।

चौथा तुक—और जो पखन ही से पीउ मिले तो या ले क्या पख नही चकवी चकवा के ।

जब सखिया चारो तुक गा चुके तो बराबर-बराबर बैठ जाये और कन्हैया जी खडे होकर यह दोहरा गाये—

1 हाथ को देते समय, 2 एकत्रित, 3 विधाता ।

कन्हैया—पहला तुक—मुरली हमरी खोय गई मथुरा-वृन्दावन की रेत ।
दूसरा तुक—ना मोहे सूझत ओर-छोर न मोहे सूझत खेत।

राधा—महाराजा जब ही खुश होगी जब मुरली ढूढकर ला दोगे ।

कन्हैया—अच्छा मुरली ढूढे ही लाता हू ।

फौरन कन्हैया जी उसी वक्त मुरली ढूँढते है । वे हरेक से यू दरयाफ्त करते है

कन्हैया—हमरी मुरली किसी ने देखी है ।

रामचीरा—(इजहारे-एन्फुगा[1] मे जवाब दे) हमरी मुरगी किसी ने देखी है ।

कन्हैयाजी उसे घूसा मार के और गर्दनी दे के वहाँ से निकाल दे और हँसकर कहे—

कन्हैया—हम मुरली ढूढत है कि मुरगी ।

रामचीरा—(दोबारा कहे)—महाराज तोहार मुरली के दो सीग भी है और दुम भी है ?

फिर बामुरी की तफह्-हुस[2] और तजस्सुम[3] मे मसरूफ[4] हो और कलमाए-अव्वल[5] कहे फिर रामचीरा कहे—

रामचीरा—हमारी भैस किसी ने देखी है—

फिर कन्हैया जो हरकत-मसूबून्कुल जिक्र[6] बजा लाये । इस दर्मियान मे चारो पनिहारिन चाह[7] ममनवी[8] से यह ठुमरी राकिम[9] की गा-गाकर पानी भरने लगे ।

आस्ताई—सब राह बाट मे ढूढ फिरी वृन्दावन मे हो सावरिया
जगल-जगल सुनसान भयो सुन पाई न वैसी बासुरिया ।

अतरा— पग धरत-धरत लट पलट गयो,
पनघटवा घाघर उलट गयो,
कर पकरत कगन उचट गयो,
चल छाँड दे अख्तर बागरिया ।

---

1 दर्द दिखाने के लिए (मजाक उडाने वाले भाव मे) 2 तलाश, 3 बेचैनी, 4 व्यस्त, 5 पहले वाक्यानुसार, 6 पहले कहे गए कथन, 7 कुआँ, 8. बनावटी, 9 लेखक ।

उसी वक्त एक मुसाफिर का दाखला। कन्हैया जी लाचार होकर मुसाफिर से पूँछे—

कन्हैया—मिया मुसाफिर कहाँ से आते हो।

मुसाफिर—मथुरा-वृन्दावन से आवत हू।

कन्हैया—हमरी मुरली भी किसी के पास देखी है।

मुसाफिर—हाँ देखी है। वो चार पनिहारिने कुएँ पर पानी भर रही है। उनमे जो एक गोरी ठुमकी नाटी-नाटी सी है वही लेन है। माँग लेओ।

कन्हैया जी चारो पनिहारिनो से ब-मिन्नत हाथ बाँध-बाँधकर कहने लगे—

कन्हैया—हम तुम्हे लड्डू खिलाएँगे। हमरी मुरली दे दो।

पनिहारिने—जाओ-जाओ, हटो-हटो। यहा मुरली नही है।

कन्हैया जी हरेक की मिन्नत और समाजत करे और वे चारो बारी-बारी हल्के-हल्के गुलचे यानी घूसे कन्हैया जी के गालो पर लगाएँ और धक्के दे-दे के हटा दिया करें। आखीर मे कहे—

पनिहारिनें—राजन के राज महाराज अधिराज शिव प्रधान जुग-जुग जियो आनन्द रहो, ताजा-ताजा माखन ला दो तो हम मुरली दे दे।

कन्हैया जी माखन लाने का इकरार करके उसके तजस्सुख[1] मे रवा-दवा[2] हो और चारो पनिहारिने कुएँ पर वही ठुमरी गाती रहे। कन्हैया जी माखन की तलाश मे माखनवालियो के पास जाये—

कन्हैया—जुग-जुग जियो आनन्द रहो थोडा सा माखन दो।

माखनवालियाँ सीनी पर मटकी धरे मथानी से दही मथती जाये और यह होली तसनीफ[3] राकिम[4] गाती जायें—

आस्ताई—ऐ देई मे माखन बेचन जात।

अंतरा—ना लो कान्हा तुम माखन मोरा बेचू 'अख्तर' हाथ।

---

1 पीने के लिए, 2 चल दे, 3 कृति, 4 लेखक।

जब कन्हैया जी माखन तलब करे तो माखनवालियाँ उसी होली का अतरा गा दिया करे। आखिर एक माखन की सीनी माखनवालियो की आँखे बचाकर चुरा लाये और पनि-हारिनो को दे और उनसे मुरली ले और बजाएँ। राधा जी मुरली की आवाज सुनते ही दौडकर कन्हैया जी के गले से चिपट जाये और बदिल राजी हो जाये।

राधा —महाराज का बोलबाला रहे, अब मोर मन खुस भया। तुम गद्दी पर बिराजो, मै तुम्हरे आगे गावत-नाचत हू।

उसी वक्त साजिन्दो के बीच मे जाकर यह ठुमरी गाये और खूब दिल से अर्थ भाव मुख प्लास समेत अदा करे—

आस्ताई—बजन लागी स्याम की बासुरी रे।

अंतरा —नदिया किनारे अख्तर बॉसुरी बजावत।
निकल जात जिया से सासरी रे।

किस्सा खत्म हुआ। अगर शब्बेदारी मजूर हो तो हर हर सखी अलाहिदा अलाहिदा नाच-नाच और गा-गा के रात काट सकती है। मगर ये किस्से और रहस वक्ते शब मुजइयब और बेहतर मालूम होते है। दिन को अच्छे नही लगते। उस वास्ते इस किस्से और रहसो की कैफियत देखे वक्ते शब आरास्ता करे। अल्लाह तौफीक दे।

तफसील पोशाक कन्हैया जी

1 घुटन्ना मय जाघिया
2 घाघरा
3 गुलूबन्द कारचोबी
4 मुकुट कारचोबी
चार अदद हो।

तफसील पोशाक की और राधा जी के जेवर की

1 नथ
2. वीना

3 तमाम हिन्दुस्तानी जेवर
4 पहरिया
5 लहगा
6. पेशबाज
7 बुन्दे यानी सरासरी
8 नुकरई बाँसुरी मय मुरली

आठ अदद हुए ।

सखियो की पोशाक

1 जीगा
2 कलगी
3 सुलतानबद
4. जुमला जेवर
5 पेशबाज
6. दुपट्‌टा
7 पायजामा

सात अदद हुए ।

परियों की पोशाक

1 कारचोबी दुपट्टा
2 जामाए हुस्न पुरजर
3 पायजामा पुरजर
4 जुमला जेवर

मुताबिक लियाकत चार जरूरतें हुई ।

देव की पोशाक

1. जाकेट सियाह्
2 पतलून सियाह्

3 दास्ताने सियाह
4. मोजा (यानी जुर्राब) सियाह
5 चेहरा मुकव्वह
6 गुर्ज चोबी सियाह
7 परकला कागजी
सात अदद हुए ।

जोगन की पोशाक

1 तहमतपारचा शानजरफी
2 कफनी
3 जटाकलाँ मसनवी
4 साप कपडे का कलाँ
5 झोली पारचा
6 तोम्बा
7 बैरागी चोबी
8 भभूत
आठ चीजे हुईं ।

आलातब पोशाक माखनवालियो की

1—साडी
2—मटकी
3—बिरजी गिलट नुकरई सीनी बिरजी गिलट नुकरई
4—मथानी चोबी
5—खुरिया गिलट नुकरई
6—कुलिही गिलट नुकरई
7—जेवर हिन्दुस्तानी
हस्बेलियाकत साहबेकिस्सा सात चीज़े हुईं ।

पोशाक और जेवर पनिहारिनो के

1—साडी

2—घडा मिस्सी

3—डोल

4—रेशम

5—चाह मसनवी मय गरारी

6—जेवर

हस्बेलियाकत बानिए किस्सा छह चीजे हुईं ।

पोशाक मुसाफ़िर की

1—अगरखा

2—पायजामा

3—पगडी

4—गठरी

5—लाठी

6—लोटा

7—तोशा

8—बस्तादरी खुर्द

आठ अदद हुए ।

पोशाक गुरबत

1—अगरखा

2—पायजामा

3—चपकन सफेद

4—कमरबन्द

5—दस्तार सफेद

पाँच अदद हुए ।

पोशाक रामचीरा

1—धोती
2—मिरजाई
3—फेटा
4—जनेऊ
5—कडादस्त नुकरा
6—अगौछा

छह् अदद हुए ।

रहसवालियो की पोशाक
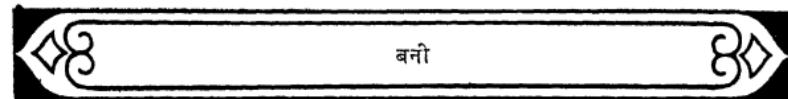
1—पायजामा पुरजर
2—पेशवाज मसालेह्दार पुरजर
3—दुपट्टा पुरजर
4—जेवर

हस्बे लियाकत तमबबुले बानिए जलसा चार चीजे हुईं ।

दूसरा क़िस्सा राधा और कन्हैया का

इस किस्से मे बारह् रहसवालियो से कम न हो और सबकी पोशाक और जेवर मिस्ल[1] तफसील[2] मरकूमा-बाला[3] हो । पॉच सखियाँ बनें मिसले पोशाक और जेवरात मरकूमा-बाला ललिता, चैना, साख, लडवा, कुबडी और रह्सवालिया गारा भी बनें । कन्हैया मिसल पोशाक और राधा अल-हाजल कयास[4] और रामचीरा मुताबिक नकशा मरकूमाबाला[5] और खमटी-वालिया साडिया और ज़ेवर बगाली पह्नकर दो इस्म[6] बनें । एक रामचीरा मुलाजिम[7] कन्हैया

---

1 समान, 2 विवरण, 3 पूर्वोक्त अनुसार, 4 क्रमागत, 5 पूर्वोक्तानुसार, 6 नग, 7 सेवक ।

मुताबिक[1] नक्शा-ए-अव्वल और लोधी धोती बाँधे हुए मिर्जाई पहने हुए हाथ की बधी हुई पगडी, लाठी हाथ मे, जनेऊ पहने हुए, अगौछा लिए हो । रहसवालियाँ सफ[2] बाँधकर-खडी हो और बाया हाथ बाएँ पहलुओ[3] पर अपनी-अपनी मुट्ठियाँ बाँध-बाँधकर करे । दाहिने हाथो की कलमे[4] की अगुलिया होठो के नीचे रखकर दाहिने बाएँ घूमती हुई आगे आवे और 'ता थई थई तत थई थई तत' लहरो के साथ नाचती जाएँ । कन्हैया एक साफा सर पर रखकर और लकडी हाथ मे गायो के मुकाबिल[5] खडे हो । वे यू गायो को बुलाएँ—'दुर दुर दुर, आओ आओ आओ, ऐसी आओ, ऐसी आओ, ऐसी आओ ।' जब गाये करीब आया करे, कन्हैया जी देखकर और लकडी हिला दिया,करे । इसी तरह तीन मरतबा बुलाएँ और हाके और सब गाये बुलाने के वक्त चली आया करे और हाकने पर चली जाया करे ।

चौथी मरतबा कन्हैया जी कहे—'ठाड रहो बजरदास कलमी की ।' एक गाय वही ठहर जाए । राधा जी कुर्सी पर से उठकर कन्हैया जी के मुकाबिल हो और यह सवाल करे ।

राधा—अस मईयो, अस मईयो अस कलेजा दैहो ।

तसनीफे-राकिम[6] मुनासिब[7] है । इस कलमे के साथ राधा जी कन्हैया जी के दोनो गालो पर हल्के-हल्के घूँसे लगाती जाएँ । फिर सवाल राधा का मशमूला[8] सवाले अव्वल–

राधा—जयना के हेरे तेरे गवइय्ये चरावत हो महाराज राजन के राज अधिराज शिव-प्रधान, वह मुरली जाये मे छह राग छत्तीस रागिनियाँ बाजत है । वह मुरली क्या की, क्यो गवय्ये चरावत हो ।
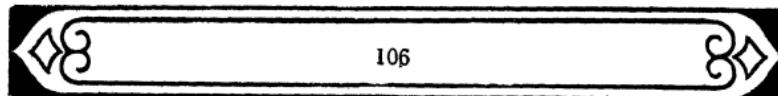
उस वक्त कन्हैया जी हाथ बांधकर गोद फैलाकर कहे ।

कन्हैया—कान्हा असीस देत है । जुग जुग जियो आनन्द रहो राम दोहाई वह मुरली खोय गई ।

राधा – राजन के राज महाराज अधिराज शिवप्रधान मै तुमका खूब चीन्हत हू कूबरी को दै आये हो ।

कन्हैया—नही महारानी भगवान कसम खोय गई ।

---

1. अनुसार, 2. पक्ति, 3 कमर, 4 पहली, 5 सामने, 6 लेखक की कृति, 7 ठीक, 8 सम्मिलित ।

कन्हैया का खडे होकर दोहरा पढना और गाना। कन्हैया उसी वक्त वह दोहरा जबान पर लाये—

कन्हैया—मुरली हमारी खोय गई मथुरा वृन्दावन की रेत
ना मोहे सूझत और छोर न मोहे सूझत खेत।

दोहरा गाने के बाद कन्हैया जी लकडी काधे पर रखकर ताल मे सारी महफिल मे तीन गर्दिश करे। चौथी गर्दिश मे रामचीरा अर्ज करे—

रामचीरा—महाराज, बासुरी का चोर एक लोधी है, उसको मै पकड लाया हू।

कन्हैया—हाजिर कर।

जब वो सामने आये तो कन्हैया फरमाएँ।

कन्हैया—इसी ने हमारी मुरली चुराई है ?

रामचीरा—हाँ महाराज—

फिर कन्हैया जी तपस्या करे। राधा जी फौरन बजरूरत तपस्या कुर्सी पर से उठकर कन्हैया जी के गले से चिमट जाये। मनबाद कन्हैया जी राधा जी से कहे—

कन्हैया—राजन् की राज महारानी अधिरानी जुग जुग जियो आनन्द रहो कान्हा असीस देत है वो मुरली जिसे तुम चीन्हत थी कि कुबरी को दै आया हू—वह मिली।

राधा—महाराज किसने चुरायी थी।
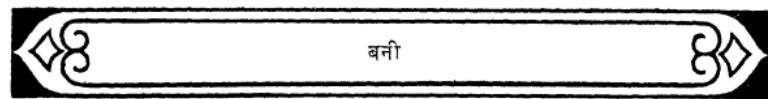
कन्हैया—महारानी। यह लोधी का छोकरा जो खडा है—इसी दाढीजार ने चुरायी थी।

राधा—महाराज ! इस मुए की नाक कटवा डालूँ।

अलमुख्तसर[1] बामुजिब[2] हुक्म कन्हैया उसकी नाक तराश डाली गयी और राधा जी ने कहा—

राधा—अब मोर मन खुस और राजी भवा।

---

1 सक्षेप मे, 2 अनुसार।

कहने को राधा जी खुश हो गयीं मगर बाकेयतन[1] सौतापे की झत[2] से कुबरी बहुत खलिश[3] रखती थी। जाहिरा[4] कन्हैया जी उसके पास जाने से इन्कार करते थे मगर वाकेयतन कुबरी पर हजार जान से फरेफ्ता[5] थे।

खडा होना कन्हैया जी, राधा जी, सभी सखियो और रहसवालियो का दो सफ बनकर और अशार[6] आशिकाना पढना।

कन्हैया जी राधा जी के मुकाबिल[7] खडे हो और चार-चार सखियाँ दोनो तरफ मुकाबिल मे हो। पहले कन्हैया जी यह मतला[8] पढे और गाएँ और राधा जी की तरफ अर्थभाव बताये—

मतला—सताया दिल न किसी का सताया जाएगा,
यह दिल जो रूठेगा क्योकर मनाया जाएगा।

इस तख्ती पर रक्स करते जाएँ मफाएलुन-फायलतुन फिर मफायलन-फायलन[9]।

राधा जी—एक दिल हमने दिया,
तुमने वो बर्बाद किया।
एक तुमने दिया,
हमने खुदा को याद किया।

इस तख्ती पर राधा जी रक्स करे।
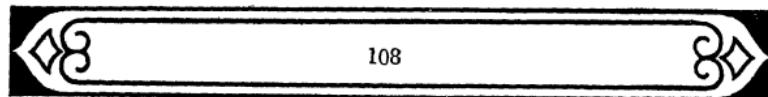
फायलतन फायलतन फायलतन फायलन[10]

सवाल और जवाब के बाद सब रहसवालियाँ-मय राधा-कन्हैया बैठ जाएँ। चूकि राधा जी बेसबब अदावत[11] रकाबत[12] कुबडी से रखती थीं, बेताबाना[13] कन्हैया जी से यह सवाल करे—

राधा—महाराज रोज झगडा नाचते हो तुम जरूर कुबडी के पास जाया करते हो।

कन्हैया—भगवान कसम हम नाही जात।

---

1 वास्तव मे, 2 गुस्सा, क्रोध, 3 जलना, 4 प्रत्यक्ष रूप मे, 5. न्योछावर, 6 शेर का बहुवचन, 7 सामने, 8 पहला शेर, दो पत्तियो के दोहे को उर्दू के शेर कहते है, 9-10 उर्दू शायरी मे पाईया गिनने की व्याकरण, 11 दुश्मनी, 12 प्रेम मे शत्रुता, 13—शीघ्रता से।

राधा—महाराज । पकड दूँ तो सही ।

कन्हैया—कबहू न पइयो ।

उठ जाना कन्हैया का राधा के पास से आपस मे शकरजी जो वाकेय हुई, कन्हैया जी फौरन राधा के पास से उठकर कहने लगे ।

कन्हैया—मुझे किसी काम की जरूरत लाहक है थोडी देर मे आऊँगा ।

राधा जी ने कन्हैया जी का रोकना मुनासिब न जाना मगर दिल मे समझी कुछ दाल मे काला नजर आता है यह तो तीरे-खुरदा[1] कमाने अबरू-ए-कुबडी[2] थे । फौरन उसके पास पहुचे । इधर फरते-ताश्शुक[3] मे राधा जी ने यह ठुमरी शुरू की और अर्थ भाव बता-बताकर लय सुर मे इस तरह गाई कि बहशीयाने-सहरा[4] और माहियाने-दरया[5] के दिल कबाब हुए और जिन व इन्स व देव व परी को पेच ओ ताब हुए ।

आस्ताई—मोहन स्याम हमारा रे कूबरी ने जादू डाला रे ।

अन्तरा—घूंघट खोलो मुख से बोलो अख्तर नजो निदा गुजारा रे ।

गाने के गाद गमजदा होकर बैठे । चारो सखियो से मुखातिब होकर कहा—

राधा—कोई ऐसी है जो हमरे कन्हैया को कुबरी के पास से पकड लाए ?

एक-एक ने अर्ज की—

एक—राजन की राज महारानी अधिरानी मलीन न हो मोहसे कहो ।

राधा जी ने हर एक को यही जवाब दिया—

राधा—तोह से न कहियृ बैठ जा ।

बमुजिब इरशाद चारो सखियाँ बैठ गयी । दोबारा राधा जी ने चारो सखियो से कहा—

राधा — तुम चारो जो मेरे पीछे पडी हो तुमसे हो सकता है कि कन्हैया जी को कुबरी के पास से पकड लाओ ?

---

1 चोट खाए हुए, 2 कुबडी की कमान जैसी आखो के, 3 इश्क के गुस्से, 4 रेगिस्तानी जानवर, 5 पानी के जानवर ।

उस वक्त सब सखियाँ दस्त बदस्ता खडी हो जाये । ललिता आगे आए ।

ललिता—परमेमुर तुम्हारा भला करे । अगर कन्हैया जी अकास पर होगे वहाँ से भी ढूंढ लाऊँगी ?

साख—अगर धरती पर होगे हाजिर करूँगी ।

चैन—अगर जल मे होगे वहाँ से लाऊँगी ।

लड़वा—अगर पवन मे होगे पैदा करूँगी ।

फिर चारो सखिया कन्हैया जी की तलाश मे निकले और राधा जी को दुआएँ दे देकर और सलाम कर करके रवाना होए । चारो उस वक्त कुबरी के मकान पर पहुची जिस वक्त कन्हैया जी मखमली स्थान पर बासुरी होठो से लगाए कुबरी की गोद मे पाव रखे हुए तकिया पहलू मे लिए मुकुट उतारे हुए घुमटीवालियो का नाच देखते-देखते सो गए थे और कुवरी भी मुक्के लगाते लगाते पाव पर महाराज के ऊँघ गई थी । इस मुकाम पर घुमटीवालिया साडिया बाध-बाध के बगाली जेवर आरास्ता कर करके घुमटा नाचती जाएँ और तीन बार आमदोरफ्त करे और यह दादरा गाएँ—

आस्ताई—आजा निंदिया मोरे बलम को ।

अन्तरा—दुख न हो सपने मे 'अख्तर' मौला रखे तेरे धरम को ।

और फिर यह ठुमरी अर्थ भाव करके गाएँ—

आस्ताई—धमक सुन नीद चौक पड़ी रे ।

अन्तरा—उचट गई नीद कौन आई रसिया ।

इस असना[1] मे कुबरी कहे—'घुमटीवालियो जाओ मेरे कान्हा की आख लग गयी है ।' यह सुनकर घुमटीवालिया चली जाये और कुबरी भी उसी तरह ऊँघ जाये । ये चारो सखिया कन्हैया जी को सोता हुआ देखकर आपस मे एक-एक से कहे—

एक—ए गुईया देखो कैसा पडा सोता है ।

दूसरी—मुंआ बेखबर है ।

---

1 बीच ।

तीसरी—जरा होश नही ।

चौथी—बहुत गाफिल है ।

ललिता—तुम तीनो ठहरो, मै उठाऊँगी ।

साखा—तुम तीनो ठहरो मै जगाऊँगी ।

चैन—तुम तीनो ठहरो मै शाना हिलाऊँगी ।

लड़वा—तुम तीनो टहरो मै कान्हा जी के दोनो कान पकडकर उठा बिठाऊँगी ।

अलगरज लडवा सखी कन्हैया जी के दोनो कान पकडकर उठा बिठाए। फौरन कुबडी भी चौक पडे और दमे-सर्द भरकर कहे—

कुबड़ी—है है लडवा तूने मुझसे दगा की ।

लड़वा—ये कलमा राधा जी के सामने कहना ।

लडवा सखी कन्हैया जी के दोनो कान पकडे हुए मय कुबडी बहपित मजमुई राधा जी के सामने लाए ।

राधा—क्यो जी तुम्हारी चोरी पकडी गई कि नही ? तुमको ढूँढकर पकड बुलवाया कि नही ?

कन्हैया—(हाथ बाधकर) हा महारानी चूक पडी, भूल हुई, मिल जाओ, यह तो मुरली की आवाज़ की आशिक थी ।

राधा—मुरली बजाओ, मिल गई ?

कन्हैया—ने बासुरी मे ये बजाया—

आस्ताई—बजन लागी स्याम की बासुरी रे ।

अन्तरा—नदिया किनारे अख्तर बासुरी बजावत
निकस जात जिया से सास रे ।

राधा—हम तुमको हिन्डोला झुलाकर फिर सुला दे ।

कन्हैया—अच्छा महारानी, मेरी नीद भी अभी नही भरी थी ।

अब सब रहसवालिया और सखिया और राधा-कन्हैया खडे हो जाये सफ बाधकर, पर दरम्याने सफ मे कन्हैया जी हो और कन्हैया जी के मुकाबिल राधा जी एक लम्बी रगीन पगडी की रस्सी बनाकर एक सिरा अपने दस्त रास्त मे पकडकर दूसरा सिरा कन्हैया जी के दाहिने हाथ मे देकर सफ की पेशकदमी पर रस्सी को खीचा करे और सफ के पिछले कदम और पसरवी पर रस्सी को ढीला किया करे। रहसवालियाँ रूपक ताल नाचें और तीन मरतबा से कम आमदोरफ्त[1] न करे और यह सावन फकीर[2] का बनाया हुआ गाती जाये–

आस्ताई–सैंया दे झकोरा दे गयो ये रुत सावन बहार।
सीस घूम गयो झूले पर अख्तर पेंग बडहार॥

बेहमदोलिल्लाह दूसरा किस्सा भी राधा कन्हैया का तमाम हुआ। अगर शब-बेदारी[3] को दिल चाहे बाद इख्तेताम[4] इखितयार[5] बाकी है जिस सखी को मिजाज[6] चाहे तमाम[7] शब[8] बदल-बदल कर नाच-गाना मुलाहिजा[9] फरमाएँ और मुसन्निफ[10] को बदुआए-खैर[11] याद करे।

मतला–नविशता बे मानद सियाह बर सफेद।
नवीसीदाहरा नीस्त फरदा उमेद॥

अल मतला कि ता० 1292 हिजरी मुकाम कलकत्ता मोहल्ला मटियाबुर्ज मे ये दोनो किस्से अलग-अलग छत्तीस रहसो के तैयार और मुरत्तब है। अलबत्ता मुकद्दमाते ऊला[12] और जेवर मे राक़िम से इस क़द्र मोहय्या न हो सका जो तकमील करता। जमाने सलतनत और इसतेकलाल[13] मे सब कुछ खुदा ने अता किया था और अब भी उसी की ज़ात से उम्मीद है।

फकत।

---

1 आना-जाना, 2 लेखक, 3 सारी रात जागने को, 4 समाप्ति पर, 5 अधिकार 6. मन, तबियत, 7 सारी, 8 देखें, 10 लेखक, 11 अच्छी दुआ, 12 उपरोक्त प्रस्तावना, 13 आराम के समय।

पांचवां अध्याय

लखनऊ और अवध के नवाबी और शाही दौर की मिली-जुली सस्कृति, गगा-जमुनी तहजीब मे मनोरजन का भी एक माहौल था। भाड और नक्काल, भगतिय और बहरूपये उस समय के ख्याति-प्राप्त कलाकार थे। अवध के शाही दरबारो मे इन कलाकारो को सरक्षण प्राप्त था।

आसिफुद्दौला के समय से इन कलाओ को प्रोत्साहन मिला और वाजिद अली शाह के समय मे ये कलाएँ अपनी चरम सीमा को पहुच चुकी थी। इन कलाओ मे सबसे अधिक प्रचलित कला नकल और भडैती थी।

प्रस्तुत अध्याय मे नौ फसले अर्थात् भाग है। पहली फसल मे भडैती और दूसरी तथा तीसरी मे नकले हैं। लेखक ने इन सारी नकलो का स्तर काफी ऊचा रखा है। इन सभी नकलो

मे लय-धुन के साथ गाने के लिए आस्ताई और अन्तरे मौजूद है । चौथी फसल मे बगाली भाडो की नकले हे तथा पाचवी मे विभिन्न प्रकार की स्तरीय नकले दी गई है ।

एक स्थान पर मुशायरे की नकल भी दी गयी है जो अत्यधिक साहित्यिक, उच्चस्तरीय तथा प्रस्तुति मे दुर्लभप्राय है । इससे उस समय की नकल-कला के स्तर तथा साधारण आदमी की भी साहित्यिक समझ का अन्दाजा होता है ।

प्रस्तुत की गई नकले उस समय की लखनवी तहजीब का आइना है । इसमे मौलवी की भी है, ब्राह्मण का भी, नाई की भी है, और मेहतर-मेहतरानी की भी । हिन्दी भी है, उर्दू भी और बगाली व फारसी भी ।

सातवी फसल मे कुछ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक नकले मिलती है तो आठवी तथा नवी फसल मे बच्चो के लिये पहेलियो, हास्य-व्यग्य और बच्चो के कुछ खेल भी दिये हुए है जो आज भी लखनऊ के पुराने घरानो मे बच्चो मे प्रचलित है । इस अध्याय की छठी फसल अपना एक विशेष महत्व रखती है । कलकत्ते मे रहते-रहते लेखक ने कुछ घटनाएँ अपनी आखो से देखी थी ऐसी घटनाएँ जो प्राय होती रहती है । उदाहरणत किसी स्त्री का किसी जानवर से सम्बध, किसी बूढे की अतृप्त यौन पिपासा आदि । इन घटनाओ को लेखक ने ज्यो का त्यो लिख दिया है । इससे लेखक की सत्यता का पता चलता है पर अश्लील होने के कारण उसे इस पुस्तक मे सम्मिलित नही किया जा सकता । अत इन्हे छोड दिया गया है ।

लेखक ने अपने पूरे जीवन मे लगभग सौ पुस्तके लिखी जिनमे से कुछ लखनऊ मे और कुछ कलकत्ते मे है । इनमे से छियालीस पुस्तको की सूची इस अध्याय मे प्रस्तुत की गयी है ।

बाब पांचवां यानी अध्याय पांच

भड़ैती और नकले मजहक मे

भडैती और मजहक नकलो के सिलसिले के इस बाक मे नौ फसले है ।

जानना चाहिए कि मूजिद[1] भडैती और जुमला-हिकायात[2] और लतायफ[3] और नकलो के अमीर खुसरो देहलवी है ।[4] यह शख्स अक्सर फनून[5] मे ऐसी महरते-कामिल[6] रखता था कि हर साहबे-फन उसको हजरत अमीर खुसरो कहके याद किया करता है । फाजिल[7] बेबदल[8] नस्सार[9] खुश-अमल[10] निजाम[11] ऐसा कि कलाम उसका तश्त-अजबाम[12] है । फने-मौसीकी[13] मे वो-वो ईजाद किए कि चतुरग, त्रिखट, तराना के बदले जो बतरीक[14] हिन्दवी मुश्तमिल[15] है, कौल-कबाना नक्शेगुल[16] बनाए । सभी को निहायत[17] पसद आए । तालो मे हिन्दी पोथियो की तालो मे भी दस्तअदाजी[18] की । जल्द तिताला, धीमा तिताला, चौताला, आडा चौताला, सूल-फाख्ता, रूपक, ब्रह्मलक्ष्मी, तीबरा, पटताल, कोकिला के एवज मे सवारी, झूमरी, फिरोदस्त, खम्सा, दोबहर ईजाद की । अलहक[19] एक-एक जरब और उसके खालियो और झूलो मे मिसरी की डलिया कूट-कूट कर भर-भर दी । ध्रुवपदो के बदले ख्यालो की बिना[20] डाली । शौकीनो की उमग तानो मे खूब अच्छी तरह से निकाली । अल्लाहुम्मा-अगफरना चुनाचे[21] भाड और नक्काल और भगतिए भी उन्ही का दम भरते है । हर महफिल और मजलिस मे बेनन्देह[22] और शोनन्देह[23] को महजूज[24] करते है । सिलसिला भडैती का यही है । खुसरो मजकूर[25] अज-बसके[26] मर्देजरीफ[27] था । शहजादगाने देहली कमसिन जो दाखिले मकतब[28] न होते थे अक्सर उनकी छोछगिरी[29] भी उनके हवाले रहती थी और शहजादे जब कोई जिद या हठ करते थे ला-मुहाला[30] ये उनके बहलाने की तरफ मुतवज्जेह[31] रहा करते थे, बल्कि खालिकेबारी[32] एक

---

1 अन्वेषक पितामह, 2 कुल निर्देश, 3 हास्य, 4 अमीर खुसरो के लिए लेखक द्वारा कही गई बाते सुनी-सुनाई मालूम होती है, 5. कलाओ, 6 सम्पूर्ण महारथ, 7 विद्वान्, 8 अद्वितीय, 9 गद्य कहनेवाला, 10. सुकर्मी, 11 प्रबन्ध जात करने का अन्दाज, 12 मोहक, 13 सगीतकला, 14 अनुसार, 15 आधारित, 16 नाम गायकी, 17 अत्यधिक, 18 हाथ चलाना, नई खोज, 19 वास्तव मे, 20 बुनियाद, 21 इसलिये, 22 हर जन, 23 सरकार, 24 प्रसन्न, 25. स्वय, 26 हालाकि, 27 अच्छा मानव, 28 स्कूल, 29 बहलाना, 30 मजबूर होकर, 31 ध्यान देते, 32 अमीर खुसरो ।

शहजादे को बहलाते-बहलाते मौजूँ[1] कर दे और अक्सर उनके सामने आस्तीने चढाकर और उतारकर गाल फुलाकर अल्फाजहाम-मामूली[2] से, जो भड़ैती मे बयान करूँगा, मस्खरापन कर-करके बहलाते थे। उसका इस्तेमाल जो औरो ने किया, निहायत मजहक मालूम हुआ, बल्कि वो फिरका भाड और नक्काल मशहूर हुआ। हरचन्द इस फिरके को सिवाए नक्ल को अस्ल करके दिखाने के, लय-सुर मे मुतलक तमीज नही होती थी। मगर अलबत्ता जो काम उनका है यानी नकलनुमा-लय वह उन्ही पर खत्म है और इस फिरके को राकिम[3] ने बचश्मेखुद[4] देखा कि ऐसे पाबन्दे सौम-ओ-सलात होते है कि सुबहान-अल्लाह। हजार रुपये की थैली सामने रख दो और फरमाइश करो कि नमाज फौत होने दो अगर नकल किए जाओगे तो हजार रुपया यह तुम्हारा कभी कबूल न करेगे पर नमाज वक्त पर बजा लायेगे। बस दिल्लगी के वास्ते मैने भी दो भड़ैतियाँ और चन्द नकले उन लोगो की दर्ज किताब की। बामुजिब-इसके[5] कि 'इल्मशय बा-अज-जहलेशम'[6] मशहूर है।

फसल पहली भड़ैतियों मे

पहली भड़ैती

पगडी हाथ की लिपटी हुई सर पर, दुपट्टा कमर मे, अगरखा पहने हुए ढीले आस्तीनो का, नक्काल आगे आए और कहे चुप। बाद उसके आस्तीने अगरखे की दोनो हाथो से समेटता हुआ और चढाता हुआ और उतारता हुआ और दोनो पाव आगे-पीछे धरता हुआ इस तरह कि सुकून न हो यह अल्फाज कहे कि—

छोटी सी ढोलकी और छोटा सा भाड,
फूट गयी ढोलकी और छूट गया साड।
आही रे, आही रे, आही रे, आही रे।

दूसरी भड़ैती

सारी सूरत बशक्ले अव्वल बनाकर यह अल्फाज कहे—

---

1 खामोश, 2 आम शब्दो से, 3 लेखक, 4 अपनी आँखो से, 5 इसके अनुसार, 6 यह विषय एक अशिक्षित विषय सा प्रसिद्ध है।

पहले थी मै भोली-भाली काढती कशीदा,
कोठे पर से कूद पडी तू देख मेरा दीदा।

इमे कहता हुआ मुतवातिर[1] दाहिना पाव आगे बढाता जाए और बाया पाव पीछे हटाता जाए और यूँ ही ताखत्मे-अल्फाज[2] मुतहर्रिक[3] रहे।

जब लब्ज 'तू देख मेरा दीदा' आए उस वक्त बाया हाथ बाये पहलू[5] पर रखकर दाहिने हाथ की कलमे[4] की उँगली से दाहिनी आख का पपोटा नीचे घसीटे और दिखावे। जब यह अल्फाज कह चुके तब दाहिनी जानिब[6] आही रे, आही रे, और फिर बायी जानिब[7] आही रे, आही रे—सम से सम तक और सम पर आए।

फसल दूसरी

घोडे की पाँच नकले इसमे बयान की जाती है।

पहली नकल

नक्काल पहले आकर हिनहिनाए 'हे हे हे'। फिर घोडा हाथ का बनाए इस तौर पे कि बाएँ हाथ की उँगली पर दाहिने हाथ की दो उँगलियो को बतौर टागो के रखकर यह कहे— 'हे, हे, हे' और साथवाले जवाब दे 'वाह, वाह। घोडे है, घोडे है, घोडे है।' बाद इसके कहे मेरे घोडे की हालत कुछ न पूछो। जमुना जी के किनारे थोडी रेत खा गया है। चौबे ही चौबे लीद करता है। साथ वाले कहे—वाह, वाह। फिर कहे—एक दिन बाजार मे गया पूडे खा गया। लौडे ही लौडे लीद करता है। साथ वाले कहे मुब्हान अल्लाह। फिर हिनहिनाते हुए साजिन्दो की जानिब हट जाए और कहे, नाकन है, बछेरे है और अपने बाएँ चूतड पर बाएँ हाथ मे कोडा भी मारता जाए। साथ ही शाबाशी भी देता जाए।

दूसरी नकल

हे हे हे मेरा घोडा तो मली दली खली नली सडी गली हो गया है। मै क्या बताऊँ, क्या कुदाऊँ और जब कूदेगा तब उसकी खामोशियाँ निकलेगी। साथ वाले कहे—'माशा अल्लाह!'

1 लगातार, 2 शब्द समाप्त होने तक, 3 हरकत करता रहे, 4 कमर, 5 तर्जनी, 6-7 ओर।

तीसरी नकल

हे, हे, हे, बाज शख्सो को एक घोडा न मिला । एक टटवानी[1] लेकर दाग करवाए । रिसाला[2] जब तैयार हुआ तो सबसे कहने लगे—भाइयो जरा ठहरो । मुझे भी आ लेने दो । औरो ने कहा—होश मे आओ, कूडा करो, परे मे मिलो, चार कदम चल के पाव के नीचे आया रोडा, तले सवार ऊपर घोडा । साथ वाले कहे—चश्मेबद्दूर ।

चौथी नकल

एक लम्बे बदसूरत आदमी का मुह छुपाके कान पकड के महफिल मे लाए । वह बदसूरत आह-आह-आह किए जाए और कहे चिल्ला के कि पाजी क्या करता है—इतनी जोर से तू मेरा कान न पकड । नकल करता है या मुझे बूचा कर डालेगा । फिर कान पकडने वाला कहे कि मुझे तो घोडा न मिला । चार आने महीने की मामा सवारी को नौकर रखे है । साथ वाले कहे—'लाहौल विला कुवत इल्ला-बिल्ला ।'

पाँचवी नकल

हे, हे, हे मेरे घोडे के हालात कुछ न पूछो । लहरिया की जीन बाधता हूँ । मन भर दाना तुला हुआ रोज़ देता हूँ । काम एक नही उठाता । साथ वाले कहे—अस्तगफिर उल्लाह ।

फसल तीसरी

इसमे आतिशबाजी की चार नकले है ।

पहली नकल

नाकिल अव्वल कहे कि लाखो रुपया आतिशबाजी मे फूक दिया, खुदा की राह मे एक कौडी न दी । फिर बायाँ हाथ मुह पर रखकर बतौर चरखी छूटने की आवाज होठो से निकाले और दाहिने हाथ को बढाकर चरखी की तरह घुमाता जाए । फिर दाहिना हाथ ऊँचा करके और उचक कर कहे कि वह गई । साथ वाले कहे कि क्या अच्छा वजन था ।

---

1 टट्टू 2 फौज ।

दूसरी नकल

एक नायिका की नोची[1] को आतिशबाजी मयस्सर न आई। उसने बाएँ हाथ की मुट्ठी बाधकर दाहिने हाथ से ठोकी और चित लेटकर दोनो टागे उठाकर और चीरकर बोली कि लोकलहिया फट गई। साथ वाले कहे—'तौबा, तौबा।'

तीसरी नकल

सामने आकर कहे कि यह तो पट्टेबाज चरखी है। यह कहकर दोनो हाथो को चरखी की तरह चार तरफ हिलाकर बाएँ हाथ को होठो से मिलाकर चरखी छोडने की आवाज मिलाकर कहे कि 'वो गई' और आसमान की तरफ दाहिना हाथ ऊँचा कर दे। साथ वाले कहे 'क्या खूब भरी थी।'

चौथी नकल

गोल फूलो का कपडा लेकर दूसरे पाव के नीचे दबाकर और दूसरे दोनो हाथो से सर से बुलद चौडा करके कहे कि यह तो दाऊदी की टट्टी है।

फसल चौथी

इसमे पाँच नकले बगाल के भाडो की बयान की जाती है।

पहली नकल

बगाल के भिश्ती की सूरत बनकर कहे—'बगाल के भिश्ती इस तरह से छिडकाव करते है'। साथ वाले कहे—किस तरह। उस वक्त यह गाए—

आस्ताई—बडो मजेदार यह दरियाव मीठा पानी लगे।
अतरा—कोई रसिया हो तो रस मिला ले, जोग मिला ले
जोगी ऐसे को वैसे ही मिले, बूढे को जवा मिले॥

---

1 तवायफ।

दूसरी नकल

बगाल के मेहतर की सूरत बनकर जारोब के बदले दाहिने हाथ मे रूमाल कपडे का बल दिया हुआ लेकर हिलाता हुआ जमीन झाडता हुआ आए और कहे कि 'बगाल के खाकरोब इस तरह झाडू देते है और काम करते है।' साथ वाले कहे—किस तरह। उस वक्त सफाई करता जाए यानी जारोबकुशी रूमाल से करता जाए। लय-सुर मे यह गाता जाए—

आस्ताई—बाबू कलवा-कलवा को पुकारे अरे हो जमादार।

अतरा—मेज लगत है आओ 'अख्तर' पिया चलो खासा मान कहार।

तीसरी नकल

बेदिनी की सूरत बने वो यह है कि घूघट निकाल कर साडी बाँध के रूमाल को चौतहा करके सर पर रख के लय और ताल मे मटकती हुई आए और कहे कि 'बगालन बेदिनी इस तरह इलाज को निकलती है।' साथ वाले कहे—'किस तरह।' उस वक्त यह गाए—

आस्ताई—आहा मोरी आछी बेदिनी रूपसी,
दातमुशी मुखहशी प्रानकरी खुशी।

अंतरा—कीकर बोतार रोपर छोटा बोक सिरोतार कम्बल मोटा माय दो ठौर भद्र कडो धाडीतै मुशी।

साथ वाले पूछे—'तेरे पास दवा है।'

बेदिनी जवाब दे—'हाँ, बडा-बडा इलाज है।'

साथ वाले कहे—'तेरे पास गोलिया भी है।'

बेदिनी कहे—'हाँ है।'

साथ वाले कहे—'कितनी मोल की गोलियाँ बेचती हो।'

बेदिनी कहे—'सवा लाख रुपए की।'

साथ वाले कहे—'हम नही लेगे। जाओ और जगह बेचो।'

चौथी नक़ल

खेमटीवाली की सूरत बने। वह यह है कि साडी बाँधकर बगाली जेवर सब आरास्ता करे और कहे कि बगाली खेमटी वाली इस तरह नाचती है।

साथ वाले कहे—'किस तरह ?' उस वक्त लय सुर मे नाचती जाए और गाए—

आस्ताई—और जात नाशी हेता नारी अमी पक्की अबलाता कलोनारी।

अतरा—यक लो गोहरे एको की अभी मुनकोम सन्नोद यकी अमी ऐके है हुप्पो की बनचारी।

पाचवी नकल

बगालिन ग्वालिन की सूरत बने। साडी बाँधे, घूघट निकाले और दूध की मटकी दाहिने बगल मे ले।

साथ वाले कहे—'क्या खूब ग्वालन है।'
ग्वालन कहे—'बगाल की ग्वालन इस तरह नाच-नाच के और गा के दूध बेचती है।'
साथ वाले कहे—'किस तरह ?'
उस वक्त यह गाए—

आस्ताई—दूध पूत नारी को देते बने को।

अतरा— भालो चौपराल तुम्हार भालो नजरिया
"अख्तर" अमर माई को दे दे बने को।

फसल पांचवीं

इसमे मुत-फर्रिकात[1] नकले है।
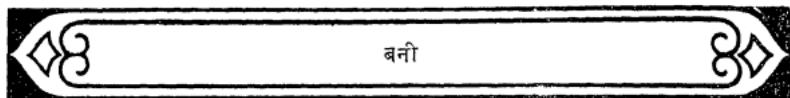
पहली नकल

इस नकल मे एक दूसरे से आपस मे मुखातिब हो-होकर कहा करे—साहबे-नज्जारा[2] की तरफ आखे मिलाकर न कहे—'सलाम आलेकुम।'

दूसरा कहे--वालेकुम-अस-सलाम।

---

1 विभिन्न, 2 दर्शक।

अपने-अपने अगरखे या दुपट्टे के कोने चुटकियो मे दबा-दबाकर ऊँचा करे और कहे—मेरे पास तो किबला[1] एक तोती है। सुनिए—कहती है—नबी जी भेजो।

दूसरा बोले—हॉ साहब, हमने तो एक बया पाली है। दूर की कौडी लाती है—कहिए आपने क्या पाला है।

तीसरा बोले—ऐ किबला आप क्या पूछते है ? मेरे पास तो एक गजी कलचडी है। चुरुक-चुरुक बोलती है। मगर आप बताइए आपको किस जानवर का शौक है।

चौथा बोले—मीर साहब मैने तो मुद्दत से इस शौक को तर्क[2] किया मगर बिलफेल[3] एक लाल है, बहुत पुराना अभी कुछ बोलता नही। जब जी चाहता है, कहता है सुम्मुन-बुकमुन, उमयुन-फहुम, लायरजऊन।

पाचवा बोले—किबला मेरे पास तो बुलबुल है। उसका दम सुन लीजिए क्या कहता है। और ये अल्फाज कहे—जे जेन्जे-छछ-छछ-छछ-छछ।

छठा बोले— किबला मेरे पास तो बुलबुल के तले का पिद्दा है। नबी जी भेजो कहता है।

सातवा शख्स एक सफेद सन सर घुटे हुए आदमी को पकडकर लाए। साथ वाले कहे—अरे भाई यह क्या है। वो कहे—किबला आपको मालूम नही। सब साहबो ने जानवरो का शौक किया है, मैंने भी एक काकातुआ पाला है।

बूढा आदमी उसके कलाम के हमराह सर हिलाता रहे। फिर काकातुआ से पूछे—मलीदा खाओगे।
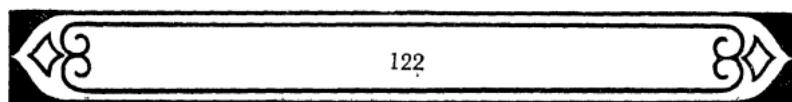
वह गर्दन हिलाकर कहे कि हाँ।
फिर पूछे—पुलाव खाओगे।
वो कहे—हाँ
फिर पूछे—अरे भाई अखाडे मे भी इज्जत रखोगे।
कहे—नही।

---

1 हुजूर, 2 छोड दिया, 3 आजकल।

साथ वाले यह सुनकर बराबर ठट्ठा मारे और काह-काह करे । दफ्तन[1] सफेद रेस वाला भी दोनों हाथो को फैलाकर और पालने वाले की तरफ मुतव्वजेह होकर कहे—काह-काह-काह जोर से ।

दूसरी नकल—तीन खुदपसदों[2] की

तीन चीजे इत्तफाक से मिलीं । एक ने अगूठी पहिनी, दूसरे ने टोपी पाई, तीसरे ने मिस्सी लगाई तीनो को मजूर हुआ कि अपनी-अपनी चीजो को जाहिर करना चाहिए—अगूठी वाला हाथ ऊँचा करके और छँगुलिया अलग करके कहे—क्यो किबला इतना बडा बच्चा बकरी का कितने को आता होगा । मिस्सी वाला जवाब दे—कोई तीस को-इकत्तिस को-तैंतीस को छत्तिस को-सैंतिस को-अडतीस को-चालीस को-तैंतालिस को-छयालिस को-अडतालिस को-इन्तहा को और टोपी वाला गर्दन को बार-बार हिलाकर कहे—दुरूस्त है—बजा है ।
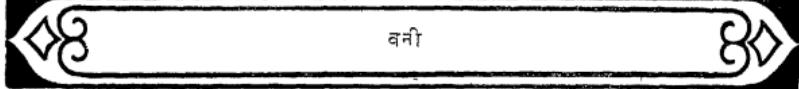
तीसरी नकल—खुदावद[3] और मुसाहिब[4] की

मालिक और मुसाहिब दोनों एक दिन अपने जलसे मे बैठे हुए थे । मुसाहिब के मुह से यह कलमा[5] निकला—कि जुमला[6] तरकारियो मे बैंगन को खुदा ने क्या रुतबा[7] अता किया है ।

यह एक टाग का तीतर खल्क[8] हुआ है । क्या गरीब नवाज तरकारी है कि इफरात[9] से सबको पहुचती है और बहुत मजे की पकती है । मिया ने जवाब दिया—यह तो सब सच है । मगर बादी अजहद[10] है । पानी बहुत पिलाता है और साथ ही मुसाहिब ने दोनो हाथ बाधकर अर्ज की, इसी वास्ते मर्द आदमी नही खाते है । जब मालिक खुश हुए तो कहने लगे—सुनो भाई, मेरे बावर्चीखाने मे अरहर की दाल ऐसी खूब पकती है कि दुनिया भर मे ऐसी नही पकती । खाओ तो तुमको भिजवाऊँ । मुसाहिब उठकर आदाब बजा लाया और अर्ज की—जहेनसीब । चुनाचे एक प्याला अरहर की दाल का खास दस्तरख्वान पर से उनको इनायत हुआ । वह ले गए अपने घर मे । दूसरे दिन जो हाजिर हुए, मालिक ने पूछा—खॉ साहब दाल खायी थी । कुछ मजे की थी । मुसाहिब ने हाथ बाधकर अर्ज की—अपनी तकलीफ तो यह है कि उस दाल

---

1 अचानक, 2 अपने आप मे प्रसन्न रहने वाले, 3 मालिक-सरकार, 4 दोस्त जैसा सेवक, 5 वाक्य, 6 कुल, 7 आकर्षण-पद, 8 पैदा, 9 बहुतायत, 10 बहुत ।

का एक दाना दस्तरख्वान के नीचे पडा रह गया था । एक चिडिया ने ऊपर से उतरकर फौरन उसको खा लिया । उसी वक्त सर-ब-मुहर मेरे सामने उसे बैठ के नाक लगा के जो सूँघता हू तो प्याज के बघार की बू उसमे मौजूद थी । साथ वाले कहे—मुसाहिब हो तो ऐसा हो ।

चौथी नकल–लौडी बीबी की

असल की नकल बयान करता हू । कान लगाकर सुनो । एक मिया-बीवी थे । एक लौडी थी । मिया-बीवी का प्यार-अखलास देखकर लौडी का भी जी चाहा करता था । एक रोज मिया-बीवी दोनो किसी की शादी मे मेहमान गए । घर खाली रहा । लौडी को और कोई तो न मिला । अपनी चदरिया बेरी के पेड पर डालकर और उसके काटो मे उलझाकर यह गाती थी । इस प्रकार अपने दिल का हौसला निकालती थी —
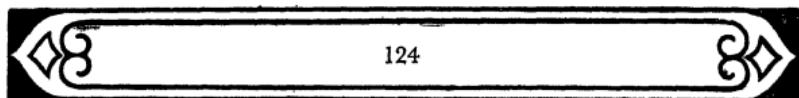
आस्ताई—वाह जी वाह यह ठट्ठा नही अच्छा ।
राह चलतो का दामन पकड लेते हो ।
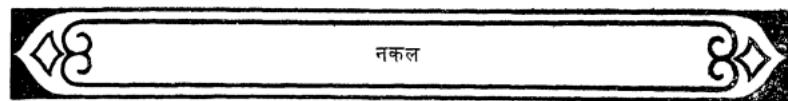
अंतरा —जाने नही देते हो मुझको बाहर ।
हाथो से नाहक जकड लेते हो ।

पाचवी नकल—चाद और मुसाफिर की

इस नकल मे एक शख्स[1] अमीर बने और सब नौकर बने । अमीर नौकर से पूछे आज कौन सी तारीख है । नौकर हाथ बाधकर अर्ज़ करे—आज उन्तीसवी तारीख माहे मुबारक रमजान की है । यह सुनकर हाकिम कहे—जल्द साडनी-सवारो को भेजो और सही खबर मगवाओ कि आज चाद है या नही । तो हम कल ईद करे । मुलाजिमो ने बमुजिब-इरशादेआला[2] जल्दतर[3] साँडनी सवार को रवाना किया । साडनी सवार को राह मे एक गरीब मुसाफिर मिला । यहाँ पर मुसाफिर बनना चाहिए इस तरह से कि हाथ मे लाठी, पीठ पर गठरी । साँडनी सवार मुसाफिर से पूछे कि मियाँ मुसाफिर तुमने कही चाद देखा है । मुसाफिर जवाब दे कि हाँ जमना जी के किनारे पीपल के पत्तो की आड मे झलकता देखा है । साँडनी सवार उसको ले आए और हाकिमो के मुलाजिमो से अर्ज करे । मुलाजिम मुसाफिर को खिदमते

---

1 व्यक्ति, 2. हुजूर के हुक्म के अनुसार, 3 जल्दी से ।
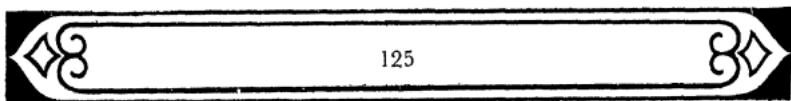
हाकिम मे गवाही के वास्ते हाजिर करे । हाकिम बहुत खुश हो और हुक्म दे कि इसको काजी साहब के पास ले जाओ और गवाही दिलवाओ । मुलाजिम मुसाफिर को काजी साहब के पास लाये ।

तब काजी साहब कहे कि इसको मुफ्ती साहब के पास ले जाओ । यहाँ पर काजी साहब की शक्ल बनाना चाहिए । अम्मामा[1] सर पर और अबा[2] पहने हुए, दाढी बढी । जब मुसाफिर को मुफ्ती[3] साहब के पास ले चले, उस वक्त मुसाफिर इन्कार करने लगे और बैठ जाए और मचल जाए और जाने मे बहुत हुज्जत करे और बमुश्किल तमाम[4] मुफ्ती साहब तक पहुचे । वो कहे कि उसको बडी अदालत मे ले जाकर गवाही दिलवाओ । यहाँ पर पहले तरह से मुफ्ती साहब की शक्ल बनाना चाहिए, उस वक्त मुसाफिर चिल्लाकर रोने लगे और बहुत बेहाल हो और इजतराब[5] करे और कहे कि मै मुसाफिर गरीब किस मुसीबत मे पडा । जब जबर्दस्ती बडी अदालत मे पहुचे, तो बडी अदालत का हाकिम कहे कि इसको छोटी अदालत मे ले जाओ । यहाँ पर बडी अदालत के हाकिम की शक्ल मिस्ल अशकालऊला[6] बनाए । उस वक्त मुसाफिर कशा-कशा[7] छोटी अदालत मे जाए । आखिरकार कहे कि हाँ चाद तो देखा है । ईद करने न करने का तुमको एख्तियार[8] है । खुदा की मार आज से जो कभी चाद देखू । चाद ने जान लेने मे कुछ बाकी नही रखा । हाय-हाय मर गया । बाद फिराग गवाही मुसाफिर बेचारा तमाम दिन का रोजेदार बे-आबोदाना[9] मशक्कत[10] और दिक्कत[11] उठाए हुए राह मे एक पुरानी टूटी मस्जिद में जाकर लाठी पहलू मे रखकर गठरी सर के नीचे बेखबर सो गया । सुबह को नमाजी जो मस्जिद मे जमा हुए मुसाफिर का शाना पकडकर हिलाया । कायदा है कि जिस आन मे इन्सान सो जाता है वही आन उसको ख्वाब मे भी नजर आती है । यह तो चाद की रूबकारियो मे मुसीबत उठा चुका था । ख्वाब में भी वही बर्राने[12] लगा । जब नमाजियो ने शाना हिलाया तो मुसाफिर ने करवट ली और कहा—चॉद काजी के यहाँ । नमाजियो ने कहा—सुब्हान-अल्लाह । दूसरे नमाजी ने दूसरा शाना हिलाया और जगाया । उसने भी दूसरी करवट ली और कहा—चॉद मुफ्ती के यहाँ । नमाजियो ने कहा—माशाअल्लाह । तीसरे नमाजी ने जोर से झिझोडा और कहा—ऐ-बदा-ए-खुदा बता तू कौन है । मुसाफिर ने भी अँगडाई लेकर पीठ खुजाकर

1 पगड़ी, 2 चोगा, 3 मौलवी बडे, 4 बहुत मुश्किल से, 5 आनाकानी, 6 ऊपर बताई गई शक्लो के अनुसार, 7 धीरे-धीरे, 8 अधिकार, 9 बिना खाये पिये, 10 मेहनत, 11 परेशानी, 12 चिल्लाने ।
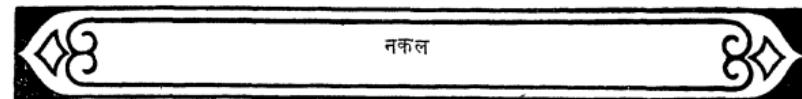
तीसरी करवट बदली और कहा कि चाँद मामू के यहाँ। नमाजियो ने कहा—अजतगा-फिर उल्ला, भाइयो ! यह कोई भुतहा है या शहीद है। कौन है ? चौथा नमाजी बढा और टाँग हिलाकर कहा—ऐ मुसलमान उठ। लाहौल पढ। मुसाफिर ने फिर चौथा पहलू पकडकर कहा—चाँद हाकिम के वहा। सभी नमाजियो ने कहा—तौबा-तौबा। पाचवे नमाजी ने कहा—वक्तेनमाज[1] तग[2] हुआ जाता है। ऐ अजीज, होशियार हो। उसने जवाब दिया—चाँद बडी अदालत मे। सब नमाजियो ने कहा—खैरतद—दुनिया-वलआखिरह[3]। छठा नमाजी आगे बढा और कहा—तुम सबके सब चुप रहो। मै इसको जगाता हू। यह कहकर दोनो हाथो मे हिलाया। मुसाफिर ने करवट लेकर कहा — चाद छोटी अदालत मे। अलमुख्तसर[4], सब नमाजियो ने दफ्तन हाथो-हाथ उसे खडा कर दिया। उस वक्त मुसाफिर परेशान होकर जागे, डरता हुआ घिघ्घी बँधी हुई और जल्दी-जल्दी अपनी गठरी और लाठी सभालकर कहे कि अब से तमाम ज़िदगी चाँद न देखूगा। एक चाद देखकर जान धडके मे पड गयी। दोबारा तो जान काहे को रहेगी।

छठी नकल—बद राग की

इस नकल मे एक शख्स[5] ठाकुर बने और दूसरा नौकर रामचीरा नाम। एक ठाकुर थे उनका एक नौकर था रामचीरा नाम। महीनो गुजर गए थे कि रामचीरा तनख्वाह से बेनसीब था। इस सबब[6] से दिल मे अदावत रखता था। एक दिन का जिक्र है कि महाराज ने रामचीरा से कहा—अरे रामचीरा। मोर मन फगवा सुनै को चहत है। राग ला दे। रामचीरा कहे—बहुत खूब महाराज। मै बद राग आपको सुनाऊँगा। आप बहुत खुश होगे और तमाम जिंदगी याद रखेगे। यह कहके रामचीरा चला और बाजार से एक कोरा घडा मोल ले के एक मोलसरी के दरख्त पर चढ गया। उस दरख्त पर भिडो का छत्ता था। उसे नोच कर तमाम छत्ता घडे के अन्दर भर लिया और घडे का मुह कपडे से बद करके महाराज के मकान की कोठरी के अदर धर दिया। महाराज से कहा कि बद राग लाया हू मै। मुलाहिजा कीजिए। उस सामने वाली कोठरी मे धर आया हू। महाराज तो मुश्ताक[7] ही थे। सुनते ही

---

1 नमाज के वक्त, 2 रूप, 3 दुनिया और उसके बाद को याद कर, 4 आखिरकार, 5 व्यक्ति, 6. कारण, 7. शौकीन।

मारे खुशी के अदर गए और रामचीरा ने दरवाजे की बाहर की कुडी लगा दी । महाराज ने उकडू बैठकर जरा घडे को हिलाया । उसके अदर मे भनभनाहट की आवाज इस तरह आई—इस मुकाम पर तीन चार सुरीले आदमी लय-सुर मे पहली मर्तबा दाहिनी जानिब मुँह फिरा-फिरा कर नाक मे यू कहे ।

ए भन भन भन भन, भन भन भन भन भन भन । फिर बायी तरफ—ऐ भन भन भन भन भन भन भन भन भन भन ।

बीस दफा जब हुआ तो महाराज बहुत खुश हुए । रामचीरा से कहा—भई नेक राग लाया है । वो बोला कि—आप ही अकेले सुनिए । हमारी मजाल नही और किसी की ताकत नही कि कोई सुन सके । जरा और जोर से हिलाइए । जब महाराज ने और जोर से हिलाया तो और ज्यादा आवाज हुयी । महाराज बहुत खुश हुए और फिर दिल मे कहा कि बद मे ऐसी आवाज आती है । अगर खोल दूँ तो इससे भी ज्यादा अच्छी सदा आएगी । फर्तेखुशी[1] मे जल्दी से घडे के मुह पर से कपडा उठाया । कपडा उठाना और भिडो[2] का चिमट जाना । महाराज के तमाम बदन मे भिडे चिमट गई । महाराज का यह हाल हुआ कि दौडे-दौडे फिरते थे । कपडे नोच के और फाड के फेक दिए । तमाम बदन को कभी खडे-खडे पीटते थे कभी बैठकर, कभी लेटकर, एक जा पर करार न था । अकेला मकान, बाहर से कुडी, भागने की और किसी से दवा तलब करने की जगह नही । मुँह से ये कहते जाते थे— इस फिकरे को चाहिए जो महाराज का नाकिल हो, वह खूब ताल-सुर मे कहता जाए और अपने को पीटता जाए और लेट जाए और उछलता जाए । जहाँ तक हो सके फर्तेबेताबी[3] और इजतराब[4] व बेकरारी ताल-सुर मे दिखाए—यह फिकरा है—

फाग नही बर रहे ।
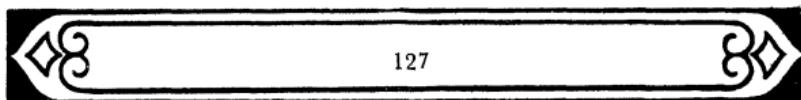
अलमुख्तसर[5] बडी देर के बाद महाराज की तबियत ठहरे । सूज-फूल के कुप्पा हो गए ।
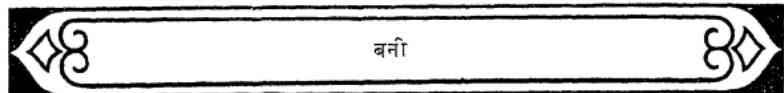
नतीजा इस नकल का यही है—साथवाले कहे कि बेदिल नौकर भी बहुत बुरा होता है ।

सातवी नकल—कबूतर उड़ाने की

एक शख्स नक्काल हमराहियो से आगे बढे और कहे कि एक बाका इस तरह कबूतर

---

1 प्रसन्न, उत्सुकता, 2 मधुमक्खी, 3 व्याकुलता, 4 बेचैनी, 5 सक्षेप मे ।

उडाता है, अगरवाल बनिया कबूतर इस तरह उडाता है, और जनाना कबूतर इस तरह उडाता है। साथ वाले कहे—अजी खाँ साहब, सुबह का वक्त ठडी हवा है। एक गोल उडा लीजिए। खाँ साहब जवाब दे—बहुत अच्छा उडाता हू। यह कहके खाँ साहब दाहिना जानू[1] ऊँचा करके और बायाँ जानू टेक के आसमान की तरफ नजरे करके बायाँ हाथ खुला सीने पर रखे और दाहिना हाथ खुले आसमान की जानिब बुलद कर दे और तारीफ करने की तरह से अगुश्तेनर[2] और अगुश्तेकलमा[3] दोनो आमेख्ता[4] करके बतरीके-तारीफ[5] जुम्बिश[6] दे। जबान से कहते जाएँ-- 'वाह-वाह-वाह-वाह, क्या बात है। और यह फिकरा ताल सुर में कहे---ऐ फुर है मियाँ जी फुर है।

दूसरा शख्स[7] आगे बढे और कहे—अगरवाल बनिया यो कबूतर उडाता है।

साथ वाले कहे—अजी महाराज। तुम भी उडा लो। ठडी हवा है, सुबह का वक्त है।
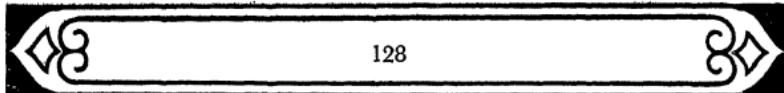
बनिया कहे कि अजी खाँ साहब के सामने मै क्या उडा सकता हू। मेरी क्या मजाल—मै तो उनका गुलाम हूँ जी और मै क्या कोई बडचोद भी उडा सकता है उनके सामने? साथ वाले कहे कि नही महाराज तुम लाख उज्र[8] करो मगर तुमको उडाना पडेगा।

बनिया कहे कि खा साहब, जाने दीजिए अब तो उडाऊँगा।

और ब-मुश्किल-ब-शक्ल मरकूमा-बाला हाथो की और नशिस्त की सूरत रखे और कहे—रग छे, रग छे, रग छे। फिर लय-सुर मे कहे—ऐ रग है मिया जी रग है, ऐ धुन है मियाँ जी धुन है।

तीसरा शख्स आगे बढे और कहे कि जनाना कबूतर इस तरह उडाता है—शरीफजादा था मगर महलो मे पर्दानशीनो मे रह-रहकर खराब हो गया। सर से दुपट्टा ओढकर उस पर लट्टूदार पगडी पहन लेता है। मर्दानी जनानी दोनो बोलियाँ बोलता है। साथ वाले कहे—कि अजी मियाँ साहब तुम क्यो नही उडाते हो। तुम भी उडा लो। जवाब मे एक लम्बी

---

1 घुटना, 2. अगूठा, 3 तर्जनी, 4 मिलाकर, 5 प्रशसा करने के अदाज मे, 6 हिलाये, 7 व्यक्ति, 8 इनकार।

ऊही करे और सौ नखरो से राजी हो और कहे कि अच्छा उडाता हूँ—उडाती हूँ। अरे कोई मेरी कमर थामो। सभी ने खडे-खडे कबूतर उडाए—यह बदी बैठके उडाएगी। साथ वाले फौरन उसकी कमर थाम ले और उस वक्त जनाना दोनो घुटने टेककर चूतड बुलद करके कहे—ऊही, ऊही, ऊही ऐ फराई, फराई, फुर' और दाहिना हाथ आसमान की तरफ बुलद करके खुला हुआ और बायॉ हाथ खुला हुआ सीने पर रखे और लय-सुर मे कहे—'ऐ आस्ते मियॉ, जी आस्ते मे मुए खुदा के वास्ते।'

आठवी नकल—फसद[1] खुलवाने की

एक बीबी बने और दूसरी लौडी, तीसरी फस्साद। बीबी ने यह यह मतला पढा—
"फसाद खून से सारे बदन मे दाग हुए,
अजब तरह के यह ताउज[2] गिर्दे-बाग हुए।
अरे मामा तबीब[3] को इत्तला कर।"

और तीन-चार दफा जल्दी-जल्दी शाने[4] और हाथ हिलाते हुए दौडे और आकर कहे कि हकीम जी ने सरो की फसद बताई है। बीबी कहे—उई अच्छा। फस्साद[5] को बुला ला।

मामा फस्साद को लाए। फस्साद इस तरह से आए—हाथ की पगडी इस तरह से लपेटे कि ऑखे तक बद हो जाएँ और आकर सलाम करे और कहे कि इस मुए की तो ऑखो पर आप पट्टी बधी हुई है। यह निगोडा क्योकर फसद खोलेगा। फिर उससे पूछे कि तुम्हारा नश्तर[6] कहा है। फस्साद[7] जवाब दे कि पीछे छकडे पर आता है। यह सुनकर बीबी को गश[8] आ जाए। लोग केवडा छीटा मारकर होश दिलाएँ। फिर बीच मे चादर का पर्दा दिया जाए और फस्साद बीबी के बाजू पर अपना दाहिना घुटना टेककर दोनो हाथो से एक रूमाल कपडे का तस्मे के बदले जोर से खीचकर बाधे कि बीबी कहे—'उई उई उई'। फिर हाथ पर लकडी उस रग पर धरकर कहे—'शर, शर, शर। सेहत मुबारक। तुम बडी फसादन[9] हो।'

---

1 फसद—नस खुलवाकर खून निकलवाने को कहते है। जो रक्त निकालता है उसे फस्साद कहते है, 2 मोर 3 हकीम, 4 कन्धे, 5 नसो से रक्त निकालने वाला, 6 जिसकी नस छेदी जाती है, 7. नस खोलने वाला, 8 मूर्छा, ९ झगडालू।

नवी नकल—टुडी खानम की

एक बीबी चादर ओढकर अपने हाथ अपने नितम्बो पर बाधकर बैठे। दूसरी औरत उसके पेट पर चादर के अदर चिमटकर अपने दोनो हाथ कोहनियो तक उसके आगे निकाल दे। तीसरी औरत उसके सामने बैठकर पूछे कि मिजाज अच्छा है ? यह मुह से कहे—'अच्छा है।' वो हाथो से जवाब देती जाए। वो पूछे तुम्हारे शहर मे गोले कितने बडे-बडे होते है। वह मुह से और पीछे वाली हाथो से कहे इतने बडे-बडे। जब वो शरीफो को पूछे, जब भी ऐसा ही करे। पीछे वाली कभी आगे वाली की बाछे खीचे। कभी बालो की पटिया दुरुस्त करे। कभी आँखो का कीचड पोछे। कभी चेहरे भर मे किसी 'जा'[1] पर बार-बार खजाए। अलमुख्तसर[2] हाथो को बेकार न रहे दे।

दसवी नकल—पठान की और मेढक की

पहले यूँ कसम खाए—खान की खसम, मुझे खान के ऊँटो की मेगनियो की कसम। एक पठान दरिया के किनारे रफा-एहतियाज[3] को गए। बरसात का मौसम था। लबे-दरिया[4]-मेढक बोलते थे। पठान ने कहा—तवक्कुफ[5] करो कि हम हग ले। मेढक उनकी नसीहत कब मानते थे। और ज्यादा बाडा[6] मारने लगे। उस वक्त खा साहब ने गुस्सा होकर कहा कि 'सुनो मेढको, शेखो की शेखी, पठानो की टर, यहा न हगेगे—हगेगे घर।'

यह कहकर बिला-रफा हाजत[7] यो ही रजअते कहकरी कर आए। ऐसे उजड्ड होते है।

ग्यारहवी नकल—मियां फत्ता और बट्टा की

एक शख्स ने अपने दोस्त की दावत[8] की। उनका नाम मिया फत्ता था। जब वो आए तो उन्हे अपनी जौजा[9] के हवाले किया कि मैं बजार से कुछ बकिया[10] सौदा और लेने जाता हू। जब तक तुम मेरे मेहमान की खातिर-मुदारात[11] मे बजान व दिल[12] मसरूफ[13] रहना और जल्दी-जल्दी तोफा-तोफा[14] खाना पकाओ। यह कहकर मियाँ तो बाजार गए। मेहमान घर मे रहा। बीबी ने देखा कि इस कद्र उम्दा-उम्दा अजनास[15] पेशे-नजर[16] पडी है। मै

---

1 स्थान, 2 सक्षिप्त मे कि 3 टट्टी करने, 4 नदी किनारे, 5 शान्त हो जाओ, 6 शोर, 7 बिना टट्टी किए, 8 खाने पर बुलाना, 9 पत्नी, 10 शेष, 11 आतिथ्य, 12 दिल व जान से, तन व मन से, 13 व्यस्त, 14 अच्छे-अच्छे, 15 वस्तुएँ, 16 आँखो के सामने।

मेहनत मशक्कत करके पकाऊँगी । मुर्जरिद[1] मेहमान सबनौश[2] करके तशरीफ ले जाएगा । मै, शौहर, लडकी सब भूखे रह जायेगे । कुछ ऐसा फिकरा[3] किया जाए कि मेहमान डरकर भाग जाए । फिर हम सब घरवाले यह सब खाना बखूबी तमाम नोशीजान[4] करेगे । यह सोचकर मेहमान से, जिनका नाम मिया फत्ता था, घरवाली कहने लगी कि मेरे शौहर की क्या बुरी आदत है । मेहमान बनाकर हरेक को ले आता है और आखिरकार जिस बट्टे से मै मसाला पीस रही हू, उसी से उसका सर कुचलकर भेजा खा जाता है । यह सुनते ही मिया फत्ते के होश फाख्ता हो गए । जूता भी वहा छोडा । घर से निकल भागे । फौरन साहबे-खाना[5] भी अशिभाए-नौ[6] खरीद कर हाथो मे लिए हुए दाखिल खाना[7] हुए । देखा बीबी बडी कोशिश और मेहनत से तामपजी[8] मे मसरूफ[9] है, मगर मेहमान नदारद[10] । हैरान होकर जौजा[11] से पूछा । बीबी मेहमान क्या हुआ । वह कहने लगी यह सिल पर का बट्टा मुझसे मागने लगा । मैने बनजर-हर्जकार[12] जो न दिया तो खफा होकर चला गया । साथ ही शौहर ने अगुश्ते-अफसोस[13] दातो मे दबाए और जबाब दिया कि वाह तुमने गजब किया । एक अदना[14] पत्थर के बट्टे के वास्ते उसको रजीदा-खातिर[15] कर दिया । यह न चाहिए था । लाओ बट्टा उसकी नज्र[16] करूँ । अभी दूर न गया होगा । यह कहकर बट्टा उठाकर दौडते चले । देखा कि राह मे वो मेहमान चला जाता है । यहाँ तक कि उन्होने आवाज दी। ऐ मियाँ फत्ता–कुर्बान हुआ बट्टा । तुम लेते जाओ बट्टा । ज्यो–ज्यो यह सदा[17] देते हुए उसके पीछे दौडते थे । त्यो-त्यो वह जानता था कि वह खैरख्वाह[18] बीबी मुझे इत्तला[19] कर चुकी है । मै उसके हाथ लगा कि उसने सिर कुचलकर भेजा खा लिया, वह भागा और अपने मकान मे घुसकर कुडी चढा ली । यह उदास बेकरार आए और कहने लगे कि उनके दिमाग मे कुछ खब्त[20] हो गया है । आओ हम, तुम और लडकी वाले मिलकर खा ले कि खराब न हो । सच कुरान मे आया है कि औरते भी बहुत बडी मक्र[21] होती है ।

---

1 आनेवाला, 2 खा-पीकर, 3 वाक्य बोलना चुभते हुए, 4 खायेगे, 5 मालिक, 6 नई नई वस्तुएँ, 7 घर मे आए, 8 खाना बनाने मे, 9. व्यस्त, 10 गायब, 11 पत्नी, 12 मना कर दिया, 13 दुख भरी उँगली, 14 छोटे से, 15 दुखी, 16 दे आऊँ, 17 आवाज, 18 जानकार, 19 बता चुकी है, 20 खराबी, 21. मक्कार ।

बारहवी नकल

कुछ लोग तोता यो पढाते है—
सत गुडधत शिवधत दाता,
बैल की सीग पर ऊँट नाचा ।

एक लडका अपने उस्ताद को कहता है—
सदूक पर सदूक, मियॉ जी की लबी बदूक

ऐजन—अलिफ बे ते नक्कारा,
मियॉ जी को चने के खेत मे पछाडा ।

ऐजन—गुलिस्ताने बोस्तान काहे को पढे,
कटारा बाधकर मैदान मे लडे ।
नीयत गुस्ल तमाशबीन, गुस्ल मयकनम
गुस्ल हवाई, नाम अतलाह बक्शे इलाही ।

ऐजन—गुस्ल मयकनम, गुस्ले दोस्ती
एक बगल मे एक खडी कोसती ।
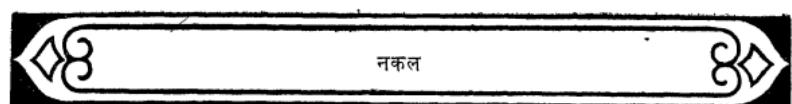
ऐजन—तनत गुस्ल मनतगुस्ल तनतातावत
गुस्ल कुरबतन इलल्लाह ।

तेरहवी नकल—उस्ताद और शागिर्द की

मकतबखाने[1] मे उस्ताद ने कहा—मेरा दिल चाहता है खीर खाने को ।

एक पाजी लडका खुशामदन[2] कहने लगा—मौलवी साहब हम पकवा लायेगे । घर मे आकर माँ से कहा—'अम्मा आखूनदा[3] जी को खीर पका दो ।' माँ बोली—'बहुत अच्छा' । खीर पकने लगी । दर्मियान-शीरबरज[4] पकाने मे रफा हाजत[5] को गई । कुत्ते ने डेगची मे मुह डाल दिया । जब माँ हाजत से फारिग होकर आई तो लडके ने कहा कि 'अम्मा कुत्ता

---

1 स्कूल, 2 मक्खनबाजी करने के लिए, 3 मास्टर, 4 दूध चावल की खीर पकाने के बीच, 5 टट्टी की ओर गई ।
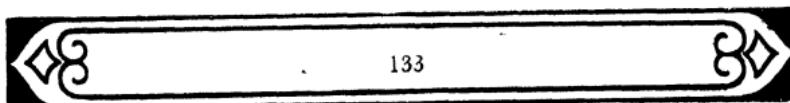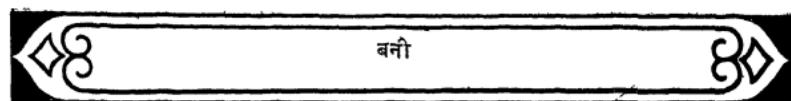
थोडी खीर खा गया ।' माँ ने कहा—'मै और पका दू ।' लडका बोला—'मौलवी साहब ने आँखो से देखा नही । मै चीनी की रकाबी लाता हू । तुम उसमे मे निकाल कर ऊपर से चाँदी का वरक लगाकर पिस्ता-बादाम छिडक दो ।' माँ भी राजी हो गई । बाद उसके कीमा दिया और कहा कि भून दो । माँ ने मसाले मे उसको भी भून दिया । दोनो चीजे दस्तरख्वान[1] मे लपेट के मकतब[2] मे उस्ताद के आगे लाया और अर्ज की—'खीर और कीमा हाजिर है ।' उस्ताद बहुत खुश हुए और लडको से कहा, 'देखो सआदतमद[3] शागिर्द ऐसे होते है और खडे-खडे उगली से खीर खा-खाकर गाल फुलाकर तारीफे करने लगे और कीमा बिल्कुल खा लिया । जब थोडी-सी खीर बाकी रह गई तो लडका बोला—'खता[4] माफ हो एक कसूर अलबत्ता[5] हो गया । मार से अमा[6] पाऊँ तो जबान पर लाऊ ।' मौलवी साहब ने कहा—'बेटा । तूने कौन सा कसूर किया है, जो अमान[7] मागता है । ले मैने मारने से अमा दी । जो कहना है कहो ।' लडके ने हाथ बाँधकर अर्ज की—'चमचा भर खीर इसमे से कुत्ता भी खा गया था ।' मौलवी साहब ने यह सुनते ही कहा, 'लाहौल बिलाकूवत, इल्ला बिल्लाईल अजीम । नाउज-बिल्लाहे मिनश मैताने इन रजीम । असतश फिर उल्लाह !' और रकाबी जमीन पर दे मारी और मुह पोछने लगे और कुल्लिया करने लगे । रकाबी[8] के टूटते ही लडका रोकर कहने लगा, 'अब अम्मा भी मारेगी, यह तो छोटे भाई के हगने की रकाबी थी जो धो ली थी ।' फिर तो मौलवी साहब का एक रग आता था और दूसरा जाता था । फिर मौलवी साहब कहने लगे कि 'कीमा भी कुछ ऐसा ही होगा ।' लडका कहने लगा कि मारने के तसमे का हम कीमा पकवा लाए थे ।

चौदहवी नकल—शागिर्द की किरअत[9] की

एक मौलवी साहब शागिर्दो पर बहुत ताकीद[10] रखते थे कि हरगिज बिला अदाए-किरअत[11] बाते न किया करो । एक दिन ऐसा इत्तफाक हुआ कि मौलवी साहब के दस्तार[12] पर हुक्का पीने मे एक चिनगारी आग की जा पडी । लडका कहने लगा कि किबला[13] तहकीकी-किरत[14] मे और काबाए-हकीकी किरत मे बहबेनजर बिलऐनुल जाहिर वलबातिन वल अशहदन

1 खाने की चादर, 2 स्कूल, 3 आज्ञाकारी, 4 गलती, 5 अवश्य, 6 बच, 7. माफी, 8 प्लेट, 9 कुरान पढने का लय, 10 सख्ती, 11 बिना लय के, 12 पगडी, 13 महाशय, 14 किरअत यानी लय दो प्रकार की होती है तहकीकी यानी अन्वेषित और काबाए हकीकी यानी वास्तविक ।
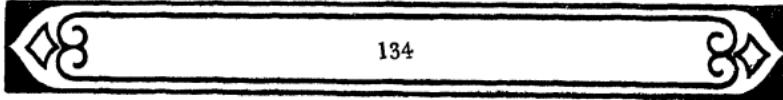
ला मुबालेगुत तहरूक ला कलालुश शेरबुल मुवैयद मिनल हाजा मुसम्मा बेअबदिल्लाह् व अब्दुलरहमान वाअब्दुलरहीम[1] यहाँ तक कि तमाम[2] दस्तार[3] जलकर भस्म हो गई। मौलवी साहब ने बगुस्सा कहा कि कमबख्त जल्द इत्तला न की वर्ना मेरी तमाम दस्तार क्यो जलती। लडके ने अर्ज की—आपने ही तो किरअत को हुक्म दिया था।

पन्द्रहवी नकल—अहवाल तानाशाह दक्किन मे

बारह बरस चानी सोने के गोलो से आलमगीर से लडे। नाजुक दिमाग ऐसे थे कि पेशाब की बू न सूघ सकते थे। एक जवार का कई लाख जवाहर का सात-आठ गज का नल बनवाया था—उसमे पेशाब किया करते थे कि बौल[4] दूर जाकर गिरे। नाक मे बू न आए। पान कभी न खाया, इत्र कभी न लगाया। माशूको[5] के पान और इत्र की बू फकत सूघ लिया करते थे। जब कैद होकर आए तो तब मालोमुता[6] बाकीमाँदा[7] मय सुरादकाते इस्मत[8] आलमगीर के कब्जे मे आया। आलमगीर ने इस बौल्दान का नादानिस्ता[9] अर्ककुशी[10] का भबका बनवाया। दोआब मे जो घोडे खासे के जब्त हुए उनके थाल को धो धोकर साइसो ने शीशो मे भर-भरकर पचास रुपए तोले का इत्र बनाकर खुद आलमगीर के हाथ बेचा। आलमगीर ने निहायत पसद कर लिया। उनके माशूको[11] को अपने पलग के गिर्द बिठाया। वो निहायत[12] हसने लगी और रजीदा[13] हुई। पूछा कि क्यो हस हसकर रजीदा होती हो। देखो कि तुम्हारे बादशाह ने भी कभी इत्र लगाया है। उन्होने उस इत्र को सूँघ-सूघकर कहा कि यह इत्र तो हमारे बादशाह के घोडो की थाल[14] मे पडता था। दरयाफ्त[15] किया तो सही निकला। कुछ ऐसा भबका भी तुम्हारे बादशाह की सरकार मे था। उन्होने कहा कि हजरत सलामत जान की अमा[16] पाएँ तो जुबान पर लाएँ। यह तो हमारे बादशाह की बौलदान[17] था। आलमगीर बहुत खफीफ[18] हुए। आलमगीर ने पूछा कि मैने सुना है कि तुम्हारे बादशाह ने कभी पान नही खाया। उन्होने अर्ज की—हमारा बादशाह बकरा न था, जो पत्ती चबाता। लिखा है कि आलमगीर[18] ने तानाशाह

---

1 टूटी फूटी अरबी की एक बहर जिसका कोई खास अर्थ नही है। केवल लय को उजागर करने के लिए कही गई है, 2 सारी, 3 पगडी, 4 पेशाब, 5 प्रेमियो, 6 सामग्री 7 बचा खुचा, 8 औरतो सहित, 9 जानकर, 10 रस निकालना, 11 प्रेमिकाओ, 12 अत्यधिक, 13 दुखी हुई, 14 भूसे मे, 15 पता लगाया, 16 क्षमा, 17 जिसमे पेशाब किया जाता है, 18. आलमगीर औरगज़ेब का ही नाम है।

को कैदखाने मे खजाना कुर्सी की बाबत निहायत सताया । वो बार-बार यही कहते थे कि जो कुछ था, वह तुम्हारे कब्जे मे आया । अब कुछ नही है । सच न जाना तरह-तरह के आजार[1] पहुचाने शुरू किए । आखिर लाचार होकर तानाशाह ने कहा कि मैने उस खजाने पर मस्जिद बनवा दी है । आलमगीर ने इसतिता[2] करके उस मस्जिद को किबले से मुनहरिफ[3] करार[4] देकर खुदवा डाला, कुछ न पाया । तानाशाह से कहा—क्यो झूठ बोले ? उन्होने कहा—इस वास्ते कि तुम्हारा भी दीन जाता रहे ।

वाकई यह नकल फजीहती[5] है । ताम[6] के वास्ते एक दिन एक मर्द से कैदखाने मे ताना-शाह ने कहा—जरा सा घी और दाल-चावल नसीब होता तो खिचडी पकाकर खा लेता । उसे रहम आया । दाल-चावल पत्ते पर घी लाकर उनको दे दिया । उन्होने शुक्र करके ले लिया । आग सुलगाने लगे । कौआ आया । घी की पत्ती को चोच मे दबाकर उड गया और दरख्त पर सामने बैठकर नौशीजान[7] किया । उन्होने उबली खिचडी आयी । मगर उनके दिल को यकीन भी हो गया कि अब मुद्दते मुसीबत भी मुनकता[8] हुआ चाहती है । इस वास्ते कि मसल[9] मशहूर है । बाद रज-गज[10] वही हुआ कि थोडे ही अर्से[11] मे कैद से निजात[12] हुई और मुताबिक[13] उसके राकिम[14] पर भी बऐने[15] यही वारदात[16] गुजरी ।

सोलहवी नकल—मुशायरे की

चद[17] आदमी चद शायर बने । यह कौन है—यह मियाँ नासिख है । यह कौन है—यह आतिश है । यह तीसरे कौन है– यह मीर इशा है । यह कौन है—यह मियाँ सगीर है । यह कौन है—यह शरफ है । यह हर्जी है । यह हिलाल है । यह निजामी है । यह जामी है । यह इस्माइल फारसी है । यह शौकत फारसी है । यह खाकानी फारसी है । यह जहूरी फारसी है । यह सायब फारसी है । यह सलमान सावजी फारसी है । यह नुरूलऐन फारसी है । यह ऐश फारसी है । यह फसीही फारसी है । यह कासिम फारसी है । यह नासिर अली फारसी है । यह शाने फारसी है । यह खालिस फारसी है । यह मिर्जा ताहिर वहीद फारसी है । यह तदबीरु-

---

1 कष्ट, 2 फतवा दिलवाना, 3. अलग, 4 सिद्ध करके, 5 व्यग्य, 6 खाना, भोजन, 7 खा, 8 समाप्त, 9 कहावत, 10 दुःख, कष्ट, 11 समय, 12 आजादी, 13 ठीक उसी के अनुसार, 14 लेखक, 15 बिलकुल, 16 घटना, 17. कुछ ।

द्दौला मु शी मुजफ्फर अली खाँ असीर हिंदी है । यह कुदसी फारसी है । यह तालिब फारसी है । यह अहली शिराजी है । यह फतेहउद्दौला है । यह मकबुलउद्दौला कुबूल है । यह मेहर है । यह जफरशाह देहलवी है । यह अख्तर शाह अवध है । यह सौदा है । यह रिन्द है । यह जेबुन्निसा मखफी है । यह सदर महल 'सद्र' है । यह मलका मुखद्दरा उजमा है । ये आलम आरा बेगम 'आलम' है । ये विकार है । ये मीर है । ये कौकब है । ये फिरदौसी है । यह कलीम फारसी है । यह उरफी फारसी है । यह सादो शिराजी है । यह मुशीर है । यह सलीम है । यह महताउद्दौला दरख्शा है । यह तआशउद्दौला ऐश है । यह लायकुद्दौला शाहिद है । यह हुनर है । ये शाज है । ये अधे मियाँ जुरअत है ।

सब एक-एक मतला[1] या एक-एक बैत[2] हरेक की तसनीफ[3] पढे और आपस मे तारीफ और वाह-वाह होती जाए । अधे जुरअत का नाकिल कहे कि जुरअत तो अब पैदा होते है । यह कह कर टागे चीरकर खडा हो जाए और दूसरा आदमी टागो के नीचे से चेहरा निकाल कर कहे कि अवे बाबा । सामने वाला कहे कि बेटा क्या है ? वो जवाब दे कि बाबा मैं तो फस गया । सामने वाला कहे कि बेटा जुरअत[4] हो तो निकल आ । बस वह फौरन उस कलमे के साथ टागो के नीचे से निकल आए । फिर जुरअत का नक्काल अपनी आँख अधो की मानिन्द[5] बनाकर कहे कि कुर्बान जाऊँ, अधो का शेर भी अधा होता है । साथ वाले कहे—किस तरह से । उस वक्त यह मतला मियाँ जुरअत नाबीना[6] का पढता जाए और दोनो हाथो से चारो तरफ अधो की तरह टटोलता जाए—

जुरअत .

मतला—सुना है यार के हमने कमर है,
कहाँ है किस तरफ को है किधर है ।

मगर यह नकल तमाम मुशायरे के बाद हो ।

नासिख़

मेरा सीना है मशरिके आफताबे दागे हिजाँ,
तुलू-ए-सुबह मैशर चाक है मेरे गरेबाँ का ।

---

1. पहला शेर, जिसमे दो पक्तियाँ होती है, 2 जिसमे एक से अधिक शेर हो, 3 लिखित, 4 हिम्मत, शायर का नाम भी जुरअत था, 5. समान, 6 अन्धे ।

आतिश

हबीब आसा मै दम भरता हू तेरी आशनाई का,
निहायत गम है इस कतरे को दरिया की जुदाई का।

इशा

सनम बब्बे करीम मा, तेरे है हरेक ये मुब्तिला
कि अगर अलसतो बेरब्बेकुम तू अभी कहे तो कहे बला।

सगीर

जबाँ शौहरे अफजाने तहमीद हो,
अगर फैजे नैसानेताईद हो।

शरफ़

करम चाहता हू तेरा ऐ करीम,
इनायत कर ऐ गफूरुर्रहीम।

हिलाल

शह किशवरे हिन्द सुल्ताने आलम,
सुलेमाने अख्तर-नगर जाने आलम।

यह शख्स[1] तादमे-जिन्दगी[2] राकिम[3] के मुलाजिमो[4] मे रहा। फकीर[5] के अहदेशाही[6] मे छापा-खाना से मुताल्लिक[7] रहा, जब फकीर बादे-इन्तज़ा-ए-सल्तनत[8] वारिदे-कलकत्ता[9] हुआ। ब-अगवाए-मुगव्वियाने[10] कूतह-अदेश[11] दो बरस दो महीने तक किला विलियम फोर्ट कलकत्ता मे मबूस[12] रहा। बाद रिहाई यह शख्स ता-इन्तिकाल[13] मेरा मुलाजिम रहा।

शेख़ अली हज़ीं फारसी

जा ताजा जतरदस्तीय अब्र अस्त जहा रा
आबे बरूख आमद चे ज़मी रा चे जमा रा।

---

1 व्यक्ति, 2 जीवनपर्यन्त, 3 लेखक, 4 सेवकों, 5 बादशाह, 6 राजशाही में, 7 सम्बन्धित, 8 सल्तनत समाप्त होने के बाद, 9 कलकत्ता पहुचे, 10. दूसरो के बहकाने मे आकर, 11 बहकाने मे आकर, 12 कैद, 13 मरते समय तक।

मुल्ला निज़ामी फारसी

हस्त कलीदे दरे गजे हकीम,
बिस्मिल्लाहे रेहमानिर्रहीम ।

मुल्ला जामी फारसी

जदी जामी बदी चगे शिकस्त
बमिजराबे फना तारश गुसश्ता ।

इस्माइल फारसी

ऐ सिफाते तू बया हा बर जबा अन्दाख्ता,
इज्जत-ओ-ज़ातत यकी सदर गुमा अन्दाख्ता ।

शौकत फारसी

खुदाया रगे तासीरे करामत कुन फुगानम रा
बमौजे अश्क बुलबुल आनदेह आबदेह तेंगे ज़बानम रा ।

खाक़ानी फारसी

जौशने सूरत बूरू कुन दरसफे मर दा दर आ
दिल तलब कज दारे मुल्के दिल तवाशुद बादशाह ।

जहूरी फारसी

जहे बा हशमते शाही गदाई
गदायाने दरत दर पादशाई ।।

मिर्ज़ा सायब फारसी

मिन्नत खुदायरा के बतौफीके किर्दगार
अजनाफे काबा चश्मए ज़मज़मशुद आश्कार ।

सलमान सावजी फ़ारसी—

हर दिल के दर हवाए जमालश मजाल याफ्त,
अनकाए हिम्मतश दो जहाँ ज़ेरे वालयाफ्त ।

मिर्जा नूरुल ऐन वाक़िफ फारसी

ऐ ब बज्मे शौके तू नाला बहर सू साज़ हा,
रफ्ता दर हर गोश ए जा साजहा आवाज हा ।

ऐशी फ़ारसी

खुदाय तवाना के हर आचे हस्त
सरे खामए कुद्रतश नक्श बस्त ।

फ़सीही फारसी

खुदाया रोजिए ई खुद परस्ता साज़ जन्नत रा
के दोसख जन्नत अस्त आतिश परस्ताने मोहब्बत रा ।

कासिम फ़ारसी

बस के उफताद अज गमत शेरीदगी दरकारे मा
बरसरे मा खुद बखुद वामीशवद दस्तारे मा ।

नासिर अली फारसी

मी नुमायद बसके खुर्शीदे रूखश नैरंग हा
जर्रा-ए-मा चू परे ताऊस दारद रग हा ।

शफी फारसी

ऐ जाजिबे इश्क तोरा इश्के खुदाई
मजनूने तोरा सिलसिला दर सिलसिला ख्वाई ।

सय्यद हुसैन ख़ालिस फ़ारसी

चुना दा रन्दे शौके वस्ले बिस्मिल्लाह उन्वा हा
के दर परवाज आयन्द अज़ दो बाले जिल्दे दौवा हा ।

मिर्जा ताहिर वहीद फ़ारसी

गुजश्त यादे तू दोश अज दिले रमीदय मा
बेगो बेगो ब कुजा रफ्ती ई चुना बकुजा ।

तदबीरुद्दौला मुंशी मुजफ्फर अली खा बहादुर जंग 'असीर' – यह शख्स दस-पंद्रह बरस के सिन मे राकिम[1] का हमप्याला[2] और हमनिवाला[3] रहा और सोहबत मुशायरा[4] कोई ऐसे न होते थे, जिसमे उसकी और मेरी हमराही न हो बल्कि यह खिताब फकीर[5] ही का इनायत किया हुआ है । दमे-मुहब्बत भरता था और खुद को आशिको मे गिनता था । अब नही जद[6] उसके नमकख्वार मेरे बाप-दादा के रहे । मेरे अहदे[7] वलीअहदी[8] मे आशिक और मेरे जमानए-सल्तनत[9] मे मुसाहिब और दारोगाकुल[10] जिन्दानखाना[11] सरकारे अवध का और खुलासानवीस[12] तमाम कचहरियात सुल्तानी का रहा । जहाँ तक मेरे मिजाज मे दखील[13] था कि शबानारौज[14] हाजिरेखिदमत रहता था । पैंसठ बरस के सिन मे अक्द[15] किया । जौजा[16] से निहायत[17] मानूस[18] रहा करता था । जब औजाए फल्की[19] मोवदहल[20] हुए यानी अम्र[21]-इन्तजा-सल्तनत[22] अवध वाकेए[23] हुआ मै मायूस जानिबे-कलकत्ता[24] चला । यह अजबसके[25] जौजा[26] का मुबितला[27] बहुत था । हकनमक[28] मालिक यककलम[29] फरामोश करके घर मे जा चुका । मै कलकत्ते मे दाखिल हुआ । बीस बरस से उससे मुझे फिराक[30] तुरफातर[31] यह कि अब वालिए-रामपुर[32] को अपना बादशाह बनाकर यह सय्यद जादा[33] मुल्की उनका नमक खाता है । फतबरू-या-उलिल अबसार[34] यह मतला उस शख्स नमक फरामोश का है —

दिल गुनाह करने मे खारा हो गया,
जो सगीरा था, कबीरा हो गया ।
खा गया बेफायदा मुझको फलक,[35]
ऊट के मुह का मै जीरा हो गया ।

---

1 लेखक, 2 साथ पीने वाला, 3 साथ खाने वाला, 4 मुशायरे की महफिल, 5 बादशाह, लेखक ने अपने लिए प्रयुक्त किया, 6 बाप-दादा, 7 समय 8 युवराजी, 9 सल्तनत के समय, 10 कुल दारोगा, जिसे आजकल महानिरीक्षक कहते है, 11 जेल, 12 लेखन अधिकारी, 13 घुलामिला, 14 रात-दिन, 15 निकाह, 16 पत्नी, 17 बहुत, 18 मोहब्बत, 19 आकाशीय देन यानी शाही सल्तनत, 20 छूटे, 21 कार्य, 22 सल्तनत जब्ती, 23 विव्रश, 24 कलकत्ते की ओर, 25 वास्तव मे, 26 पत्नी, 27 प्रेमी, 28 नमकहलाली, 29 यह लिखने वाला, 30 दूरी है, वियोग, 31 अजीब बात, 32. नवाब रामपुर, 33 सैय्यद का बेटा, 34 ए दुनिया वालो उससे शिक्षा लो, 35 आसमान ।

कुदसी फ़ारसी

मबाशे गर्रा ब अहदे-कदीमो यारे कोहन
के हफ्ता-ए-चो शवद खार बुन शवद गुल बुन।

तालिब फारसी

यक लहजा नीस्त का मिजाह तूफा तराज नीस्त
वी दिल चो शमा त मय सोज गुदाज नीस्त ।

अहली शिराजी

खत दमीद अज लबे ऊ कारे बला बालाशुद
यारब ईं फितनए पिन्हा ज कुजा पैदाशुद।

फतेहुउद्दौला—बख्शी उल मुल्क मिर्जा मोहम्मद रजा बर्क उस्ताद मरहूम राकिम इब्ने-मिर्जा काजिम अली सुलाह—जिन्होने ताद मे मर्ग घर से कदम बाहर नही निकाला। बख्शी मजकूर मेरे वालिद के अहदे सल्तनत मे तमाम फौज के बख्शी रहे और मेरे अहद[1] मे उस्तादे आशिक रहे और बादे इन्तजाए सल्तनत हमराह आए और ज़िन्दाने[2] किला विलियम फोर्ट कलकत्ता मे भी मेरे साथ कैद हुए और उसी जिन्दान[3] मे जॉबहक[4] हुए और वक्तेदमे-वापसी[5] यह बैत और यह मतला पढकर खानए-फिरदौस[6] हुए।

मतला— बर्क जो करना था, आखिर वही कर कर उठे ।
जान दी आपके दरवाजे पर मर कर उठे ।

बैत— सास लेने मे हरेक जा से मसक जाता है तन,
बर्क बदलो जामाए हस्ती पुराना हो गया ।

कप्तान मक़बूलउद्दौला मिर्ज़ा मुहम्मद मेहदी कुबूलहम—मशविराए-राकिम[7]। अठारह-उन्नीस बरस का मेरा सिन था जो मेरा उनका साथ हुआ—मेरे मुलाजिम रहे। मेरे वालिद के भी मुलाजिम थे। मेरे अहद मे खिदमत चौकी पलग-खास[8] व मुसाहिबत[9] और छापाखाना

---

1 सल्तनत के समय मे, 2-3 कारावास, 4 मृत्यु, 5 अन्तिम समय, 6 जन्नत को सिधारे, 7. लेखक का सलाहकार, 8 शाही पलग, 9 दरबारी।

और कुतुबखाना और कर्नल राटन का तोपखाना यह सब उनके पाएनाम[1] रहा और बाद इन्तजाए-सल्तनत[2] अवध जब राकिम किला विलियम फोर्ट कलकत्ते मे मुकय्यद[3] था। ये हाजिर कलकत्ता हुए और जब राकिम ने रिहाई पाई तो ये मेरे पास मौजूद थे। हसरते[4] जियारते[5] अतबात-आलियात[6] मे इन्तकाल[7] किया। यह मतला उनका है—

मतला—छल्ले को तेरे आग से जलवा नही सकता,
ऐ गुलबदन इस वास्ते गुल खा नही सकता।

मेहरइब्ने[8] मोतमुद्दौला—

मतला— रोज बालीदा खुशी से तने दिलवर देखू,
मिस्लेगुल ताज-ओ-तर-गुलशने दिलवर देखू।

जफरशाहे-आखिर देहलवी

मकदूर किसको हमदे खदाए जलील का,
इस जा से बेजुबान है दहन काल ओ कौल का।

अख्तरशाहे-आखिर अवध—यह फकीर[9] हकीर[10] राकिम[11] व मुसन्निफ[12] व मोअल्लिफ[13] सरापा-तकसीर[14] है। पन्द्रह बरस के सिन मे वालिद जन्नत-मकॉं[15] ने वली अहद और वजीर किया। बीस बरस के सिन[16] मे तख्ते अवध पर बजाए[17] हजरते आला कायम हुआ। तीस बरस के सिन मे बिलासुद्दूर[18] जुल्म-ओ नाइसाफी व बेआजारेरय्यत[19] बे-सबब[20] तख्त से महरूम[21] किया गया। बीस बरस से कलकत्ता मोहल्ला मोचीखोला मुलक्कब-बा[22] मटियाबुर्ज मे कयाम[23] है। पचास बरस का सिन हुआ। छब्बीस महीने किला विलियम फोर्ट कलकत्ता मे नाहक[24] कैद रहा। साठ से ऊपर-ऊपर माशा-अल्ला चश्मबद्दूर औलादे जुखुरूनास[25] है। 1291

---

1 अधिकार मे, 2 सलतनत समाप्ति, 3 बन्दी, 4 इच्छा, 5 दर्शन, 6. ईराक के पवित्र स्थान, 7 देहावसान, 8 पुत्र, 9-10 इस प्रकार के शब्द लखनऊ की तहजीब मे थे। यह बात करने का अन्दाज था। बादशाह भी अपने को कहता था कि फकीर को यह कहते है, 11-12-13 लेखक, 14 पूरा गम व दर्द, 15 स्वर्गीय, 16 आयु, 17 स्थान पर, 18 बिना किसी, 19 जनता को बिना परेशानी दिए, 20 अकारण, 21 उतार दिया, 22 निकट, 23 अवस्थान, 24 अकारण, 25 एकत्रित।

हिजरी से बा-आनस गवर्नमेंट बीस हजार रुपयो मे दो दुखतरो[1] का अक्द[2] कर दिया। सुना जाता है कि इसी हिसाब से बारह दुखतरें सनेआइदा[3] मे बआमद गवर्नमेंट मुनअकिद[4] होगी। पचास बरस के सिन मे इतनी जिल्दे किताबो की तस्नीफ[5] की—

पहली—अख्तरमुल्क
दूसरी—अफसानए इश्क
तीसरी—इरशादे खाकानी
चौथी—ईमान
पाँचवी—बहरुल हिदायत
छठी—बहरे उल्फत
सातवी—बहरे मुख्तलिफ
आठवी—यह किताब 'बनी'
नवी—तारीखे मजहब
दसवी—तारीखे मुमताज
ग्यारहवी—तारीखे खास
बारहवी—तारीखे फिराक
तेरहवी—तारीखे मशगला
चौदहवी—तारीखे गिजाला
पन्द्रहवी—तारीखे नूर
सोलहवी—तारीखे जमशेदी
सत्रहवी—तारीखे दहर
अठारहवी—तजल्लिए इश्क
उन्नीसवी—जौहरे उरूज
बीसवी—हुस्न अख्तरी
इक्कीसवी—दरियाए ताश्शुक
बाइसवी—दफ्तरे हुमायू

---

1 पुत्रियो, 2 निकाह, 3 अगले साल, 4 निकाह होगा, 5 लिखी है।

तेइसवी—दस्तूरे वाजिदिया
चौबीसवी—दीवाने मुबारक
पच्चीसवी—दफ्तरे परेशान
छब्बीसवी—दुल्हन
सत्ताइसवी—सयू-ए-फैज
अट्ठाइसवी—सुखने-अशरफ
उन्तीसवी—सरीफए सुल्तानी
तीसवी—सौतुल मुबारक
इकतीसवी—इश्कनामा
बत्तीसवी—कमर मजमून
तैंतीसवी—कुल्लियाते अख्तरी
चौतीसवी—कुल्लियाते सोम
पैंतीसवी—गुलदस्ता-ए-आशिकान
छत्तीसवी—मसविदाते हिरसा
सैंतीसवी—माहीनामा
अडतीसवी—मुरक्काए फर्रूख
उन्तालिसवी—मुबाहत-ए-बैनुलनफ्स उल अकल
चालीसवी—नाजो
इक्तालिसवी—नज्मे नामूर
बयालिसवी—निसाए अख्तरी
तैतालिसवी—हैबते हैदरी
चवालिसवी—लुगत हफ्त जुबाँ, कि अभी वो नातमाम है ।
पैंतालिसवी—पाच-चार किताबे मरासी और मसाएब मजुम शोहदाय कर्बला है कि इन मरसियो का हिसाब नही किया ।
छयालिसवी—मजमुआ वाजिदिया

यह सब फकीर[1] के कुतुबखाने[2] मौजूद है और जो तनज्जुले-सल्तनत[3], गारते-बदमाशान[4]

1 लेखक, 2 पुस्तकालय, 3 सल्तनत के भूकम्प, 4 बदमाशो के नष्ट करने मे ।

मे ताराज[1] हुई वो खारिज-अज-हिसाब[2] है ।

एक हसरत नूर पर भी बहरे मूसा रह गई ।
ऐसा कुछ देखा कि आखो को तमन्ना रह गई ।

मिर्जा रफी 'सौदा'

गफलत मे जिंदगी को न खो गर शऊर है,
यह ख्वाब जेरे सायाए बाले तयूर है ।

सय्यद मोहम्मद खान 'रिन्द'

हर पर आँख न डाले कभी शैदा तेरा,
सबसे बेगाना है ऐ दोस्त शिनाता तेरा ।

जेबुन्निसा 'मख्फी'

ऐ अबरे रहमतत खुर्रम गुले बुस्ताने मा
गुफतगुए हरफे इश्कत मतला ऐ दीवाने मा ।

सदर महल 'सद्र'—जो मशमूल[3] महलात[4] हमराह-राकिम[5] है ।

मतला—बजे रुतबा शाहे वाजिद अली का,
बजे डका शाहे वाजिद अली का ।

मलकाए मुखद्दरा उजमा आलमआरा बेगम 'आलम'—मनकूहाकलो[6] सुल्ताने आलम वालदावली अहद जन्नत नशी[7] ।

महवे नज्जारा ए निगार हुआ,
तीरे मिज्गा जिगर के पार हुआ ।

विकार फारसी

ऐ बार दर हरीमे तू नजदीक ओ दूर रा
लुत्फे तू शामिल अस्त शकूरो कफूर रा ॥

---

1. नष्ट, 2 हिसाब मे, गिनती मे नही, 3 सम्बन्धित, 4 रानियो मे सम्मिलित है 5 लेखक के साथ, 6 पहली निकाही रानी, 7 स्वर्गीय ।

मीर था मुश्तार हुस्न मे उसके जो नूर था,
खुशीर्द मे भी उसी का जर्रो जहूर था ।

फ़िरदौसी फ़ारसी

यू बरगस्तआ तुर्रा-ए मुश्के नाम
गिरहदाद शबेरा पसे आफताब ।

कोकब अली 'अहद'—जन्नतनशीं[1]फर्जन्दे-राकिम[2] मनकुहा-मरकोमाबाला[3] के बतन[4] से जो मन् 1291 मे फौत[5] होकर सिब्तैनाबाद इमामबाडा तामीरकरदा-राकिम[6] मे दफन हुआ ।

तुझे बेमिस्ल बे-मानिंद और यकतए खुदा पाया,
कई तै शश जत लाकन ना ऐसा दूसरा पाया ।

कलीम फ़ारसी

बनाम खुदाए के अज शौक जूद,
दी आलम अताकर दो सायलनबूद ।

उरफी फारसी

नय मेहरे दोस्त बीनम नए कीने दुश्मनआरा,
यकतौर दोस्त दारम बेमेहरो मेहरबारा ।

सादी शिराज़ी

यारी बदस्तकुन के ब उम्मीदे राहतश,
वाजिब बुवद के सब्र कुनी बर जराहतश ।

मुशीर—यह राकिम का भी शागिर्द हुआ और हिजरी सन् 1290 मे मुलाजिम हुआ और रेहलत[7] की ।

मतला— दिल आज़ेबे इमा है हमदेखुदा
दो आलम का सुलतान है रब्बेहाजा ।

---

1 स्वर्गीय, 2 लेखक का पुत्र, 3. पूर्वोक्त निकाही रानी, 4 कोख, 5 मृत्यु, 6 लेखक द्वारा बनवाया गया, 7 देहावसान ।

सलीम फारसी

उम्रहा रफ्तो न शुद नामे जुलेखाए बुलद,
यूसुफे कूताशवद दरमिस्रा गौगाए बुलद ।

महताबउद्दौला दरख्शां—तीस बरस से ताअनम[1] मेरा मुलाजिम[2] है ।

मतला—

अहले हैरत से नबज्मे ऐश खाली हो सकी,
सैद क्योकर ताएरे तस्वीर काली हो सकी ।

ताशुद्दौला 'ऐश'—सात शख्स एक मर्तबा मेरे शागिर्द हुए । सातो का सबा-सय्यारा[3] लकब[4] हुआ । उनमे से एक यह भी है । इस्तेदाद बहुत अच्छा उरूजी[5] लाजवाब मेरा मुलाजिम भी है ।

मतला— पहले सिफते-पाक[6] मे खोल अपने जेहन को
कर साहबे-यासीन[7] से तलब[8] ताजेसुखन[9] को ।

लायकुद्दौला मोहम्मद जान शाहिद—यह भी मेरा शागिर्द तीस बरस से मुलाजिम है, मौजूँतबा[10] है । कलाम[11] उसका मेरे पास मौजूद न था । इससे कलम-अदाज[12] हुआ ।

'हुनर' दाखिल सबा सय्यारा—कुतुबखाने के दारोगा की नालायकी की जात से कलाम इसका वक्त-किताबत[13] न हुआ, मगर शायर खुशगो[14] मेरा शागिर्द व मुलाजिम है ।

शाज दाखिल सबा सय्यारा

बहारे बागे जन्नत हो न क्योकर पाव के नीचे
कि रहती है जमीन कए दिलवर पाव के नीचे ।

रूबाई— दी दिलबरे मनरफ़्ते बसद ज़ेबाई,
हज्जाम ब दुम्बाले वै अज रानाई ।

---

1 आज तक, 2 सेवक, 3. सुबह के तारे, 4 उपनाम, 5. शायरी, 6 अल्लाह की प्रशसा, 7 देने वाले, 8. माग, 9 शायरी का मुकुट, 10 अच्छे व्यवहार वाला, 11 शेर, 12 छोड दिया, 13. छपने के समय, 14 मधुर वाणी ।

गुफ्ता के वे युसतरेम मय सरे तू,
फरियाद बर आबुर्द के नाई नाई ॥

रूबाई— शमसे फलके बुलन्दो बेमिस्ल यही,
आँ देगे दही बरसरे तू चत्रशही,
अज हुक्कए याकून गौहर मीरेजी
वक्त के बेगोई के दही लेव दही ।

पहली रूबाई मुतराशी[1] की सिफत मे है, कि नाई हज्जाम को कहते है । दूसरी रुबाई दहीवाली की ढेडी और दही बेचने की सिफत मे है। मालूम नही किन उस्तादो की मौजू की हुई है ।

रूबाई— लू-लू अज नरगिस फरोबारी दो गुलराआबदाद,
बज तिगरगे रूहे पखर मालिशे उन्नाब दाद,
सक्फे असतूने बिलूरी सेबे ख्वारजमी गिरिफ्त,
गोशए काकुम गिरह बरबिस्तरे सजाब दाद ।

माशूक का हाथ गाल के नीचे रख के और तेवरी चढा के और दाँतो से होठ दबा के रोने की तारीफ मे है । मालूम नही किसकी है ।

सोलहवीं नकल–दरबार रसी[14] और अजनबी की

पगडी हाथ की लपेटे हुए इस तरह की हो, जिसका एक सिरा जमा करके और इकट्ठा करके बतौर जेगा[3] बालाए-दस्तात[4] रखे और साथ वालो मे आगे बढ के कमर पटका यानी बहुत मोटी चादर कमर से लपेटकर कहे—यह कौन है ?

यह तो दरबार रसा के मामा है और महलदार और मेहतरानी और सुकने तक से मुलाकात है । सारा दरबार इनको पहचानता है । यह सारे दरबार को पहचानते है । यह कहकर चुप हो और दूसरा शख्स बढे और कहे, 'चलिए आपको याद किया है ।' बस यह फौरन

---

1 बाल काटने, 2. दरबार मे आने जाने की, 3 पगडी के ऊपर लगाया जाता है, 4 पगडी के ऊपर।

होठ हिलाते हुए और चुपके-चुपके दुआएँ अपने ऊपर दम[1] करते हुए रुख्मारो[2] पर और चेहरे पर हाथ फेरते हुए बाजू और बगल कुशादा[3] किए हुए पाच-चार मर्तबा उसी महफिल मे मुतवस्सत[4] कदमो मे आमदोरफ्त[5] करके सलामी करना शुरू करे।

चारो तरफ बे-वास्ता[6] और बे-सबब[7] भी सलाम करते जाएँ। सलाम करने मे इस कद्र झुका करे कि वो दस्तार[8] की जेगा[9] बनाए हुए हर मर्तबा पेशानी[10] पर गिर जाया करे। बाद अनफिराग सलाम[11] सीधा हुआ करे। इस तरह से सर ऊँचा किया करे कि वो जेगा मसनवी फिर अपनी जगह पर आ जाया करे। इसी तरह से पचास-चालीस सलाम से कम न करे। साथ वाले कहते जाये—सुबहान अल्लाह्। दरबार रसी इसका नाम है। इसके बाद कहे कि ये वो है, जिन्होने तमाम उम्र दरबार का नाम नही सुना। पहले पहल आने का इत्तिफाक हुआ है। यह कहकर खामोश हो और फिर एक शख्स कहे—'चलिए याद किया है।' यह सुनते ही परेशान हो जाए और पायजामा घडी-घडी खिसकाता जाए और पगडी भी उलट-पुलट कर डाले। चद मर्तबा मुह फुला-फुलाकर जम्हाई ले और एक हाथ से जम्हाई लेने के वक्त चुटकी बजाते हुए जोर-जोर से और खासते और खॅखारते जाये और तडाक से छीक दे। अगरखे के बद खोल डाले और कभी बाध ले और कभी सीधा हाथ मुह पर पेशानी से[12] तासुखुनदान[13] फेरे और कभी उलटा हाथ जनखदान[14] से पेशानी तक। उस वक्त साथ वाले कहे—'ऐ साहब जल्दी चलिए' बल्कि दो-एक आदमी हाथ पकडकर घसीटे। उस वक्त ये हाथ छुड़ाए और पिछले कदमो को हटाये और मचल जाये। दरबार मे आते ही कहे—'मालिक का चेहरा किधर है' और साथ ही जम्हाई ले और कहे—'हाय बाजी तुम कहाँ हो ?' आखिरकार लोग धक्के देकर निकाल दे।

सत्रहवी नकल–रागो की तस्वीरो की

एक घूँसा तान के गाल फुलाकर बायाँ पाव पीछे बढाए। साथ वाले कहे—'यह कौन है ?' जवाब दे—'यह कालँगडा है।' दाहिने हाथ से कान पकडकर गाल फुलाकर कहे, 'यह कानडा

1 पढते हुए, 2 गालो, 3 फैलाए हुए, 4 नपे-तुले, 5 आ–जाकर, 6 बिना किसी को जाने-पहचाने, 7 किसी कारण के बिना, 8 पगडी, 9 पगडी पर बाधने वाला जेवर, 10, माथा, 11. काफी सलाम करने के बाद, 12 माथे मे, 13 होठो तक, 14 ठुड्डी।

है ।' तिरगा बनकर कहे यह तिलग है । बालिश्त भर की लकडी दूसरे आदमी को अडाकर कहे—यह अडाना है । दाहिने हाथ की चुटकी से तारीफ करके कहे—यह सोहनी है । नितम्ब ऊँचे करके सर जमीन पर रखके कहे यह गारा है । मिट्टी मुह पर मल के कहे—यह मुलतानी है । कलाबाजी खा के कहे—यह नट है । डडे पर डडा जोर से मारके कहे—यह खट है ।

अट्ठारहवी नकल–बजरा[1] खेने की

एक आदमी नितम्ब टेक के और डाड लकडी के बनाके हाथ बतरीके नाव खेने के लेकर मशरिक[2] रुख[3] बैठे । दूसरा इसी तरह मगरिब[4] रुख और दो जुनूबरोया[5] और दो शुमालरोया[6] और तीन बीच मे रौपुश्त[7] मिलाकर और मगरिबरोया आदमी के गले मे एक सिरा दुपट्टे का लपेटे और दूसरा मशरिकरोया आदमी के गले मे और बीचवाला एक बडी सी छड से दुपट्टे के बीच को ऊँचा किए रहे । तासूरते-मस्तूल[8] पैदा हो और हाथो से खेते जाएँ । चूतडो से खिसकते जाये और यह चीज लय-सुर मे गाते जाएँ और ताल मे खिसकते जाये—

आस्ताई—बजरा वही लगा दे माझी ।

अन्तरा—इस बजरे मे कौन-कौन बैठा ।
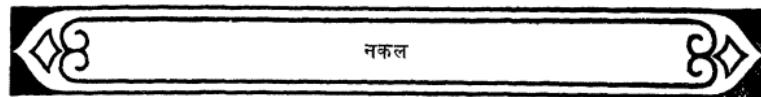
हजरत बेगम नवाब ।

उन्नीसवी नकल—ब्राह्मण नाबीना[9] और उसकी भावज की

एक शख्स गले मे तीन-चार तुलसी की मालाये डाले और कुश्का[10] बतौर-हुनूद[11] पेशानी पर खीचे और एक शख्स उसका नौकर रामचीरा नाम बने ।

ब्राह्मण नाबीना आखे बतौर अधो के बनाए और धोती बाधे हुए हो । रामचीरा कहे—'महाराज ! चलो गगा स्नान कर आओ ।' वह कहे—'अच्छा ।' हाथ पकडकर दो-चार कदम चलाकर बिठा दे । फिर कहे—'महाराज ! यह गगा जी है । लो स्नान करो ।' वह कहे–'राम-

---

1 सजी-धजी नाव, 2 पूरब, 3 और, 4 पश्चिम, 5 दक्षिण की ओर मुह करके, 6 उत्तर की ओर, 7 पीठ से पीछे, 8 इच्छानुसार शक्ल, 9 अन्धा, 10 टीका, 11 हिन्दुओ के समान ।
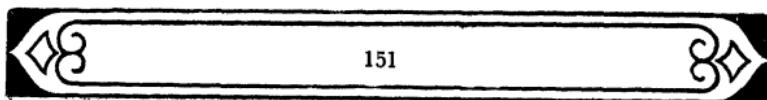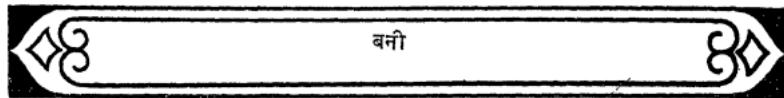
चीरा। यह मोरा छुटकी माला लेव, यह बडकी माला लेव।' यह कहकर गले से सब माले उतारकर रामचीरा के हवाले करे। फिर खडा होकर बतरीके पूजा पानी मे उगलिया डुबो-कर बडबडाता जाए। राम-राम कहता जाए और चार बूदे आसमान की तरफ, चार जमीन की तरफ, चार दाहिनी, चार बाएँ फेके। बमभोला कहकर गाल फुलाकर नाक पर कलमे की उगली लम्बी धरकर टूलन और अगूठा ठोढी तक पहुचा कर हमहमा बमबम का करे और फिर बैठकर पुकारे—रामचीरा। वह जवाब न दे। तीन चार दफा के पुकारने मे जब वह आए तो यह उसकी गर्दन पकडकर एक लात हवाई मारे और वह उसके काबू से निकल जाए। लात खाली जाए। दो-तीन दफा इसी तरह लाते मारे और वह निकल-निकल जाया करे। फिर पूछे—भौजी आई। रामचीरा कहे—महाराज आई है। उस वक्त रक्कास पेशवाज घुघरू पाव के बजाता हुआ, झम से उसके पास बैठ जाए। वह ब्राह्मण नाबीना अधो की तरह कभी कमर छूकर आह करे और कभी सीने पर हाथ धरके और जब कोई खखार दे या छीक दे, यह झट से भावज के पास से हाथ भर के फासले पर अलग हो जाए। जब लम्हा दो लम्हा का सुकून हो तो राम-चीरा को टाले और कहे कि रामचीरा, वो कहे--हाजिर महाराज। यह कहे—'दरख्त तले जा। वहाँ से लडवा मोतीचूर के खाने को ले आ।' जब वह लड्डू लेने जाए तो यह फिर भावज से वही हरकते करने लगे और जरा से खुटके मे अलाहदा हो जाया करे, ताकि तीन-चार मर्तबा यही हरकते करे—इसके बाद भौजी चली जाए। रामचीरा आए। यह रामचीरा को पुकारे। वह जवाब दे। यह कहे—'मोरी माला ला।' वह कहे—'लो महाराज। यह छुटकी माला है। यह बडकी माला है।' आखिर माले पहनकर महफिल से चला जाए।

बीसवी नक़ल—जहाँगीर बेग नकटे की

नाक पर एक सफेद पट्टी बाँधकर और बे-दामन का अगरखा पहन कर और पहरी गदके[1] हाथ मे लेकर जिस वक्त रक्कास नाचता हुआ आए और एक चमडे के पैताबे मे एक धज्जी की गिरह लगाकर दाहिने बाजू पर बाधे और कहे कि अबे दुत[2] इससे और नाच। देखने वाले बाके से तमाचा बारहा कडक पलट के हाथ तीन दफा नाच कर पहले वाला बाका पहरी गदके फेककर तम्बाकू बेचने लगे। पुकारकर कहे—'कडवा तम्बाकू' और महफिल से चला

---

1. पहरे के समय मे लेने वाली लकडी, 2 और तेज।

जाए । फिर साथ वाले पूछे—'खा साहब आपने अगरखे मे दामन क्यो नही रखे ।' ठठ्ठा मारकर[1] और गतके की एक चोट रसान से उसके सर पर मारकर कहे कि 'अबे इस वास्ते कि कोई महशर[2] मे दामनगीर[3] न हो ।' फिर वह पूछे कि बाजू पर यह क्या बाधा है—फिर एक गतके की चोट धीरे से उसे लगाकर कहे—यह मेरा जौशन[4] है । फिर गाने-बजाने वालो से कहे—'मेरी उगली जब खडी हो, तुम सब खडे हो जाओ । मेरी उगली जब औंधी हो, तुम सब औंधे हो जाओ ।' आठ-सात दफा इसी तरह लिटाए-बिठाए और आप ठठ्ठे मारता जाए और एक-एक चोट गतके की सबके सरो पर धीरे से लगाता जाए । फिर पूछे तुम सब क्या गाते हो । वह कहे—'विनती मोरी मान ले ऐसे घर न रह सैया ।' यह कहे—'बडचोद तुम्हारी मजाल है कि हमको अपने घर से निकाल दो ।' वह हाथ बाधकर अर्ज करे कि यह आपसे नही कहते है—यह तो एक गाने की चीज है । फिर एक-एक गतके की चोट सबके सरो पर धीरे धीरे लगा दे । गाने वाले यही चीज गाये जाये—

आस्ताई—मिनती मोरी मान ले ऐसे घर न रह सैया ।
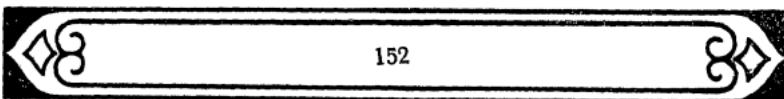
अन्तरा—सास ननदिया और जिठानिया बात-बात पहनान ले ।

आखिरकार इसी तरह महफिल से दफा हो ।

इक्कीसवी नकल—लौंडे के बरर[5] जाने की

एक मालिक ने एक शोहदे का लौडा नौकर रखकर नालायन[6] बरदारी[7] की खिदमत अता की और फरमाया कि जिस वक्त मै नाच देखा करूँ तो मेरी दोनो जूतियाँ हाथ मे लिए हुए मेरे पसेसर[8] खडे रहा करो । उसने कुबूल किया । मालिक नाच देखने को बैठे । नाच होने लगा । लौडा नग-धडग जूतिया पतियादो की बनाकर सर पर लिए हुए गाल फुला-फुलाकर मालिक की नकले करने लगा । कभी लात मारने को पाव उठाने लगा । कभी पतियादो को देखकर बडबडाने लगा । आखिरकार ऊँघा और ऊँघकर मालिक के सर पर गिरा । इसके बाद मालिक के गले मे दोनो टागे उलझाकर आगे गिर गया । मालिक तो छूट गए । उसके बररने का यह आलम हुआ । ऐसा जमीन पर पडा था । अगर एडियाँ जमी पर लगाते थे तो सर से मयगर्दन ऊँचा हो जाता था । अगर पाव छोड देते थे तो सर जमीन पर और पाँव

---

1 ज़ोर से हसना, 2 कयामत के दिन, 3 दामन न पकड ले, 4 कवच, 5. ऐंठ जाना, 6. जूते, 7 उठाना-धरना, 8 सर के पीछे ।

जमीन से ऊँचे हो जाया करते थे । अलमुख्तसर[1] जब साथ वालो ने चिल्लाकर गुल[2] मचाया इस तरह से कि—अबे लौडे । अबे लौडे । अबे लौडे । उस वक्त लौडे होशियार हुआ और महफिल से भाग गया ।

बाईसवी नकल—बन्दर बनने की

एक डुगडुगी जैसे बन्दरवाले बजाते है तमाशे के वक्त हाथ मे ले और उमे बजाता जाए और दूसरे आदमी को इस तरह बदर बनाए कि बानात[3] की लम्बी टोपी तग[4] फुन्ना लगी हुई, जैसे कि बन्दर को तमाशे के वक्त पहनाते है—उसको पहनाएँ । एक कुर्ती पालबाफ[5] सफेद नयनसुख[6] के अस्तर के पैबन्दो की वो उसको पहनाए कि जिससे सीना सारा खुला रहे और एक जाघिया पहनाए और एक लकडी हाथ मे देकर कहे कि इसे पेट पर रखो । इसका एक-सिरा दाहिने शाने पर दाहिने हाथ से और दूसरा बाएँ पहलू पर बाएँ हाथ से पकडे और कद छोटा करके पाँव निहुडाकर बन्दर की चाल चले और कभी लकडी फेक दे और दाहिना पाव किसी और चीज की तरफ बढाकर पाव की उगलियो को हरकत दे । कभी किसी तरफ खुर-खुर करे और कभी बाये हाथ की उगलियो से जल्दी से पेट खुजा ले और कभी जमीन का दाना चुन के जल्दी जल्दी मुह मे रखता जाए और कभी जम्हाई लिए जाए और कभी बनाने वाले के गिर्द चारो हाथ पाव से फिरे और टहले और बनाने वाला उसकी गर्दन मे एक रस्सी बाधे और कहे—सलाम कर ले, सलाम कर ले । यह जल्दी से मक्खी उडाने की तरह सर पर हाथ रखके उतार ले और नचाने वाला कहे—'मियाँ का जोडा लाओ-मियाँ का घोडा लाओ । मियाँ का घोडा लाओ ।' यह कहता जाए और गठरी उनके कपडो की खोलता जाए । जब टोपी निकाले तो कहे कि भाई कोई छीकना पादना नही, जिस वक्त टोपी पहनाए तो कोई छीक दे । बन्दर जल्दी से टोपी उतारकर फेक दे । इसी तरह चद मरतबा इत्तफाक हो । आखिरकार तमाम जोड़ा कपडे का पहनाए और कहे—छोटे अन्ना के देवर, बडे अन्ना के खसम, चलो सफर को चलो । वो उसी तरह लकडी पीठ पर थाम के कोतह कद करके टागे चीर के दो-तीन दफा नाचने वाले के गिर्द फिरे और बैठ जाए फिर लेट जाए—चारो हाथ-पाव फैलाकर नचाने वाला कहे—मियाँ के गोली लगी मियाँ के गोली लगी—फिर इसी तरह से महफिल से बाहर हो जाए ।

---

1 सक्षिप्त यह कि, 2 शोर, 3 बिनी हुई, 4. छोटा, 5-6 कपडे का नाम ।

तेईसवी नकल—बनिये और बांके की चौसर खेलने की

एक बनिया बने और दूसरा बाका । साथ वालो मे से एक शख्स उठकर सरे महफिल यह सुखन[1] जबान पर लाए कि बनिए की और बाके की यू चौसर खेली जाती है । बनिए तो डरपोकने होते है । जब तीन काने आये, बनिया कहे—खा साहब, तीन काने है । बाका कहे—नही पौ बारह है । बनिया कहे–खा साहब चीती करते हो । तीन काने है । बाका कहे–अबे दुत पौ बारह ही सही । इस नकल मे एक रुमाल को चौसर करार दे । आखिरकार साथ वाले कहे कि हमारे मकान पर से दोनो साहब उठ जाओ । कोतवाली प्यादा आनकर धन्ना देगा तो हम मुफ्त कशाकश[2] मे पडेगे । यह कहकर दोनो को उठा दे ।

चौबीसवी नकल—सालगिरह मे बुलाने की

एक बीबी ने एक देहाती नौकर को एक बीबी के पास खाना होने का हुक्म दिया और कहा—'तू जा छोटो को दुआ और बडो को सलाम कहना और कहना मिस्सी, काजल, तेल-फुलेल से बन-सवर रहना । कल मेरे मियॉ की सालगिरह है । हम कहार भिजवाएँगे, वे तुमको ले आएँगे ।' यह नौकर उन बीबी के मकान पर आया और पुकारा । बीवी देवढी पर आयी । कहने लगी—क्या है । नौकर कहने लगा कि हमारी बीबी ने भेजा है । सलाम कहिन है, दुआ मागिन है और कहिन है नचनी-खुसरनी दात-निकसनी कर रखियो । कल मियाँ की निकलेगी गाठ । खुदा के कहर आयेगे लिए चले जाएँगे । यह सुनकर बीवी ने बाल भी खसोटे, सर भी नोचा, रोयी-पीटी । यह कहकर कि अफसोस कल खुदा का कहर ले जाएगा । आखिरकार सही दरयाफ्त हुआ । नतीजा यह हुआ कि खुदा पराए देश की जबानो की नकल न करवाए वरना ऐसा ही होता है ।

पच्चीसवी नकल—सतरिख के मेले मे जाने की

छह-सात आदमी छडियाँ हाथ मे लेकर उसमे कपडे की धज्जियाँ बाधे और आगे-पीछे यह गाते-चले—

---

1 बात, 2 परेशानी ।

मिसरा अल-मुसन्निफ[1]—'मुसलमानो की सुत रखे खुदा उस बहुम सतरिख पर।'

छोटी-छोटी डफलिया हाथो से बजाते जाएँ और तीन-चार चक्कर मे मेले मे पहुच जाए और वहाँ मुल्लाजी आपस मे झगडा करे। एक कहे—मै जियारत[2] करने जाऊँगा। मुझे क्या देते हो। यह कहे—सेर भर चावल, अढाई सेर गुड। दूसरा कहे—मुझे क्या देते हो। वह कहे—आधा सेर चावल डेढ पाव तिल। तीसरा कहे—मुझे क्या दोगे। वो कहे--पाच सेर भर चावल। अलगरज इसी झगडे मे महफिल से बरखास्त कर दिए जाए।

छब्बीसवी नकल—छेलबदारो की

तम्बूरा और सितार हाथो मे लेकर दोतारे पर यह चीज़ गाए और कलाबाजिया खाते जाए—

अस्ताई—मै अपने सब मतालिब सैय्यदे अबरार को सौपू।

सत्ताइसवी नकल—लखनऊ की भटियारिनो की लडाई की

छह-सात औरते इकठ्ठा हो। कोई छाज हाथ मे ले, कोई सूप ले, कोई चलनी और कोई कफगीर ले, कोई कागज़ का छोबडा बनाकर एक रुख काला कर दे और दूसरा सफेद रखे। कोई लुकटी ले और एक मुसाफ़िर बने।

उस मुसाफिर को एक अपनी तरफ घसीटे और कहे—मिया मुसाफिर मेरे यहा ठडी छाव नीम की और ठडा पानी है।

दूसरी कहे—तुम मेरे यहा चलो।
तीसरी कहे—मुसाफिर मेरा।
चौथी कहे—तुम सब झक मारतिया हो। यह मेरा है।
पाचवी कहे—देखू तो तुम क्योकर ले जाती हो।
छठी कहे—हाथ भर का डडा कर दूँ जो उसे छुए।
सातवी कहे—मस्तानियो क्या मजाल है, जो इस मुसाफिर को कोई हाथ लगाए।

---

1. लेखक द्वारा लिखी गई पहली पक्ति, 2 दर्शन करने।

आखिकार नौबत गाली की पहुची तो यू कहे—चूतड हवाल ।

एक नीम की टहनी हिलाती जाए और कहे—तेरा यह हवाल ।

दूसरी कागज के चोमडे को पाचो उगलियो मे पहन कर सियाह सफेद दिखाती जाए, सुबह-ओ-शाम बनाती जाए और कहे—तेरा यह हवाल । तीसरी छाज बजाये और यही कहे ।

चौथी चलनी बजाए और यही कहे । पाचवी कफगीर नचाए और यही कहे ।

छटी लुकटी हिलाए और यही कहे और लडती जाए । यहा तक कि मुसाफिर बेचारा इस लडाई से डरकर सर पकड कर वहा से भाग जाए ।

अट्ठाइसवी नकल—गोगामीर के मेलेवालो की

पाच-सात आदमी कपडे की आहिनी[1] जजीरे बल देकर बनाए और अपने बदन भर मे घुमा-घुमा कर मारते जाए और पाच सात आदमी डोरो बजाते जाए और यह गाते जाये ।

देवी चलत भवनिया मेरी अबलामान ।
कृपा करो, राम सेवा मेरी अबलामान ।
लडवा ले बलवासिना मेरी अबलामान ।

पाचो भाई और जितना पतली आवाज बनाकर नाक से गाए, उतना ही उनके मजहब मे हुस्न है । कैसा ही परछत्ता जवान हो मगर यह तकल्लुफ है कि आवाज मिनमिनाने वाली हो ।

उन्तीसवी नकल—हमसाया के सावन गाने की और दूसरे हमसाए के खफ़ा हो जाने की

शिद्दते-बारिश[2] मे एक हमसाया गरीब की दीवार गिर पडी । नुकसान हुआ । दूसरा हमसाया गाने लगा—'लखमनिया बूदन बरसे' । वह गालिया देने लगा कि मेरा तो नुकसान

---

1. मजबूत, 2. अत्यधिक बरसात ।

कसीर[1] हुआ और तू लाख मन की बूदे बरसाने मे अब भी बाज नही आता । वाह-वाह, बकरे की तरह मे-मे, मुर्गे की तरह रे-रे । अब मै मारने लगूगा—चल चुप ।

तीसवी नकल—भाडो की और गवईया के कुत्ते भौकने की और नायिका की कुतिया के भौकने की

भाड का कुत्ता यो भौकता है—दुन हक सादी अफ-अफ । गवैइए का कुत्ता यो भौकता है । अलफाज आलाप मे और हर राग मे—रैना न ता त ना ना नोम ताअफ ताना तोम तना तोम अफ अफ अफ ।

नायिका की कुतिया यो भौकती है—चित पड जाए और चारो हाथ-पाव हिलाती जाए और कहे—
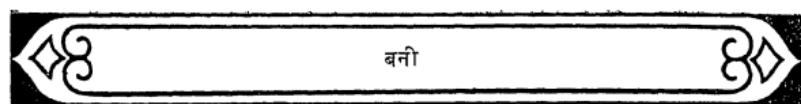
तुम पैसा न दो कौडी न दो, यूँ ही मुफ्त मेरे पास रह जाओ—अफ अफ अफ अआ अआ अआ ।

इकतीसवी नकल—एक नौची[2] के कुत्ते के सूँघने के वक्त यार के तसव्वर मे सोते मे बर्राने की

एक नायिका की नोचीमुबनजुल[3] घर का काम करके पतीलिया माज के खाना पका के यार[4] के तसव्वुर[5] मे वही चूल्हे के पास सो गई । एख्तियार[6] इतना न था कि अपने पास से कुछ खर्च करके उसको बुलाती और मजे उडाती बल्कि नायिका[7] की कदफन[8] थी कि उसकी सूरत भी देखने न पायी । यह तो उस यार नायाफ्ता के ख्याल मे पडी सो रही थी । एक बाजारी लेडी कुत्ता जब पतीलिया चाट चुका तो उसके मुह को भी सूँघने लगा, उसका हाथ जो उसके कानो पर पडा तो बर्राने लगी । कहने लगी कि वाह आज तो लटपटी पगडी बाधकर आए हो । कुत्ते ने खफा होकर एक पजा मारा । नाखूनो पर जो उसका हाथ पडा, कहने लगी—वाह, आज दसो उगलियो मे मिजराफ[9] पहनकर आए हो । कुत्ते ने पलटकर टाग

---

1 बडा, 2 तवायफ, 3 कुल, 4 प्रेमी, 5 ख्यालो, 6 बस मे, 7 वेश्या, 8 से डरती थी, 9 सितार बजाने का टुकडा ।

उठाकर उसके मुँह मे मूत मारा। एक दफा बिलबिलाकर उठकर खड़ी हुई और कहने लगी—वाह्-वाह्-वाह् आप तो नही आते है, कुत्तो को छोड-छोड देते है।

बत्तीसवी नकल—अग्रेजी जबान की

एक शख्स कहे कि अग्रेजी जबान मेरी समझ मे नही आती। दूसरा जवाब दे फिर क्या मालूम होता है। यह कहे कि मुझे तो यह मालूम होता है अग्रेजो के बोलने के वक्त कि खातम बदे की छत मे चूहे खडखडाते है।

तेतीसवी नकल—दो फाजिलो के मिजाह् की

एक फाजिल[1] का नाम मुल्ला बाकर था और दूसरे का मुल्ला ताहिर। दोनो राह् मे मिले। ताहिर ने कहा--सलाम वालेकुम बाकर बकरसी[3] मुस्तक है। मुल्ला बाकर ने जवाब में सलाम देकर कहा—फिलवाके[4] वही बकर कि फुजला[5] जिसका ताहिर[6] है। वह अपने राह् पर चले गए और वह अपनी राह् पर।
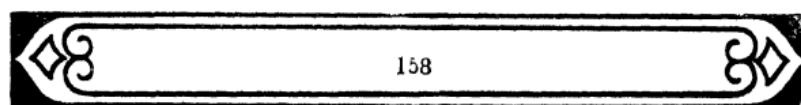
चौतसवी नकल—एक मुगन्नी[7] के बदूक की आवाज से डरने की

एक गवैय्ये से कहा—तुम्हारे सामने बदूक छोडे। उन्होने कहा, जरा ठहर जाइए। मै कानो मे दोनो उगलिया दे लू। जब दोनो उगलियाँ दोनो कानो में दे चुके तो चिल्लाए—चल छोड दे।

पैतीसवी नक़ल—हवा के मोढे पर बैठने की

दीवार से पीठ लगाए और इतना कोताह् हो जितना मोढे पर बैठने से छोटा हो जाए और दाहिना पाव बाये पाव पर धर ले और अगाडी चादर से ढाक दे। साफ मालूम होगा कि मोढे पर बैठा है।

---

1 विद्वान, 2. मजाक, 3. बकरे जैसी, 4. इस समय, 5. टट्टी, 6. पवित्र, 7. गायक।

छत्तीसवी नकल—तबीब के ऐबो की

तबीब मे भी खुदा ताला ने कई तरह के ऐब पैदा किए। अगर ये ऐब न होते तो क्या खूब होता और जिसमे ये ऐब नही वह तबीब नही और अब तो ये ऐब हुनर की जगह समझे जाते है। यह कहना चाहिए कि जिनमे यह हुनर नही है। वह तबीबपने से खाली है और आप देख लीजिए कि यह हुनर बिलफेल[1] तबीबो मे मुरव्वज[2] है। हमने तबीबो मे. देखे या घोडो मे देखे। पहले—कमखोर, कमखोर के मायने क्या ? सेर भर का पुलाव खा गए बाद उसके पेट बजाकर कहते है—जरा मेदा कडा रहा। दूसरे शबखोर क्या मायने—जब तक लालटेन साथ न चले हकीम साहब को सूझता नही। तीसरे कमरी, कमरी के मायने ये है, बे-तकिया हकीम साहब बैठ नही सकते। चौथे- -कोहना लग—वह क्या है, बे जरीब लिए हकीम साहब चल नही सकते।
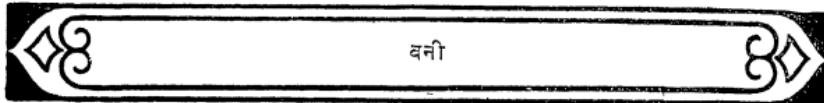
फसल सातवीं चद नकलों मे

हबशी की टोपी की नकल

एक बादशाह ने एक औरत को लाख रुपयो के कीमत की एक टोपी इनायत करके इरशाद किया कि तमाम दुनिया मे जो शख्स खूबसूरत हो, उसको यह टोपी पहनाकर मेरे सामने ले आ। वह औरत तमाम कलमरविलायत[3] मे ढूढती फिरी। कोई आदमी खूबसूरत

---

1 अवश्य ही, 2 विद्यमान, 3 दुनिया।

नोट: फसल छठी मे लेखक ने कुछ ऐसी नकलो का वर्णन किया है जो नकले कम और सच्ची घटनाए अधिक है। कलकत्ते मे लेखक ने यह घटनाये अपनी आखो से देखी थी। इनघटनाओ की नकल करना असम्भव है। उनमे अश्लीलता का पुट अधिक है। लेखक ने बेलाग बिना कुछ छुपाए लिख दिया है। इससे उनकी सफाई पसन्द तबियत का अन्दाज होता है। पर उसे यहा पर दिया जाना सम्भव नही है। अत छोडा जा रहा है।

उसकी निगाह मे न समाया । आखिरकार अपने फरजन्द[1] के सर पर जो हब्शी और निहायत[2] कियामजर[3] था, वह टोपी पहनाकर बादशाह के सामने ले आई और अर्ज की—बादशाह सलामत, मेरी नजरो मे इसमे बढकर खूबसूरत कोई न ठहरा । ठीक ही कहा है किसी ने कि माँ की नजरो मे औलाद से ज्यादा खूबसूरत और कोई नही होता ।

अगली नकल—कुर्सी के बे-अक्लो की

कुर्सी एक कस्बा है कस्बाते लखनऊ मे, वहाँ के साकनीन[4] निहायत कमअक्ल होते है और वहा जो फिलजुमला[5] अक्ल रखता है, उसको लाल बुझक्कड कहते है और अमूर[6] मुश्किल मे उसकी तरफ रुजू[7] करते है और उससे फतवा[8] लेते है । एक दिन मिट्टी पर ऊँट के पाव का निशान देखकर सब बाशिन्दे[9] वहा के हैरान और ताज्जुब मे हुए और आपस मे मशविरा करने लगे कि यह किस जानवर के पाव का निशान है । हरगिज बाब-ए-मकसद[10] वा[11] न हुआ । लाचार होकर लाल बुझक्कड को लाए और उनसे कहने लगे कि हम लोगो की समझ मे नही आता कि ये किस जानवर के पाव के निशान है । लाल बुझक्कड ने घटा दो घटा खूब गौर करके जवाब दिया कि तुम सब न घबडाओ । मै पहचान गया ।
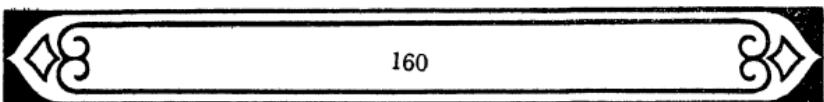
जाने सब कुछ लाल बुझक्कड और न जाने कोय ।
पाव मे चकिया बाधकर कही हस न कूदा होय ।

अगली नकल—उन्ही बेवकूफो की

लम्बे कद की एक बहू ब्याह कर लाए । दरवाजा घर का छोटा था । लम्बी दुल्हन देखकर सब सोच मे पड गए । सबकी यह सलाह हुई कि थोडे-थोडे पाव बहू के कम कर डालो । बात कुछ बनी नही । औरो ने कहा—बडे बेवकूफ हो भाइयो, दरवाजा बुलन्द करो । आख़िर दरवाजा ऊँचा किया गया, और तब बहू दाखिले रवाना[12] हुई । यह किसी ने न कहा कि बहू झुककर निकल जाओ ।

---

1 बेटे, 2 अत्यधिक, 3 बदसूरत, 4 वासी, 5 यदि, 6 कार्य, 7 झुकते है, 8 सलाह, 9 वासी, 10 उम्मीद का दरवाजा, 11 खुल न सका, 12 घर ।

अगली नकल—राकिम-उल-हुस्फ[1] के बड़े जद्दे अमजद[2]-वजीरे-अनवर नवाब सआदत अली खाँ जन्नत-आरामगाह[3] की

मेरे जद्दे अमजद वजीरूल मुमालिक सआदत अली खा जन्नत आरामगाह, ने जो कुर्सी के साकनीन की ऐसी-ऐसी नकले हिमाकत[4] और बे-अकली की सुनी, फरमाया सब झूठ है। जी-अकलो[5] को फह्म[6] कही खता[7] नही करता। खुद्दाम[8] ने अर्ज की—अल् अम्र फौकुलअदब मगर खुदबन्दे-नेयमत पीरोमुर्शिद, वहाँ की हवा को खुदा ने ऐसी ही तासीर[9] बख्शी है। फरमाया—मै खुद जाऊँगा। तासीर का कायल नही हू। यह फरमाकर घोड़े पर सवार होकर बेहश्मोखदममुर्जरिद[10] तशरीफ ले गए। जब चन्द कदम कुर्सी की राह मे रह गये ख्याल आया शायद यहाँ की वबा[11] मुयस्सर[12] न हो जाए। टोपी बगल मे दबाकर सरपट घोडा डाल दिया। जब कुर्सी की हुदूद[13] से निकल गए टोपी सर पर रखकर फरमाया कि लाहौले-बला-कुव्वत! झल्ला बिल्लाह! पहली बेवकूफी यह हुई कि अपनी दासियत[14] मे वहाँ की हवा से परहेज किया। मगर सरपट घोडा डाल के करोर चद हवा ले ली और दूसरे सरबरहना[15] करके दिमाग को भी हवा का आशना[16] किया।

बेशक ओ-शुबह यहाँ की हवा आदमी को लाए-अकल[17] करती है।
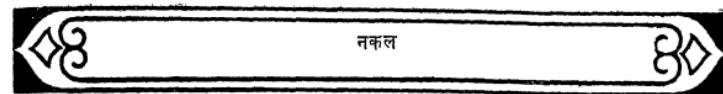
अगली नकल—खूबशुद के बैल नबूद की नकल

एक बादशाह ने एक कस्बे मे गुजर किया। वहाँ के मुलकी मौलवियो ने बाहम[18] मशविरा[19] किया कि बादशाह के दाखिले की नज्र[20] क्या देना चाहिए। किसी ने कहा कुछ, किसी ने कहा कुछ। आखिर यह तय करार पाई कि पद्रह-बीस टोकरी बेल की नज्र ले जाना चाहिए। फिर यह भी राय बदलकर यह करार पाया कि पचास टोकरी प्याज की बतरीक नज्र दरे दौलत-सराय-बादशाही[21] पर ले जाना चाहिए। अलमुख्तसर पचास टोकरे प्याज के लेकर वह दो-तीन मौलवी दरे दौलत सराय बादशाह पर हाजिर हुए। बादशाह उस वक्त शिकार खेलने

---

1 यह शब्द लिखने वाला लेखक, 2 पड़दादा, बड़े दादा, 3 स्वर्गवासी, 4 मूर्खता, 5 बुद्धिमानो, 6 ज्ञान, 7 गलत, 8 सेवक, 9 प्रभाव, 10 स्वय, 11 बीमारी, प्रभाव, 12 लग न जाय, 13 सीमा, 14 अपने आप मे ही, 15 नगा सर, 16 दोस्त, 17 बुद्धिहीन, 18 आपस, 19 सलाह, 20 तोहफा, 21 बादशाह जहा आकर ठहरे।

को गए थे । मलका[1] मौजूद थी । मलका से अर्ज की गई कि फला कस्बे के मौलवी पचास टोकरे प्याज की नज्र लाए है । मलका बहुत हसी और फरमाया—सच है । बादशाह के काबिल और लायक यही नज्र थी । उनको मय नज्र सामने हाजिर करो । अलमुख्तसर मय टोकरो के वह तीनो मुलकी मौलवी बमुश्किल दराज[2] मलका ने फौरन ख्वासो को हुक्म दिया कि उनकी दाढियो का एक-एक बाल नोच डालो और यही प्याज उन पर खीच-खीचकर और तान-तान कर मारो । ख्वासो ने हसबे-हुक्म[3] मलका, एक सायत मे तीनो की दाढियो के बाल नोचकर उनके गाल चूतडो की मानिंद साफ और शफ्फाफ[4] कर दिए और मनबाद[5] प्याज की मार पडने लगी । जब प्याज की चोट लगती थी तो उस वक्त कसरते-ईजा[6] से एक दूसरे से कहता था—'बिरादर[7] खूबशुद[8] कि बेल नबूद[9] यानी अगर बेल नज्र को लाते तो जान न बचती, तमाम हो जाती ।' थोडे अरसे मे बादशाह शिकार पर से तशरीफ लाए । मलका ने सारी कैफियत बयान फरमाई । बादशाह ने दातो के नीचे उगली दबाई और फरमाया कि मलका साहिबा तुमने यह अम्र बहुत नामुनासिब किया । रियाया[10] मुझको क्या कहेगी । उस कस्बे के और बाशिदे[11]ब-दुआए-बद[12] मुझको शाम-ओ-सहर[13] याद करेगे । अब मुनासिब यही है कि जब तक उनकी दाढियाँ मुकम्मिल न हो जाएँ तब तक यह अपने कस्बे को न जायें । अलगरज जवारेशाही[14] मे उन्हे रहने का हुक्म हुआ और पाच ख्वानखासे के तआम[15] के सुबह को और पाच शाम को मोअय्यन[16] और मुकर्रर[17] हुए । इन मौलवियो को जो घर बैठे तरह-तरह की नेयमते[18] मिलने लगी और यह भी जान चुके थे कि ता-बर आमदो-तकमील-रेश[19] इस नेयमत के भेजने और खाने का हुक्म लगा हुआ है । जब तकमील रेश हो चुकेगी तो ख्वान तआम भी मौकूफ[20] हो जायेगे और हमवतन की तरफ रवाना किए जायेगे । बाहम[21] यह मशविरा और सलाह हुई कि दाढिया निकलने न दीजिए वरना नेयमते हाथो से जाती रहेगी । अजबसके[22] चाश्तखोर[23] और लज्जतयाफ्ता[24] हो चुके थे । जब खूटिया दाढियो की

---

1 महारानी, 2 बहुत कठिनाई से, 3 आज्ञानुसार, 4 चिकने, 5 इसके बाद, 6 अधिक पीडा, 7 भाई, 8 अच्छा हुआ, 9 न हुआ, 10 जनता, 11 वासी, 12 श्राप से, 13 सुबह व साझ, 14 शाही महल, 15. खाने के, 16-17 दिए जाने लगे, 18 अच्छी चीजे, 19 जब तक दाढी न निकल आए, 20 समाप्त, 21 आपस मे, परस्पर, 22 क्योकि, 23 अच्छे भोजन के लालची, 24. स्वाद जानी ।

बढती थी, फौरन मोचुनो से साफ कर दिया करते थे। यहाँ तक कि दो-तीन महीनो के बाद बादशाह ने जो दरियाफ्त फरमाया तो तीनो की वही शक्ल अव्वल पाई।

अलमुसन्निफ मतला–छप नही सकता बदने आरजू,
तग रहा पैरहने[1] आरजू।

अगली नकल–मल्लाह और मल्लाहिन के इश्क और सवाल-ओ-जवाब की

एक मल्लाह का छोकरा सर पर खुड्डू हाथ मे खेवा दरिया के किनारे खडा हुआ था। एक मल्लाह की छोकरी मर्द के वेश मे वहा आकर उस मल्लाह के छोकरे से सवाल करे कि तू मुझको पार उतार दे। इस नकल मे एक चादर फैलाकर चार आदमी चारो कोने पकड़-कर दरिया बना ले।

मल्लाह की छोकरी इस छोकरे से मुखातिब होकर यह दोहा पढे—

सुन पुतवा मल्लाह के मोहे उतारो पार,
हाथ का दूगी कागना और गले का दूँगी हार।
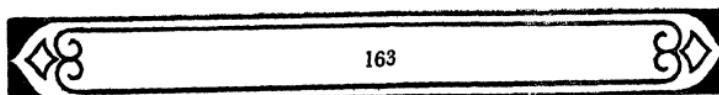
छोकरा—ना हाथ का कागना और न गले का हार
रात बसेरा यही लो तो फज्र[2] उतारू पार।

छोकरी—न दू हाथ का कागना और न गले का हार,
मै बिटिया मल्लाह की जो तैर के उतरूँ पार।

छोकरा— एडी तेरी चौधुवाती लम्बे तेरे केस,
किस रसिया ने रस लिया जो किया मर्द का भेस।

छोकरी— ससुर हामरे आगना और स्वामी है परदेस,
गाड़ी के दो बैल हिराने किया मर्द का भेस।

---

1. पहनावा, 2. प्रातः।

जब छोकरी बहुत मिन्नत और समाजत करे तो छोकरा रहम करे और कहे—'तेरा कछना तो न दूगा । यू ही पार किए देता हू ।' यूँ यह कहकर और उसका हाथ पकडकर दरिया किनारे ले जाए ।

छोकरी दरिया का पाट देखकर डर जाए और ठुमरी, ताल-सुर-भाव के साथ जुबान पर लाए ।

आस्ताई—राम कैसे पार उतरे
क्या करूँ कुछ बन नही आता ।

पहला अन्तरा—लप्पा-झप्पा को बल्ली अपने ना कोई गुन खीचनहारा,
पवन चलत पुरवइया उछलत मोरा जियरा ।
मझधार मे कुछ मगर-मगर कुछ तैर-तैर
कुछ देख-देख उन सुन कहिए ।

दूसरा अन्तरा—बडी देर से आई किनारे,
बैठ रही मै तुमरे सहारे,
अपनी मौजो की लाव-नोर यह कहा करिए ।

यह ठुमरी गाकर छोकरी डरकर कहे, आज नही, कल पार उतरूँगी ।

फसल आठवीं

शुआबदे[1] और लतीफे वगैरा मे ।

छल्ला बूझने के अल्फाज

जिस मुट्ठी पर दस का लब्ज़ पडे, उस पर छल्ला होगा । एक पर अडग कहे, दूसरे पर

1 पहेली ।

बडग कहे, फिर तीसरी दफा तूती जबरजग कहे, फिर माई जी का थान कहे, फिर खेलो चौगान कहे, फिर हरिया कहे, फिर हरबस कहे, फिर यह नौ कहे–फिर यह दस कहे । मजमूअन[1] यह लब्ज है—अडग, बडग, तूती जबरजग, माई जी का थान, खेलो चौगान, हरिया, हरबस, यह नौ, यह दस ।

शुआबदे—कपडे की गुडिया बनाकर रखे । और उसकी उगली मे अपना छल्ला पहना दे और शख्स को पोशीदा[2] उसी मजमे मे मुकर्रर करे और उसे यह समझावे—जो कोई इस गुडिया के हाथ से छल्ला उतारे तो उसे पहचाने रहना और उसकी कसम खाने के बाद तुम कसम खाना । और सबसे कहे कि जो कोई इस गुडिया के हाथ से छल्ला उतारेगा मे बता दूँगा । उस वक्त मुन्तजमीन[3] लामुहाला[4] कहेगे या तो तुम यहा से अलग हो जाओ या तुम्हारी आखे हम बद किए रहेगे । उस वक्त आँखे बद करवाने पर राजी हो जाए । जब आँखे खुले तो कहे कि मै गुडिया से पूछता हू कि किसने इसके हाथ से छल्ला उतारा है । यह कहकर गुडिया को उठाकर अपने दाहिने कान के करीब ले जाए और दो एक दफा ख्वामाख्वाह गर्दन हिलाए जैसे किसी की बात का जवाब देते है और फिर गुडिया के सर पर दो एक धपे लगा दे और पुकार कर कहे कि गुडिया कहती है कि सब हाजरीन व नाजरीन व तमाशबीन हाजिरूल वक्त मेरे सर की कसम खाए और मेरे सर पर अपने-अपने हाथ ला-लाकर धरे जो झूठी कसम खाएगा, उसको मै पकडूंगी । बस जिस वक्त कसमे होने लगे तो हर एक इस तरह से कसम खाए कि गुडिया तेरे सर की कसम हमने छल्ला नही लिया और इकट्ठा कसमे न खाये बल्कि ठहर-ठहर कर एक के बाद दूसरा और जो लोग जल्दी-जल्दी दस्तअदाजी करे और कुछ शुबह उसको और हमराज़ को वाकए हो जाए तो फिर गुडिया को उठाकर कान के पास ले जाकर कलेमात[5] मरकोमाबाला[6] अदा[7] करे और चोर की कसम के बाद हमराज़ बमुजिब-तालीम[8] कसम खाए । जब कसमो से अनफिराग[9] हासिल हो फिर गुडिया को उठाए और कान के पास ले जाकर बतरीके अव्वल सर हिलाए और धपे लगाए और कहे—'आह, अफसोस, ऐ गुड़िया, चुप रह । मुझे यकीन नही आता कि फला साहब ऐसी हरकत नाशाईस्ता[10] करेगे । जब चोर अपना नाम सुनेगा उसी वक्त हसकर छल्ला फेंक देगा' । सब ताज्जुब करेगे और अगर सबहो

---

1. कुल, 2 छुपा दे, 3 प्रबन्धक, 4 आप ही, 5 वाक्य, 6. पूर्वोक्त, 7. दोहरायें, 8 जैसी की शिक्षा दी गई है, 9 घुट्टी, 10. भद्दी ।

ने हमराज को ही छल्ला दिया यह कहकर कि तुम क्यो नही लेते हो तो कसम खाने के वक्त हमराज सबसे पहले कसम खाए । मगर शर्त यह है कि चोर उस महफिल से और जगह न जाए ।

दूसरा शुआबदे—कहे कि इस गुडिया का सर-पाव कमर जो कोई छुवेगा मै बता दूँगा और हमराज को समझा दे कि जो कोई इस गुडिया के इन आजाए-मुकर्ररा[1] को छुए मेरी आखे खुलने के बाद तू अपना वही अजो[2] खुजा लेना और लोगो से कहे मेरी आखे बद करो। जब आखे खुले तो उसी लाग से पहचान ले और बता दे और उसका हमराज दूसरा शख्स वही अजो खुजा लिया करे । अगर किसी ने गुडिया का सर छुआ यह अपना सर खुजा ले । अगर किसी ने कमर छुई, यह कमर खुजा ले । अगर किसी ने पाव छुए तो यह पाव खुजा ले ।

तीसरा शुआबदे—छह इलायचिया छोटी । दो मुँह के अदर जबान के नीचे छुपा ले और चार को सबके सामने लाए और कहे कि मै बाएँ हाथ की रग से हथेली मे इलायचिया दौडा देता हू । यह कहकर दो इलायचिया कफे-दस्तरास्त[3] मे लेकर सबको दिखा दे और दो इलायचिया ओठो मे दबाए और सबको दिखा दे । बाद उसके बाया हाथ होठो पर ले जाकर तीन-चार दफा इस चुस्ती और चालाकी से फेरे और घुमाए कि सब लोग उस हाथ फिराने की तरफ मुतव्वजे[4] हो । यह उसी हाथ मे दो होठ वाली और दो जेरेजबान[5] वाली मिलाकर चार कर ले और मुट्ठी बद रखे और तान दे । दाहिने हाथ की मुट्ठी बाये हाथ के शिकम[6] मुरफिक[7] पर, जहाँ से फसक खुलती है, रखकर और ओठ लगाकर दाहिने हाथ वाली दोनो इलायचिया चुस्ती से मुँह मे लेकर और जबान के नीचे रखकर दो-एक दफा दाहिने हाथ से बाएँ हाथ के शिकम-मुरफिक को थपकी देकर कहे कि चल जा जा जा और कुछ झूठ-सच लोगो के दिखाने के वास्ते पढता जाए और बाद उसके बाये हाथ की मुट्ठी खोलकर चार इलायचिया सबको दिखा दे । जिस वक्त चारो इलायचियाँ मुँह मे रखकर जेरे जबान वाली समेत छहो चबा जाए । इसलिए कि मुबादा[8] कोई मुँह का जायजा मागे[9] तो शर्मिन्दिगी हासिल न हो । मगर छहो इलायचिया एक ही साचे की सरमो[10] भी कमोबेश न हो ।

---
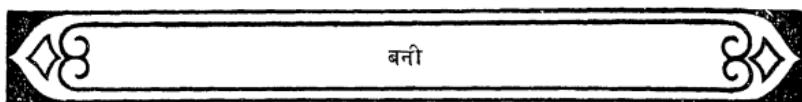
1. अंगो को, 2 अग, 3 दाहिने हाथ की हथेली मे, 4 आकर्षित, 5 जबान के नीचे, 6 पेट, 7. उसी ओर 8 इसके बाद, 9 देखना चाहे, 10 जरा भी।

चौथा शुआबदे—इतना बडा सदूक चौबी बनाए जिसके अदरखुद बैठ मके और चार जानिबो[1] मे से जो जानिब उसके जजीरो-कुफल[2] के मुकाबिल[3] हो, उस पहलू को खुलता मदता रखे । इस तरह से कि दूसरे देखने वालो को न साबित हो कि वह सदूक इस तरह से खुलता है और उसमे बैठकर लोगो से कहे कुफल[4] लगा दो और कोठरी मे रखकर आओ और बाहर निकलकर कुडी कोठरी के दरवाजे की लगा दे । जब कुडी लगा दी जाए उस वक्त जानिबे मुकाबिल कुफल खोलकर निकल आए और उस जानिब को उसी तरह फिर बद कर दे और सदूक के ऊपर बैठ रहे और आवाज दे कि चारो कुफल आनकर आजमा लो मै निकल आया । लोग आकर देखेगे तो गर्केहैरत[5] होगे । पर सदूक की लाग किसी को पहचानने न दे ।

पांचवां शुआबदे—मिट्टी मे हर तरह के रग मिलाये मुर्ख, जर्द, सफेद, सबज और उस मिट्टी को मोमजामा[6] करे और सुखा ले और पोट बाधकर अलग-अलग लाए और एक गहरी लगन मे पानी भरे और उस पानी को स्याही घोलकर स्याह कर दे कि ऊपर वालो को पानी के अदर का हाल न मालूम हो और उसी रग-रग की मिट्टी की एक-एक मुट्ठी उठा-उठाकर उसी पानी के अदर अलग-अलग रखे और ऊपर से पानी को हिलाए और कहे—क्यो यारो यह सब मिट्टी घुल गई या नही । सब जवाब देगे, बेशक घुल गई । फिर कहे—क्यो यारो यह सब रग मिल गए या नही । सब कहेगे, बेशक ओ-शुबह[7] मिल गई । उस वक्त वही ढेरिया जो पानी के अदर अलाहदा-अलाहदा रखी है निकालता जाए । वह तो मोमखुर्दा[8] है कभी तर न होगी । अलहदा-अलहदा हाथ ऊचा करके अपने रूमाल पर छोडता जाए वह मिस्ल खुश्क रेत के गिरेगें । लोग निहायत ताज्जुब करेगे । मगर यह शर्त है कि वह बनी हुई मिट्टी कोई और हाथ से न छुए वरना सारा भेद खुल जाएगा । फिर उस पानी को बिला-आनत-गैरे[9] अपने ही हाथ से फेक दे ।

छठा शुआबदे—मोम की बत्ती के दूसरे सिरे से आटा गुधा हुआ लगाए इतना कि पानी के अदर हौज मे वो बत्ती सीधी तैरे और शबेतार[10] मे उसे रौशन कर दे । पानी पर तैरती जाएगी और रौशन रहेगी ।

---

1 ओर, 2 जजीर और ताला, 3 सामने, 4 ताला, 5 आश्चर्यचकित, 6 मोम मे लपेट दे, 7 निस्सन्देह, 8 मोम चढी, 9 किसी अन्य को दिखाए बिना, 10 अन्धेरी रात ।

सातवां शुआबदे—कोयले से किसी का नाम लिखे और उसे अगुश्तेनर[1] के शिकम[2] पर छाप ले वह उल्टा उठ आएगा । फिर उसी शख्स से कहे कि हम तुम्हारे नाम को बेकलम और दावात तुम्हारे हाथ पर लिख देते है। वह कहेगा अच्छा । उसी वक्त वही अगूठा उसके हाथ पर चिपका दे । सीधानाम उसका छप जाएगा और उसका कफ अगुश्तेनर स्याहीजगाल से पाक हो जाएगा ।

अल्लाह् बस बाकी अबस फानी ।

बच्चो का खेल
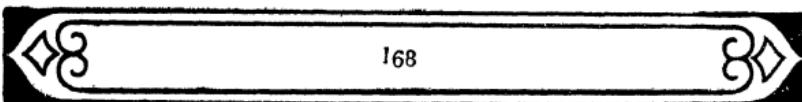
अटकन मटकन धे चटाकन
अगला झूले बगला झूले
सावन मास करेला फूले
फूले फूल के बारी लाए
बारी लाएसात कटोरी
एक कटोरी फूट गई
नेवले की टाग टूट गई
खडा मारूँ छुरी खडा
तेरी माँ का पेट ठडा
चक्की घुमरू घुमर
आटा पिसर पिसर

लतीफ़ा

पहला लतीफा

अर्श[3] पर से उतरी चार चीजें कोला, केला, फूट, खरबूजा । चार शख्सो को चारो तरकारिया जबानी तकसीम की जाएँ । जब वो अपने अपने दिलो मे ले चुके तो बाटने वाला कहे—जो मै कहू उसी तरह तुम तीनो भी अपनी-अपनी तरकारी के हक मे कहना । लो सुनो—मै कहता

---

1 अगूठे, 2 सर पर 3 आकाश,

हू—मेरा कोला गया बाजार मे। दूसरा कहे—मेरा केला गया बाजार मे। तीसरा कहे—मेरा खरबूजा गया बाजार मे। चौथा बमुजिब-वायदा जो आपस मे हो चुका पशेमान होकर कहे—मेरी फूट गई बाजार मे।

दूसरा लतीफा

अर्श पर से उतरे चार लिबास—चोली, दामन, चीरा, पटका। चार साहब बाहम यह चारो चीजें जबानी तकसीम कर ले। बाटने वाला कहे—जिस तरह मै कहू, उसी तरह तुम तीनो भी कहना अपने-अपने लिबास मुकर्ररा के हक मे, लो सुनो। कहने पर मुस्तैद रहो। मै कहता हू–हमचो चोली, दूसरा कहे—हमचो चीरा, तीसरा कहे—हमचो पटका, चौथा ब-मजबूरी मुताबिक-वायदा पशेमानी[1] से कहे—हाँ साहबो हमचो दामन, हमचो दामन, हमचो दामन।

तीसरा लतीफा

अर्श पर से उतरी चार चीजे—बिजली, धूँधूकार, गू की टोकरी, मी शिकार। चार लोग एक-एक चीज बाट ले। फिर पहला आदमी पहेली बुझाने वाला कहे—

कडकेगी कडक बिजली
बाजेगे धूँधूकार, फाटेगी गू की टोकरी
चाटेगे मी शिकार।

बतरीके-मरकूमाबाला[2] ख्वामाख्वाह इनमे कोई मी शिकार भी बनेगा। लकल-ज़ाहिरी से बहुत लोग खेल के वक्त धोखा खा जाते है।

चौथा लतीफा

एक पनिहारिन कुए पर पानी भरने गई। बारिश ऐसी हुई कि यह ज़ेरे दरख्त खड़ी होकर बूदियो की तरफ देखकर कहने लगी—

---

1 निराश-सा, 2 पूर्वोक्तानुसार।

आई थी मै तुझको
तूने पकडकर कहा मुझको
तू छोड दे मुझको
मै ले जाऊ तुझको

बच्चो का खेल

गजे के पजे खरगोश के दो कान।
गजा बैठा हगने कूद पडा शैतान।
गजा हऊ हऊ हऊ।

फसल नवीं

पहेलियो के सिलसिले मे—

1 एक परख वो अच्छी खासी सबके मन को भावे पहले तो अफसोस करे और पाछे गले लगावे। —इत्र

2 नट चढे और बास घटे
नट उतरे और बास बढ जाय,,
ऐ सखी मै तुझसे पूछूँ
क्या नट बास समाए। —मकड़ी का जाला

3 बक्तर पहने चिट्टा मर्द
जिसको खाए कलेजा सर्द। —कसेरू

4 राह मे खडी नेक ज़न
जिसमे घुसे सौ-सौ जन
फिर नेकजन की नेकजन —मस्जिद

5 ऐ सुकडी मैं ऐ सुकडी ऐ सुकडी मेरा
घुसे घुसाए ऐ सुकडी मे
सही सलामत मेरा । —जूता

6 छोटा था जब सबको भाया
बढ गया तो काम न आया । —चिराग

7. कोट तले कचनाल पुकारे
ऐ दईया मुझे बाम्हन मारे । —घड़ियाल

8 एक नार का देखो हईया
टुकडे टुकडे तन अपना किया
स्याम बरन पर चढ दे दुहाई
मुह से खीच के सीधे लाई । —कंघी

9 एचक दाना बेचक दाना
दाना है पुराना,
छज्जे ऊपर लाला बैठा
लाला है दिवाना । —पोस्ता

10 हरी थी मन भरी थी
नौ लाख मोती जडी थी,
राजा जी के बाग मे
दुशाला ओढे खडी थी । —भुट्टा

11 मै मुट्ठी मेरा पिया अकास
मै जाऊ पिया के पास,
बैरी लोग पकड दिखलाए
पी चाहे तो आप ही आए । —कबूतर उड़ाना

12 हबश पुरी से लौडिया आई हद बदजात
सर मुडाना कीन्ह कटी न तिनकनो की जात,
जब वो बेसरी हो गई अपने खसमो के हाथ
सर कट गया उनका ऐन तख्त की रात । —चिकनी डली

13 जब तिनके चुनके साफ किया
जब पाप जन्म का माफ किया,
वो आप अकल के केले
रग लाली का ले ले । -- मेहदी

14 बैठे महफिल मे आ बराबर दो
सूरत मुख्तलिफ मगर खुश्क हो,
खुश हो होके गुल मचाने लगे
मुँह पर अपने तमाचे खाने लगे । —तबले

15 जिस्म सब दागदार है देखो
तन भी सारा फिगार है देखो,
पी की आन से रजोराहत है
पी की सारी बहार है देखो । —कंदील

16 आधी बू-बू सारी रानी —बूरानी

17 इर्द गिर्द घूम आए क्या खूब बताई है,
देखी है पर चक्खी नही अल्ला कसम खाई है । —खाई

18 दाहिने हाथ की चार उगलिया मिलाकर बुलाने का इशारा करे, फिर वही चारो उंगलिया आपस से जुदा करके हाथ ऊचा करके दिखा दे । —अचार

19 दाहिने हाथ की पहली उगली से माथा ठोके और वही सारा हाथ खुला हुआ दाहिने गाल पर धर दे । —करम कल्ला

20 दाहिने हाथ की पहली उगली के नाखून से बा आनते अगुश्तेनर किसी सख्त चीज पर खटाका दे और चुटकी से मल डाले । —खटमल

छठा अध्याय

खिताब

प्रस्तुत अध्याय इस पुस्तक का छठा एव अन्तिम अध्याय है। इस अध्याय मे रहस एव जलसेवालियो के विषय मे बताया गया है। कुल मिलाकर इसमे 23 जलसेवालियो के समूह बनाए गये थे और जलसो मे कुल कलाकारो की सख्या 216 है, जिनका कुल मासिक वेतन 8,598 रु० बनता है। किन्तु इनमे से केवल 43 कलाकार ऐसे थे जो वाजिद अली शाह के शागिर्द थे और उनकी शिक्षा मे वाजिद अली ने रात-दिन एक कर दिये थे।

इसके अतिरिक्त सब ही कलाकार दूसरे उस्तादो और साजिन्दो से शिक्षा पाते थे। नृत्य एव सगीत की शिक्षा देने वाले उस्तादो की कुल सख्या 145 थी जिनका कुल मासिक वेतन 3,261 रु० था। इसके अतिरिक्त इन जलसो की तैयारियो मे उनकी सामग्री आदि एकत्र करने

तथा उसके रख-रखाव पर उनका ढेर सारा धन व्यय हुआ था। इससे एक बात स्पष्टतया सामने आती है कि मिर्जा वाजिद अली ने अपनी आय का अधिक भाग इन रहसो को तैयार करने मे लगा दिया था।

वाजिद अली शाह के 23 जलसो मे से केवल पहले पाच जलसे रहस के लिये थे और इन जलसो मे जो चरित्र जिन स्त्रियो का था उनका विवरण लेखक ने जहा का तहा लिख दिया है। इसके बाद के पाच जलसो (छ से दस तक) के विषय मे लेखक लिखता है कि इन्हे रहस की शिक्षा नही दी गई अर्थात् उनका काम रहस करना नही वरन् राजमहल के अन्य कामो को देखना था। ग्यारहवे से अट्ठारहवे जलसे के विषय मे कुछ विस्तृत वर्णन नही मिलता। केवल उन्हे दिये नये नामो से उनको पहचाना जा सकता है जैसे मरसिये-वालिया, नकलवालिया और तमाशेवालिया आदि। अन्तिम जलसे का नाम व काम दोनो नही दिये गये है। किन्तु इनमे से जो महिलाए जिस नाम से पुकारी जाती थी उनका नाम ही उनके काम की ओर सकेत करता है, जैसे आबे-रसा बेगम और आबदार बेगम का काम पानी पिलाना और उससे सम्बन्धित कार्य देखना। साफ दिल बेगम और मुसफ्फा बेगम का काम मकान व फर्नीचर की सफाई आदि। तजल्ली का अर्थ होता है बिजली। इसलिये तजल्ली बेगम का काम प्रकाश का प्रबन्ध करना। इसी प्रकार आईना जमाल बेगम का काम आइना साफ करना आदि।

इस विस्तृत व्यजना से एक बात स्पष्ट होती प्रतीत होती है कि लेखक ने 'जलसा' शब्द का प्रयोग केवल रहसवालियो के लिए ही नही प्रयुक्त किया है वरन् कला के इस सरक्षक ने हरमसरा की महिलाओ को उनके काम के अनुसार समूहो मे विभाजित कर दिया था और हर समूह का एक उस्ताद या दारोगा नियुक्त कर दिया था और इन समूहो को अलग-अलग नाम दे दिया था जिससे अनुशासन बना रहे। अनुशासन बनाए रखने के लिये वाजिद अली शाह ने कानून अख्तरी भी लिखी जिसमे वह सारी आज्ञाये भी सम्मिलित कर दी जो समय-समय पर हरमसरा की महिलाओ, सेवको और अन्य कर्मचारियो को दी जाती थी।

वाजिद अली शाह को अपने शाही के समय से ही जानवरो और चिडियो को पालने का शौक था। कलकत्ते मे भी उन्होने एक विशाल चिडियाघर बनाया था तथा चिडियो के रग और उनके प्रकार के अनुसार उनका नामकरण भी किया था। उनका सक्षिप्त विवरण भी इस अध्याय मे मिलता है। इन नामो मे भी सगीत, नृत्य की एक लयात्मक शब्दावली, प्रयुक्त की गई है।

बाब छह् यानी छठा अध्याय

इस बाब के खिताब महलात[1] और बेगमात और खिताब शहजादगान[2] और अरबाबे[3]-आलमपसद[4] वगैरा है और इसमे दो फसले है।

फसल पहली

राधा मजिलवालियो के विषय मे यह फसल सबसे पहले तैयार की।

राधा मजिलवालिया

ये अट्ठारह इस्म[5] है।

पहली—नवाब सगीर महल साहिबा, वाल्दा अख्तर जाह मिर्जा मोहम्मद हाशिम बहादुर।

दूसरी—नवाब तमीजदार बेगम साहिबा अफसर महल, मौसूफा[6] मय शाहजादा एक सौ तिरानबे रुपये महीने की तनख्वाहदार और माबकी[7] सत्रह इस्मो के, फी इस्म एक सौ तीन रुपए माहवारी मुकर्रर है। मजमूअन[8] एक हजार नौ सौ चवालिस रुपए की माहवारी राधामजिल की रहसवालियो को देता हू।

तीसरी—नवाब मझली बेगम साहिबा आशिकए-राकिम[9]।

चौथी —नवाब अब्बासी बेगम साहिबा कन्हैया।

पांचवीं—नवाब नामदार बेगम साहिबा राधा।

छठी —नवाब जानआरा बेगम साहिबा अरगवान परी।

सातवीं—नवाब सिताराबख्त बेगम साहिबा जाफरान परी।

---

1 वे बेगमे जो माँ बन चुकी है, 2 राजकुमार, 3. रिश्तेदार, 4 आलमआरा की पसन्द के, 5 नग, 6 उनके, 7 अलावा इसके, 8 कुल मिलाकर, 9. लेखक को चाहने वाली।

आठवीं—नवाब सुलतान बेगम साहिबा सैहरा यानी जोगन ।

नवीं —नवाब सझली बेगम साहिबा ललिता सखी ।

दसवीं —नवाब नन्ही साहिबा साखा सखी ।

ग्यारहवीं—नवाब उरूसाना बेगम साहिबा चैन सखी ।

बारहवीं—नवाब जाना बेगम साहिबा लडवा सखी ।

तेरहवीं—नवाब हिजाब बेगम साहिबा ।

चौदहवीं—नवाब रेहान बेगम साहिबा ।

पन्द्रहवीं—नवाब वजीर बेगम साहिबा ।

सोलहवी--नवाब जनाब बेगम साहिबा ।

सत्रहवीं—नवाब खुशकदीर बेगम साहिबा ।

अट्ठारहवीं—नवाब नूखानी बेगम साहिबा ।

गुलाम हुसैन खा मुगन्नी[1] शरीके बदा[2] और कायम खान रक्कास[3] शागिर्द-बन्दा[4] इस जलमे के मुअल्लिम[5] है और ये अट्ठारह इस्म[6] राकिम की ममतुआत[7] है। सरकार राकिम से रहस के वक्त बहारी पेशवाजे मसालेदार मय दुपट्टे पुरजरअखर[8] घुटना तोहफे की इस्म अलाहदा मिला करती है। बादेरक्स[9] मेरे तोशाखाने[10] मे एहतियात से सदूक मे बद कर दिए जाते है। राधा, कन्हैया, परियॉ, सैहरा, गुर्बत, अफरीयत, मुसाफिर, रामचीरा, इन सबका भी असबाब[11] मय पनिहारिनो और माखनवालियो के, मेरी तरफ आयद[12] और मेरे हिसाबात मे मशमूल[13] है। उनकी तनख्वाहो से कुछ इलाका[14] नही। इस रहस को शुरू हुए माशाअल्लाह तेरहवा-चौदहवा बरस है। फनेमौसीकी[15] मे ताक[16] शहरे आफाक[17] हैं।

---

1 गायक, 2 लेखक के साथ, 3 नर्तक, 4 लेखक का शिष्य, 5 उस्ताद, 6 नग, 7. जिनसे मुनाह किया है, 8 जरदोजी के भारी बनत, 9 नृत्य के बाद, 10 कपडे रखने का स्थान, 11 सामान, 12 सम्बन्धित, 13 जुडे, 14. मतलब, 15 सगीत कला, 16 माहिर, 17 नगर प्रसिद्ध ।

शारदा मंजिलवालियां

शारदा मंजिलवालियों के विषय में। पहली फसल में इनका जिक्र दूसरे नम्बर पर है। इस रहस में पन्द्रह इस्म[1] हैं—

पहली—नवाब मुबारकमहल साहिबा दाराजाह मिर्जा मुहम्मद अब्दुल अली की वाल्दा मय शाहजादा। एक सौ सत्तासी रुपए आठ आने की तनख्वाहदार माबकी[2] फी[3] इस्म अड़तालिस रुपए महीना।

दूसरी—नवाब दुलारी बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब प्यारी बेगम साहिबा अरगवान परी।

चौथी—नवाब खुशआवाज बेगम साहिबा सैहरा यानी जोगन।

पांचवीं—नवाब जाफरी बेगम साहिबा।

छठी—नवाब नूरजहाँ बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब नजमुन्निसा बेगम साहिबा।

आठवीं—नवाब नथनिया बेगम साहिबा।

नवीं—नवाब नाहिद बेगम साहिबा।

दसवीं—नवाब चमनिस्तान बेगम साहिबा कन्हैया।

ग्यारहवीं—नवाब हूर बेगम साहिबा साखा सखी।

बारहवीं—नवाब बाला बेगम साहिबा चैन सखी।

तेरहवीं—नवाब नगमासरा बेगम साहिबा लडवा सखी।

चौदहवीं—नवाब दहर अफरोज बेगम साहिबा राधा।

पन्द्रहवीं—नवाब हादी बेगम साहिबा जाफरान परी।

इस रहस को माशेअल्लाह सात बरस के करीब हुए। मीर खाँ मुगन्नी[4] शागिर्द बन्दा और कलन्दरबख्श रक्कास[5] शागिर्द बन्दा इस जलसे के मुअल्लिम[6] हैं। यह पन्द्रह इस्म राकिम

---

1 नग, 2 अलावा उसके, 3 प्रति, 4 गायक, 5 नर्तक, 6 उस्ताद।

की ममतुआत है[1] । कुल शारदा मजिलवालियो को आठ सौ उनसठ रुपए आठ आना माहवारी देता हू । सातवा बरस उनकी तालीमदेही[2] को मुन्कजी[3] होता है ।

सुलतानखानेवालियाँ

यह तीसरा रहस और बडा जलसा है और इसमे चौबीस इस्म है । यह महल जेरे-तालीमे-बंदा[4] आठ बरस से है । शरीकेराकिम[5] पहले अलबख्श खान मुगन्नी और कलन्दर बख्श रक्काम और निसार अली खाँ पखावजी और तआशुद्दौला बहादुर ऐश[6] शायर और खुलासुतुउद्दौला बहादुर मुशी, जुमला[7] शागिर्दाने मुसन्निफ[8] है । ये गुस्ताखाना अदना[9] अर्ज[10] खिदमत नाजरीन[11] और शायकीन[12] और तालेबीन[13] और मुश्ताकान[14]और उस्तादाने फन[15] की खिदमत मे करता है कि एक धीमे तिताला मे तीन बरस के अरसे मे मैने बावन तरह की लय निसार अली खा पखावजी को मय साहिबात जलसा बताई और सभी ने बआनते-राकिम[16] और शागिर्दाने-राकिम[17] याद की । मगर फिरकएनिशातए-कज-फहम[18] और नाकिस-उल-उकूल[19] हे कि सिवाए खुद-आराई[20] और खुदपरस्ती[21] गोया[22] कोई काम दुनिया का आराई[23] ने उनके मुताल्लिक[24] नही किया । चौबीस इस्मो मे से तीन-चार इस्म तो उगलियो पर कायम हुई । मावकी[25] सिवाए ले-ले की लय के और जो चाहिए वो कुछ नही जानती ।

पहली—नवाब कैसरमहल साहिबा, एरिकाआरा, कनीज साहब बेगम साहिबा । शाहजादे की वालदा मय शहजादा दो सौ बीस रुपए महीने की तनखवाहदार है ।

दूसरी—नवाब सकीना बेगम साहिबा कन्हैया, बयासी रुपए की तनख्वाहदार और माबरा नवाब सकीना बेगम साहिबा कन्हैया की । यह बीस इस्म भी बयासी रुपए महीने के तनखवाहदार है ।

---

1 मुताही, 2 शिक्षा, 3 पूरा, 4 इस बदे की शिक्षा, 5 लेखक मे सम्मिलित 6 शायर का तखल्लुस, 7 कुल, 8 लेखक के शिष्य, 9 छोटी-सी, 10 निवेदन, 11 पाठको की सेवा मे, 12 शौकीनो, 13 छात्रो, 14 इच्छुक, 15 कला के उस्ताद, 16 लेखक के अनुसार, 17 लेखक के शिष्यो मे, 18 बुद्धिहीन औरतो का समूह, 19. नासमझ (बुद्धिहीन), 20 स्वय सजने-सवरना मे, 21 अपने आप मे लीन रहना, 22 जैसे, 23 खुदा, 24 सम्बन्धित, 25 अलावा इसके ।

तीसरी—नवाब आबादी बेगम साहिबा राधा।

चौथी—नवाब वमीरी बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब हैदरी बेगम साहिबा।

छठी—नवाब अमीर बेगम साहिबा।

सातवी—नवाब खुशगुल बेगम साहिबा।

आठवी—नवाव गोरी बेगम साहिबा, ललिता सखी।

नवी—नवाब छोटी बेगम साहिबा।

दसवी—नवाब मोहनदी बेगम साहिबा साखा सखी।

ग्यारहवी—नवाब शहशाह बेगम साहिबा चैन सखी।

बारहवी—नवाब इश्क अफरोज बेगम साहिबा लडवा सखी।

तेरहवी—नवाब महरूख बेगम साहिबा।

चौदहवी—नवाब उम्दा बेगम साहिबा जाफरान परी।

पन्द्रहवी—नवाब मुन्नी बेगम साहिबा अरगवान परी।

सोलहवी—रफीक उल सुल्तान वजीरुन्निसा खानम साहिबा मैहरा यानी जोगन।

सत्रहवी—नवाब अर्जुमद बेगम साहिबा।

अठारहवी—नवाब अजुम अफरोश बेगम साहिबा।

उन्नीसवीं—नवाब परीरूख बेगम साहिबा।

बीसवी—नवाब सज्जादी बेगम साहिबा।

इक्कीसवी—नवाब लोडोबाई साहिबा।

बाईसवीं—नवाब शीशमहल साहिबा—एक सौ उन्तीस रुपए आठ आना की तनखवाहदार।

तेईसवी—नवाब अफजल बेगम साहिबा मय बहार आरा, कनीज हुसैन बेगम साहिबा मय शाहजादा एक सौ बहत्तर रुपए की तनख्वाह दार । जब नवाब बूटा महल साहिबा शाहजादे की वाल्दा ने इन्तकाल किया, तो यह शाहजादे उन्ही बेगम के सुपुर्द हुए । यह शाहजादे की खाला और राकिम की साली-ममतुआ[1] है ।

चौबीसवी—नवाब हजरत बेगम साहिबा एक सौ तीन रुपए की तनख्वाहदार । यह चौबीसो इस्म राकिम की ममनुआत है । कुल माहवारी सुलतानखानेवालियो की दो हजार दो सौ चौतीस रुपए आठ आने ।

खास मजिलवालिया

यह चौथा जलसा हुजूरवालियो का जलसा के नाम से कहलाता है और यह खासमजिलवालियाँ भी मशहूर है । इसमे ग्यारह इस्म है जिनमे पहले नौ इस्म पैतालिस-पैतालिस रुपए के तनख्वाहदार है, और दो इस्म बीस-बीस रुपए के तनख्वाहदार है । इनायत खा मोगनी[2] और ख्वाजा बख्श तबलानवाज शागिर्दाने-मुसन्निफ[3] उनके मुअल्लिम[4] है । साथ ही हैदरअली रक्कास[5] शागिर्दबदा[6] था वह फौत[7] हो गया है ।

पहली—नवाब आगाई बेगम साहिबा ललिता सखी ।

दूसरी—नवाब हुरमुजी बेगम साहिबा साखा सखी ।

तीसरी—नवाब सुल्तानी बेगम साहिबा चैन सखी ।

चौथी—नवाब जँहरा बेगम साहिबा लडवा सखी ।

पांचवीं—नवाब अहमदी बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब बिस्मिल्ला बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब नौरोजी बेगम साहिबा ।

आठवीं—नवाब खुर्शीदी बेगम साहिबा ।

नवीं—नवाब मेहताबी बेगम साहिबा ।

---

1 मुताही बीवी की बहन, 2. नर्तक, 3 लेखक के शागिर्द, 4 उस्ताद, 5 नर्तक, 6. लेखक के शागिर्द (शिष्य), 7 मर गया ।

दसवीं—नवाब ईदी बेगम साहिबा राधा। बीस रुपए की तनख्वाहदार है। सातवाँ बरस इनकी तालीमदेही[1] को मनकजी[2] होता है।

ग्यारहवीं—नवाब मासूमा बेगम साहिबा कन्हैया। बीस रुपए की तनख्वाहदार।

चार सौ पैंसठ रुपए माहवारी हुजूरवालियों की हुई। सब इस्म राकिम की ममतुआ है।

पांचवा जलसा

यह सुरूर मजिलवालिया और साहबाते खिलवात भी मशहूर है। यह साहिबात सिन-रसीदा[3] भी है। सोलह इस्म है। फी[4] इस्म[5] बीस रुपए की तनख्वाह कुल तीन सौ बीस रुपए माहवारी हुई और सब ममतुआ[6] है। छह बरस उनकी भी तालीमदेही को गुजरते है। फजल इमाम मुगन्नी और मुहम्मद हुसैन रक्कास मेरा शागिर्द इनका मुअल्लिम है।

पहली—रकाब पसद कन्हैया।

दूसरी—मतलब पसद राधा।

तीसरी—चमकपसद अर्गवान परी।

चौथी—नवाब पसद जाफरान परी।

पांचवीं—लबपसद ललिता सखी।

छठी—सागर पसद साखा सखी।

सातवी—दिलदार पसद चैन सखी।

आठवी—नूरपसद लडवा सखी।

नवी—मशहूर पसद सैहरा यानी जोगन।

दसवीं—सख़ावत पसद।

---

1 शिक्षा, 2. पूरा, 3 अधिक आयु की, 4 प्रति, 5 नग, 6 मुताही।

ग्यारहवी—सआदत पसद ।

बारहवी —मर्तबत पसद ।

तेरहवी—मुरव्वत पसद ।

चौदहवी—नजफ पसद ।

पन्द्रहवी —उम्मीद पसद ।

सोलहवी—सिकदर पसद ।

छठा जलसा

यह शहशाह मजिलवालियाँ मशहूर है । इनको रहस की तालीम नही दिलवाई और न राकिम[1] उनकी तालीमदेही मे कभी शरीक हुआ । मगर हैदर खा मुगन्नी मेरे शागिर्द ताज खा का हमशीरजादा[2] और कलन्दरबख्श रक्कास मेरा शागिर्द इनके मुअल्लिम है । यह आठ इस्म है और सब मेरी ममतुआ है । पाचवा बरस उनकी तालीमदेही को मुनकजी[3]होता है । फकत नाचना गाना इनका काम है । बशरहमुखतलिफ[4] कुल जर[5] तनख्वाह उनका तीन सौ चालिस सिक्के बख्शीगीरी से मिलते है ।

पहली—नवाब हुजूर साहिबा पचास रुपए की तनख्वाहदार ।

दूसरी—नवाब समनवर बेगम साहिबा पैतालिस रुपए की तनख्वाहदार ।

तीसरी—नवाब आलिया बेगम साहिबा पैतालिस रुपए की तनख्वाहदार ।

चौथी—नवाब मुतालैया बेगम साहिबा पैतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

पांचवीं—नवाब मखमूरा बेगम साहिबा उनतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

छठी—नवाब वाजिदी बेगम साहिबा उनतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

सातवीं—नवाब गुलपैरहन बेगम साहिबा उनतालिस रुपये की तनख्वाहदार ।

आठवीं—नवाब चर्ख अफरोज़ बेगम साहिबा अडतीस रुपयो की तनख्वाहदार ।

---

1. लेखक, 2 भाँजा, 3. पूरा, 4. विभिन्न दरो के हिसाब से, 5 पैसा ।

सातवॉ जल्सा

यह छोटे जलसेवालियॉ मशहूर हे । इनसे भी रहस मुतालिलक नहीं । फकत नाचना-गाना इनका काम है । गुलाम मुहम्मद कानूनबाज और बिशन रक्कास शागिर्दाने राकिम इनके मुअल्लिम थे । दोनो हक्के शागिर्दी और नमकफरामोश[1] करके तारिकेरोजगार[2] हुए । अब यह जलसा रक्स व सरोद से बिल्कुल्लिया[3] मुअत्तल व बेकार है । गाहे-बगाहे राकिम की एक आध ध्रुवपद अपनी तसनीफ[4] बता दिया करता है । यह सात इस्म हे और सब राकिम की ममतुआ है । फी इस्म चालिस सिक्के तनख्वाह मुअय्यन हे । दो सौ अस्सी रुपए माहवार हुए । पाचवा बरस इनके भी तालीमदेही को मुनकजी होता हे ।

पहली—नवाब झुमका बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब चुँदडी बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब सब्जा बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब बदा बेगम साहिबा ।

पांचवी—नवाब इम्तियाज बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब प्रिया बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब रसिया बेगम साहिबा ।

आठवॉ जलसा

यह पाच इस्म राकिम की ममतुआ हे । नूर मजिलवालिया इनका लकब[5] है । रहस का काम इनके मुतालिलक[6] नही । अहमद खॉ मुगन्नी और कायम खा रक्कास बन्दे के शागिर्द इनके मुअल्लिम है । आठ-सात बरस की तालीम मे ऐसा मुहावरा व मश्क व मशशाकी बहम पहुचाई और ऐसा ध्रुपद, ख्याल, चतुरग, तराना, आलाप, अर्थभाव करतिया है कि रुलादेतियाँ है । अलहक[7] उनके दोनो मुअल्लिमो मे हक्के नमक व शागिर्दी राकिम अदा किया । राकिम इस

---

1 नमकहरामी, 2 नौकरी छोडकर चले गए, 3 बिलकुल, 4. लिखी हुई (कृति), 5 उपनाम, तखल्लुस, 6 सम्बन्धित, 7 सच ये है ।

जलसे से निहायत राजी है। इनमे नवाब महकपरी बेगम साहिबा की तनख्वाह पचहत्तर रुपए है। चार इस्मो की पचास-पचास रुपए। कुल दो सौ पचहत्तर रुपयो की माहवारी वहाँ जाती है।

पहली—नवाब महकपरी बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब जानी बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब जान बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब जनिया बेगम साहिबा।

पांचवी—नवाब जन्नो बेगम साहिबा।

नवा जलसा

यह जलसा मुकर्रर किए हुए तीसरा साल है। नवाब जैनब बेगम साहिबा नवाब सहरनिगाह बेगम साहिबा यह दो मुमतुआ राकिम की इस जलसे मे है। माबकी मुतावक्तऐनो[1] मे है। इसमे ग्यारह इस्म ममतुआ के फी इस्म छियत्तर रुपए की तनख्वाह और नौ इस्मो के बीस-बीस रुपए की फी इस्म। इनायत हुसैन ख़ा मुगन्नी शागिर्दे राकिम और गुलाम अब्बास रक्कास इनके मुअल्लिम है। यह जवाहर मजिलवालिया मशहूर है। इस सन् मे जो बारह सौ बानबे हिजरी है यह जलसा फकत रहसआमोजी[2] पर मुअय्यन[3] होकर हवाले किया। महताब-उद्दौला बहादुर दरवशा शायर और ख्वाजाबख्श तबला नवाज शागिर्द राकिम के।

पहली—नवाब जैनब बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब सहर निगाह बेगम साहिबा ममतुआ।

तीसरी—नवाब ताउसजमाल बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब रक्कास बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब मोती बेगम साहिबा।

छठी—नवाब अजीमा बेगम साहिबा।

---

1 अलावा इसके और किसी से मतलब नही। 2 रहस करने, 3 स्थित।

सातवीं—नवाब ख़ुर्शीद जमाल बेगम साहिबा ।

आठवीं—नवाब जैहरा जमाल बेगम साहिबा ।

नवीं—नवाब मुश्तरीक बेगम साहिबा ।

दसवीं—नवाब सुरैया बेगम साहिबा ।

ग्यारहवीं—नवाब अबद परवीन बेगम साहिबा ।

दसवा खास जलसा

यह खास जलसेवालिया मशहूर है । सात इस्म है जिनमे तीन ममतुआ है । मुतदक्के माबकी अलमुता सातो सत्तर सत्तर रुपए महीने की तनख्वाहदार जेर-तालीम[1] राकिम है । तीसरा साल मुनकर्जी[2] होता है कि नहीफ खुद[3] उनकी तालीम मे बदिलोजान मसरूफ रहता है। अब माशा अल्लाह लय-सुर से बखूबी वाक्फियत होती जाती है । नचाना-गवाना, अर्थभाव बताना टुकडे पाव से लिवाना, गते नचवाना सब मुझसे मुताल्लिक है। किसी साजिन्दे नवाजिन्दे मुगन्नी रक्कास को जर्रा दखल नही बल्कि उनके हमराह सिवाए राकिम और कोई नही होता जो कभी ऐसा ही दिलचाहा तो साजिन्दो को हमराह बजवा दिया । दूसरे-तीसरे महीने के बाद चुटकियो पर ध्रुवपद,चतुरग त्रिवट, तराना, धमार, रूपक, तीवरा, चौताला, धीमा तिताला, कबीर की छवि, ब्रह्मलक्ष्मी, सूलफाख्ता छविताला, चाचर, गज़ल, अद्धा, ख्याल, ठुमरी गा लेती है । ये तम्बूरे पर काम कर लेती है । बगैर तम्बूरे भी गलो के सुरो पर गा सकती है । जवाहर लच्छे के छहो टुकडे पाव से निकाल लेती है । दो-तीन सौ चीजे पाव से सब तरह की आज तक बता चुका हू और बताए चला जाता हू । नकले भी मजह्क करती है । समझदार हो गई है ।

सूरत[4]उसकी यह हुई कि नौ जलसे मुरत्तब किए। राधा मजिलवालियो और सुल्तानवालियो पर ऐसी-ऐसी मेहनते की कि सुबह का खाना शाम को और शाम का सुबह को नसीब हुआ । मगर आखिरकार उन साहबो ने बसबब-तासीर[5] सोहबत शबानारोजी[6] डोम-ढाडियो का सा तफरका[7] पडा । इल्म[8]की तरफ तवज्जे बिल्कुल न की । मजे की तरफ रूजू[9] हुई । यह हालात

---

1. शिक्षा मे है, 2 पूरा, 3 मै स्वय, 4 नतीजा, 5. साथ-साथ रहने के प्रभाव के कारण, 6 दिन-रात, 7 मतभेद, 8 शिक्षा, 9 आकर्षित ।

देखकर राकिम-उल-हुरूफ[1] निहायत[2] कबीदारखातिर[3] और परेशान रहता था कि बारेखुदा[4] क्या तदबीर करूँ। बगैर साजिन्दो के एक कलमा जुबान से न निकालती थी। एक दिन शाहजमाना ने मुझे रजीदा खातिर देखकर कहा—साहब तुम क्यो शबानारोज चुप रहा करते हो। मैने किस्सा गुजश्ता[5] नकल किया। उन्होने सलाह दी, तुम खुद क्या कम हो जो औरो को तालीमदेही मे शरीक करते हो। मैने जवाब दिया—साहब सब जलसो की आदते खराब हो गई। वो अब मेरी जेरे तालीम नही आ सकती है। उन्होने हँसकर जवाब दिया—एक दर बन्द करोड खुले है। मै कोरियो छोकरिया यहा बुलवाती हूँ। कच्ची लकडी की तरह जिधर तोडो मरोडोगे बेतकल्लुफ, टूटेगी और नवाब यादगारमहल साहिबा और अहलकार खाकान दारोगा अशफाक उल सुल्तान और नवाब शहजादी महल साहिबा ये साहब भी ऐसे ही कलमे जुबा पर लाई। मै भी राजी हो गया। अलहक[6] यह सलाह और राय यहा तक मुफीद[7] हुई कि मैने अब अहदे-वासिक[8] किया है कि मुद्दतउलउम्र[9] किसी डोम, धाडी, मिरासी, कलावत गवैए, ध्रुवपदिए, ख्यालिए, रक्कास, पखावजी के हवाले एक इस्म भी न करूँगा। अभी तक उनसे रहस का काम भी नही लिया। वह काम अब उनसे अपने आगे पानी से ज्यादा पतला नजर आएगा।

पहली—नवाब खाना आबादी बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब माहेमुनीर बेगम साहिबा ममतुआ।

तीसरी—नवाब गुलबदन बेगम साहिबा ममतुआ।

चौथी—नवाब महरअफरोज़ बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब नाज़ुक बदन बेगम साहिबा।

छठी—नवाब मुमताज बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब माहेअफरोज बेगम साहिबा।

ग्यारहवा जलसा

यह घूघटवालियाँ मशहूर है। ये भी सात इस्म[10] साल भर से जेरेतालीम-राकिम[11] है। उनमे नवाब अलमास तलत बेगम साहिबा फकत ममतुआ है। माबकी[12] मुतवक्के-अलमुता छियत्तर

---

1 लेखक, 2 अत्यधिक, 3 दुख, 4. ऐखुदा, 5 बीता हुआ, 6 अल्लाह के करम से, 7. लाभदायक, 8 प्रतिज्ञा, 9 जीवनपर्यन्त नई लडकिया 10. नग, 11 लेखक से शिक्षा ले रही है, 12 इसके अलावा।

रुपए बेगम मरकूमा[1]की तनख्वाह् और माबकी छह इस्मो के बीम-बीस रुपए की माहवारी है।

पहली—नवाब अलमास तलत बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब शिकोह् बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब विकार बेगम साहिबा।

चौथी—खुसरो बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब जहाँ अफरोश बेगम साहिबा।

छठी—नवाब अच्छी बेगम साहिबा।

सातवी—नवाब अल्लाह् जिलाए बेगम साहिबा।

बारहवां जलसा

यह पहला जलसा नथवालियाँ मशहूर है। यह भी सात इस्म साल भर से जेरे-तालीम राकि़म है। इनमे नवाब मलीहा बेगम साहिबा ममतुआ छियत्तर रुपये महीने की तनख्वाह्दार है। माबकी बीस-बीस रुपए के तनख्वाह्दार है। एक सौ छियानबे रुपये हर माह् नथवालियो को और इसी कद्र घूंघटवालियो को भी देते है। मगर खास सातो जलसेवालियो को चार सौ नब्बे रुपये हर माह् मिलता है।

पहली—नवाब मलीहा बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब जमन अफरोज बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब बुतूली बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब हुसैनी बेगम साहिबा।

पांचवीं—नवाब मुनीर बेगम साहिबा।

छठी—नवाब आमना बेगम साहिबा।

सातवी—नवाब सबीहा बेगम साहिबा।

---

1 पूर्वोक्त।

तेरहवा जलसा

इसमे भी सात इस्म है। ये गानेवालियाँ मशहूर है। ये भी साल भर से जेरे-तालीम राकिम है। नवाब खुश अदा बेगम साहिबा इनमे छियत्तर रुपये की तनख्वाहदार ममतुआ राकिम है। माबकी छह इस्म मुताह चाहने वाली बीस-बीस रुपयो की तनख्वाहदार है। कुल एक सौ छियान्नबे रुपये महीना गानेवालियो को भी मिलता है।

पहली—नवाब खुशअदा बेगम साहिबा ममतुआ।

दूसरी—नवाब अस्करी बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब खुसरो बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब नजीर बेगम साहिबा।

पांचवी—नवाब करीमुन्निसा बेगम साहिबा।

छठी—नवाब जनिया बेगम साहिबा।

सातवी—नवाब हसन जहाँ बेगम साहिबा।

चौदहवाँ जलसा

यह लटकनवालियाँ मशहूर है। यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब रश्के माह बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब कमानअबरू बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाब गुलरुख्सार बेगम साहिबा।

चौथी—नवाब हिलाल अबरू बेगम साहिबा।

पाचवीं—नवाब गैरतमाह बेगम साहिबा।

छठी—नवाब सर बुलंद बेगम साहिबा।

सातवीं—नवाब जीजाह बेगम साहिबा।

पन्द्रहवा जलसा

यह झूमरवालियाँ मशहूर है। यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब खुशनिगाह बेगम साहिबा।

दूसरी—नवाब मुश्क गेसू बेगम साहिबा।

तीसरी—नवाव जादू निगाह् बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब आहोनिगाह् बेगम साहिबा ।

पांचवीं—नवाब आलमताब बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब खैरख्वाह् बेगम साहिबा ।

सातवी—नवाब जान अफरोज बेगम साहिबा '

सोलह्वा जलसा

यह् झूलनेवालियाँ मशहूर है । ये भी सात इस्म है—

पह्ली—नवाब बद्र अफरोज बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब गुलबदन बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब खुशअफरोज बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब कमर अफरोज बेगम साहिबा ।

पाँचवीं—नवाब कुबक अफरोज बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब सई बेगम साहिबा ।

सातबी—नवाब लालओजार बेगम साहिबा ।

सत्रह्वा जलसा

यह बेसरवालियाँ मशहूर है । यह् भी सात इस्म है—

पह्ली—नवाब इश्कनुमा बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाग गुलअदाम बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब चाशनी बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब नमकीन बेगम साहिबा ।

पांचवी—नवाब हीरा बेगम साहिवा ।

छठी—नवाब शम्स अफरोज बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब कनीज हुसैन बेगम साहिबा ।

अट्ठारहवा जलसा

यह बिदियावालियाँ मशहूर हे । यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब जहाँदार बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब परीखिसाल बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब शमशाद बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब यूसूफ जमाल बेगम साहिबा ।

पांचवी—नवाव जुलेखा बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब बिलकीस बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब लैला बेगम साहिबा ।

उन्नीसवां जलसा

यह मरसिएवालियाँ है । यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब गुमगुसार बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब गमख्वार बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब मातमी बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब मातमदार बेगम साहिबा ।

पांचवी—नवाब मरसिया ख्वान बेगम साहिबा ।

छठी—नवाव नौहाख्वान बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब जाकिरा बेगम साहिबा ।

बीसवा जलसा

यह नकलवालियाँ मशहूर है । यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब इलायची बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब दोगाना बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब चारकौडी बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब सहगाना बेगम साहिबा ।

पांचवी—नवाबी जनाखी बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब पौबारह बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब तीनतेरह बेगम साहिबा ।

इक्कीसवाँ जलसा

यह तमाशावालियाँ मशहूर है । यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब जरअन्दोह बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब जरपसद बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब जरदार बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब जरनिसार बेगम साहिबा ।

पाचवी—नवाब जरकशा बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब नादिरा बेगम साहिबा ।

सातवी—नवाब मरियम बेगम साहिबा ।

बाइसवा जलसा

ये मुसाहेबीन मशहूर हें । यह भी सात इस्म है—

पहली—नवाब कजकला बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाव खुर्शीदकला बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब कमरकला बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब जर्रीकला बेगम साहिबा ।

पाचवी—नवाब नाजुककला बेगम साहिबा ।

छठी—नवाब सिराकला बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब अजुमकला बेगम साहिबा ।

दीगर ममतुआत

पहली—नवाब आबेरसा बेगम साहिबा ।

दूसरी—नवाब आबदार बेगम साहिबा ।

तीसरी—नवाब अबा बेगम साहिबा ।

चौथी—नवाब आबेकशा बेगम साहिबा ।

पाचवी—नवाब साफदिल बेगम साहिबा ।

छठी——नवाब तजल्ली बेगम साहिबा ।

सातवीं—नवाब राफ्त बेगम साहिबा ।

आठवीं—नवाब सलोनी बेगम साहिबा ।

नवीं—नवाब मुसफ्फा खिसाल बेगम साहिबा ।

दसवीं—नवाब आईना जमाल बेगम साहिबा ।

जानना चाहिए कि 'जेरे-तालीम-राकिम-ता-तहरीरे-हाजा'[1] तैंतालिस इस्म[2]है। सभी जलसे मिलाकर दो सौ सोलह इस्म गाने-नाचने वाली, अल्लाहुम्मा-जद[3] माशाअल्लाह चश्मबद्दूर ता-तहरीर-किताब हाजा[4] राकिम[5] के पास हर वक्त व हर सायत व हर लमहा मौजूद है । मगर मुलाकात और सोहबत और हिकायत हर रोज उन्ही से होती है, जो तैंतालिस इस्म मेरे ज़ेरे तालीम है ।

जुमला 8598 रुपए मशहिरा[6] हुए । पन्द्रह कलावन्त मुगन्नी[7] हुए एक खमटीवाला और दो पखावजी, तेईस तबलानवाज, छयालिस सारगी नवाज, बाईस मजीरा नवाज, एक नै नवाज, छह रक्कास, एक शुआबदेबाज, दो ढोलक नवाज, एक सुरसिंगार बाज, उन्नीस लोग नक्कार खाने मे और छह सुरूर महफिल मुलाजिम है । चश्मेबद्दूर तनख्वादार तीन हजार दो सौ इकसठ रुपया महीना के और राकिम की सरकार मे जो डोमनियाँ औरते है उनके सुरूरे महफिल और जो उनके मर्द है उनको बहारे-महफिल कहते है ।

---

1 इस कृति के लिखने तक लेखक की शिक्षा मे, 2 नग, 3 अल्लाह की दया से, 4 प्रस्तुत पुस्तक लिखने तक, 5. लेखक, 6 तनख्वाह, 7 नर्तक ।

खिताब महलात और बेगमात और
खिताब शहजादगान जकूरून्नास और साहबाने आलमपसन्द

राकिम[1] की अजवाज[2] जो माशाअल्लाह चश्मेबद्दूर इस वक्त मौजूद है, सिवाए उन महलात और बेगमात के कि जो अपने-अपने जलसा-ए-रक्स व गिना[3] और रहस के लयगईया[4] है और शहजादगान जकूरून्नास सिवाय उनके जो अपनी-अपनी उम्हात[5] के साथ लग गए है और बहुएँ और खवेश[6] और पोता-पोती, नाती-नवासा और साहिबाने आलमपसन्द जो लब्ज दौला से मुमताज[7] है, मय उनके खिदमत मुफव्विजा के जो-जो खिताब इनायत हुए है, सब तहरीर मे आते है ।

खिताब महलात[8]
खिताब बेगमात[9]
खिताब ममतुआत[10]
खिताब शहजादो के[11]
खिताब शहजादियो के[12]
खिताब बहुओ के[13]
खिताब दामादो के[14]

खिताब मुरशिद जादगान व मुरशिद जादेहा

मुरशिद जादगान जन्नत नशी[15]
मुरशिद जादगान जरनल साहब बहादुर[16]

---

1 लेखक, 2 पत्नियां, 3. नाच-गाने के जलसे मे, 4. लग गई है, 5 कुटुम्ब के साथ, 6 दामाद, 7 सुशोभित, 8 सैतालिस महलो का नामकरण किया गया है। ऐसी बेगमे जो मा बन जाती थी उन्हें महल का खिताब दिया जाता था, 9 बत्तीस बेगमो के नाम दिए गये है, 10 चार ममतुआ के नाम दिए गए है, 11 चौबीस शहजादो के नाम दिए गए है, 12 तेईस शहजादियो के नाम दिए गए है, 13 पाच बहुओ के नाम दिए गए है, 14 दो दामादो के नाम दिए गए है, 15 चार के नाम दिए गए है, 16. दो के नाम दिए गए हैं।

मुरशिद जादगान मिर्जा जहाँ कद्र बहादुर[1]
मुरशिद जादगान आसमान जा[2]
मिर्जा कमरकद्र के मुर्शिदजादे[3]
मुरशिद जादा कुराह् हसन मिर्जा बहादर[4]
मुर्शिदजादा मिर्ज़ा खुश बख्त बहादर[5]
खिताब साहबाने आलम पसद जो लब्ज दुलाई से मुमताज है[6]
खिताब बाग के दारोगाओ के[7]

फसल दूसरी

इस फसल मे जानवरो के खिताब मे जो मेरी सरकार पुरइख्लसार[8] मे ता-तहरीरे-किताबे हाजा[9] सन् बारह सौ बान्नबे हिजरी तक जानवरो के कफस खिताब इनायत हुए है कि जिसमे सिवाए राकिम[10] के दूसरे की फिक्र को दखल नही, वो भी बराए-याददाश्त[11] और जहत कैफियत नाजरीन हवालए इस्तगासा रकम[12] कर दिए गए ।[13]

क़िस्म पहली (47 बुलबुलो का नामकरण)
क़िस्म दूसरी जल खुश तकल्लुम (81 का नामकरण)
क़िस्म तीसरी कस्तूरी (22 बुलबुलो का नामकरण)

---

1 तीन के नाम दिए गए है, 2 चार के नाम दिए गए है, 3 तीन के नाम दिए गए है, 4 एक का नाम दिया गया है, 5 एक का नाम दिया गया है, 6 दरबारियो के नाम दिए गए है, जो कि पूरा एक मन्त्रिमण्डल था और नवाब के शासनकार्य के विभिन्न विभागो को सम्हाले हुए था, 7 इसमे ज्ञात होता है कि उस जमाने मे आठ प्रसिद्ध बाग थे, जिनके लिए आठ दारोगा व्यवस्था के लिए रखे गए थे, 8 छोटी-सी, 9. प्रस्तुत किताब लिखने तक, 10 लेखक, 11. याद रखने के लिए, 12 पाठको को सही हालात बताने के लिए लिखे गए है, 13. वाजिद अली शाह् का शब्दकोश कितना व्यापक था, इसकी जानकारी जानवरो के खिताब से मिलती है । सगीत-नाट्य के साथ वे पशु-पक्षी प्रेमी भी थे और इसमे भी उनकी कलात्मक अभिरुचि का दिग्दर्शन होता है । अनेक पशु-पक्षी के नामकरण मे सगीत-नाट्य की शब्दावली का प्रयोग किया गया है, जैसे–सुरदार, जलतरग, गज़लख्वान, मुरचग, ढोलक, आदि ।

क़िस्म चौथी स्यामा (20 बुलबुलो का नामकरण)

किस्म पांचवी पिद्दा (12 बुलबुलो का नामकरण)

किस्म छठी दहेड (12 बुलबुलो का नामकरण)

क़िस्म सातवीं चडोल (12 बुलबुलो का नामकरण)

किस्म आठवी अगन (8 बुलबुलो का नामकरण)

क़िस्म नवीं गुलाल चश्म (6 बुलबुलो का नामकरण)

क़िस्म दसवी अबलका (10 बुलबुलो का नामकरण)

क़िस्म ग्यारहवी (9 का नामकरण)

किस्म बारहवीं मलागीर (7 का नामकरण)

किस्म तेरहवीं पीलक (8 का नामकरण)

किस्म चौदहवी धौले (9 का नामकरण)

क़िस्म पन्द्रहवी तोते (8 का नामकरण)

क़िस्म सोलहवीं कुलचडे (10 का नामकरण)

किस्म सत्रहवीं नुई (6 का नामकरण)

क़िस्म अट्ठारहवीं मुर्ग फिरग (6 का नामकरण)

क़िस्म उन्नीसवी कागडा (10 का नामकरण)

क़िस्म बीसवीं मैना (8 का नामकरण)

क़िस्म इक्कीसवी भिंगराज (6 का नामकरण)

क़िस्म बाईसवीं भूकता (2 का नामकरण)

क़िस्म तेईसवीं पपीहा (5 का नामकरण)

क़िस्म चौबीसवीं गौगाई (9 का नामकरण)

क़िस्म पच्चीसवीं लाल सुर्ख (3 का नामकरण)

क़िस्म छब्बीसवीं . दुर्राज (7 का नामकरण)

क़िस्म सत्ताईसवीं लोवा (6 का नामकरण)

किस्म अठ्ठाइसवी दामा (4 का नामकरण)

किस्म उन्तीसवीं कोयल (दो का नामकरण)

किस्म तीसवीं कनेरी (दो का नामकरण)

किस्म इकतीसवीं बया (चार का नामकरण)

किस्म बत्तीसवीं हवाई (दो का नामकरण)

किस्म तैतीसवीं गुलदम (आठ का नामकरण)

किस्म चौतीसवीं खास अर्दली के जानवरो की (11 का नामकरण)

किस्म पैतीसवी मुलाफरिकात[1] (1 का नामकरण)

किस्म छत्तीसवीं खिताब ताजीखाना अग्रेजी जबान मे (आठ का नामकरण)

किस्म सैतीसवीं . खिताब गाऊ खाना खिताबे नरगावा (छह् का नामकरण)
खिताब मादा गाऊवा (तीन का नामकरणण)
खिताब मादा गाऊवा (सात का नामकरण)

इस प्रकार सोलह् खिताब गाऊखाना के हुए।

किस्म अड़तीसवीं : खिताब कबूतरखाना मयनाम (32 का नामकरण)

किस्म उन्तालिसवीं खिताब मेढाखाना (3 का नामकरण)

किस्म चालीसवीं · खिताब मछलियो के मय कौम (29 का नामकरण)

किस्म इकतालिसवीं सग पुश्त (तीन का नामकरण)

किस्म बयालिसवो शुतुर—नर तथा मादा (छह् का नामकरण)

किस्म तैतालिसवीं दरख्त (333 का नामकरण)

किस्म चवालिसवीं खिताब कोठियो और कमरो के और खिताब कुछ जिलो के, बागो के, तालाबो के, आदि-आदि

---

1. विभिन्न ।

कानूने अख्तरी

हिब्ज-इस्मत[1] मर्द व जन[2] और हिदायत बेगमात के वास्ते मुश्तमिल[3] ऊपर आठ दफा के—

दफा पहली

किसी गैर मर्द नामहरम के मुह पर नजरे न डाले. ख्वाह पेशेमालिक[4] न पीठ पीछे।

दफा दूसरी

गैर मर्द नामहरम मे बात करते वक्त अपनी नजरे नीची रखो ख्वाह मालिक के सामने ख्वाह गैबत मे।

दफा तीसरी

जो शख्स मालिक के रूबरू बैठता हो, किसी जरूरत के वक्त अगर उनके सामने भी बैठ जाए कोई हर्ज नही सिवाए वैसे शख्स लायक के और किसी नामहरम मर्द को करीब बैठाने की इजाजत नही।

दफा चौथी

किसी गैर महरम मर्द को गिलौरी पान की देने की इजाजत नही।

दफा पाचवी

किसी नामहरम मर्द को हुक्का पिलवाने की इजाजत नही।

दफा छठी

किसी गैर मर्द नामहरम का नाम न लो। ख्वाह पेशे[6] मालिक ख्वाह पसे मालिक बल्कि उस फिरके के नाम से उसे पुकारो यानी कोई आदमी है या कोई कबूतरबाज या जानवरबाज या दारोगा या बाग़वान या मकानदार या माही परवर वगैरा। यह न कहो कि नाम तो नवाब अली है प्यार से कहो कि नब्बू या फलाँ या बेग या खान इधर आओ या मीर साहब या मिर्जा साहब या शेख साहब इधर आइए।

---

1. याद रखने के योग्य, 2. औरत, 3 आधारित, 4 न मालिक के सामने, 5. बराबर, 6. सामने।

दफा सातवी

किसी नामहरम गैर मर्द के दस्त-बदस्त[1] कोई चीज न लो बल्कि लाने वाला जमीन या उस जगह पर बआराम ब हिफाजत धर दे। बाद उसके अपने हाथ से उठाकर लेने वाली अपने मसरफ[2] मे लाए।

दफा आठवी

गैर मर्द नामहरम जो रूमालो से फर्श को साफ करे ता नामहरम औरतें उनको सफाई की खुद जगह दे दिया करे। ऐसा न हो कि किसी का हाथ उनके जिस्म से सफाई के वक्त मस[3] हो तो बाएसे[4] नाखुशी मालिक और गजबे खुदा हो। चाहिए कि इन आठो हिदायतो को हर वक्त मद्देनजर[5] रखे ताखाविन्द[6] और खुदाबन्द[7] दोनो खुशनूद[8] हो और दुनियाँ का कार भी बद न रहे। अगर तुम सबो को पर्दे मे बिठा दिया जाए तो किसी कद्र तुम्हारे खाविन्द को अलबत्ता बेचैनी होगी और अजब नही कि उस बेचैनी की इत से तुम लोग अपने खाविन्द की मुलाकात से माजूर हो जाओ और अगर इस हिदायत पर चलोगी तो अपने ख़ाविन्द के पहलू मे रहोगी बल्कि हर वक्त दिल मे घर होगा। खुदा तुम औरतो का हादी[9] है।

ऊपर कही गई दफाओ पर मुश्तमिल हर वजीह व शरीफ मुलाजिमो के लिए भी कुछ हिदायत की जाती है। यह हिदायत छ: दफाओ मे है—

दफ़ा पहली

अपने मालिक की औरत पर नज़र जमाके न देखें बल्कि जो कुछ कहना हो नीची नजरो से कहे।

दफ़ा दूसरी

अगर अपने मालिक के रूबरू बैठते हो तो कभी वक्ते जरूरत अपने मालिक के आगे भी बैठो।

---

1. आमने-सामने हाथ से, 2 प्रयोग, 3. स्पर्श, 4 कारण, 5 ध्यान से, 6 जिससे पति, 7. अल्लाह, 8 प्रसन्न, 9. मालिक।

दफा तीसरी

गिलौरी और हुक्का नामहरम औरतो से न मागो और ब-सबब एहतराम अपने मालिक के उनके आगे भी न खाओ पियो ।

दफा चौथी

किसी मालिक की औरत का नाम आधा न लो और हिकारत से न लो ।

दफा पांचवी

कभी नामहरम औरत के दस्त बदस्त[1] कोई चीज न दो, न लो बल्कि कहो कि रख दीजिए मै उठा लूगा ।

दफा छठी

फर्श झाडो तो ख्याल रहे कि हाथ तुम्हारे उनके किसी अज़ो[2] से मस[3] न हो जाए कि मौजिब[4] तुगयान[5] और कुफ्र[6] हो ।

जब इन छहो चीजो को बजा लाओगे—कभी धोखा न खाओगे । अगर तुम्हारा मालिक अपनी कुल औरतो को पर्दे मे बिठा दे तो किसी कदर उसे बेचैनी भी होगी और तुम ज़ियारत[7] से महरूम रहोगे । अगर उन छहो चीज़ो को हर वक्त याद रखोगे, तो खाविन्द[8] और खुदाबन्द[9] दोनो राज़ी रहेगे और मोरिदेजज़ाओ-आफरीन[10] दीन व दुनिया मे होगे । बस खुदा तुम सभो को राह बताने वाला है । बस । मज़ीना हेजदहुमु (अठारह) शहर-सफर-उल-मुज़फ्फर 1294 हिजरी ।

बीस दफाए बेगमात सुल्तानखाना मुबारक और जवाहर मजिल और खास मजिल के अहकामात[11] के वास्ते—

---

1 हाथो हाथ, 2 अग, 3 स्पर्श, 4 कारण, 5 क्रोध, 6 अधर्म, 7. देखने से, 8 पति, 9 अल्लाह, 10 परिणाम के भोगी, 11 आज्ञाओ ।

दफा पहली

हमेशा अपने को खुश रखे।

दफा दूसरी

धोया हुआ, उजला कपडा जो कुछ सरकार से मिलता है या अपनी लियाकत के हिसाब से जैसा बनाया हो पहना करे। जनहार, मैली और धब्बेदार और फटी पोशाक रब्बा पैजामा, ख्वा दुपट्टा, ख्वा छोटे कपडे न पहना करे वरना जिनके सुपुर्द है और जो उनके एहतिमाम[1] वाले है, उनसे मुआवजा[2] होगा तो वही दारोगा लोग उसके जवाबदेह[3] होगे।

दफा तीसरी

पोशाक मे और हाथो मे और मुह मे हर्गिज-हर्गिज किसी तरह की बदबू न आने पाये।

दफा चौथी

पाव और तलवे हमेशा आइने की तरह साफ और चमकते रहे। किसी तरह का मैल और आखोर न हुआ करे।

दफा पांचवी

बालो मे खुशबू, रौगन और आखो मे काजल या सुरमा, हाथो मे मेहदी पहुचो तक हमेशा रहा करे।

दफा छठी

जो क्वारिया है, वो बगैर हुक्म अपने आप मिस्सी न मले। जो मल चुकी है, उनका मुजाएका[4] नही।

दफा सातवी

कोई बुलाक[5] छेदने का कस्द[6] न करे। कतई मनाही है।

---

1 प्रबन्ध करने वाले, 2 बदला, 3 उत्तरदायी, 4 कोई हर्ज, 5 नाक के बीच की हड्डी, 6 कोशिश।

दफा आठवी

कोई तम्बाकू खाने और हुक्का पीने का कस्द न करे मुमानियत हमेशा के लिए है।

दफ़ा नवी

कोई पैरो पर उगलियो की या पाव के नाखूनो पर या हथेली या तलवो मे किसी तरह मेहदी का नक्श व निगार, जिसे फन्दक कहते है, न बनाए। कतई मनाही है।

दफा दसवी

बुलाने के वक्त कोशिश करे, जल्दी हाजिर हुआ करे।

दफा ग्यारहवीं

बेबाक और बेहिजाब हाजिर हुआ करें।
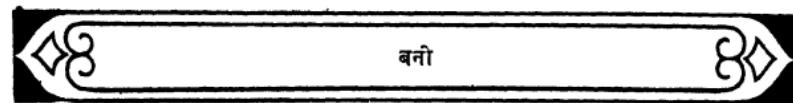
दफा बारहवी

मिजाजपुर्सी[1] मे एक जवाब दस को और सौ को और एक को काफी है। अलबत्ता जो बाद जवाब देने के नही आयेगी और मिज़ाज या हाल पूछेगी, उमे दूसरा जवाब दिया जाएगा।

दफ़ा तेरहवी

मै तुम्हारे आमदोरफ्त के देखने को फकत जवाहर मजिल और ख़ास मजिल मे आकर बैठा करता हू। अब तुम साहबो ने यह रवैया और शेवा अख्तियार किया कि अक्सर मेरे सामने का चलना-फिरना बचा जाती हो बल्कि अक्सर बा-नज़र-जरूरत[2] कोई जाए जरूरी जाना भी है तो वहाँ से फिर पलटकर मेरी दहशत[3] से अपने मकान पर नही आता है बल्कि वल्लाहोआलम[4] और किधर चला जाता है। जैसा कि एक दिन नवाब सब्रीहा बेगम साहिबा और नवाब अल्लाह जलाई बेगम साहिबा मेरे सामने से मिजाज पूछकर बैतुलखला गईं। शायद

1 कुशल पूछते समय, 2 ज़रूरत के समय, 3 डर, 4. अल्लाह जाने।

एक बजा हो दिन का फिर मै चिराग तले तक राह[1] देखा किया और वे अपने मकान मे पलट-कर न आईं और मुझे बुरा मालूम हुआ। इसीलिए सभी को लाजिम[2] है कि अपनी आमदो-रफ्त जरूरी से गाहे-हमारी आँखो को महरूम न रखा करे कि हमको मौजिब खुशनूदी है, न बाएसे नाराजी अलबत्ता दूसरे के मकान मे रह जाने की मनाही है। सीधी जाओ और अपने घर को पलटकर आओ।

दफ़ा चौदहवी

जब खिलवत[3] मे हमारे पास आओ, चुप न बैठो। किसी न किसी तरह की बाते जरूर हमसे किए जाओ वरना बायसे[4] निहायत नाराजी का होगा और उस वक्त अपने दिल पर जब्र न करो। दिल चाहे बैठो, दिल चाहे लेटो।

दफ़ा पन्द्रहवी

खाना पकाने के वक्त का गुल[5] हमारे दिमाग को इस दर्जा बेचैन करता है कि दूसरी दफा खाना पकवाने का हौसला नही पडत। बस जो हमारा ताबेदार[6] हो वो उस वक्त गुल न किया करे।

दफ़ा सोलहवी

गाहे नाखून बढे न हो। हर जुमा नाखून तरशवाओ।[7]
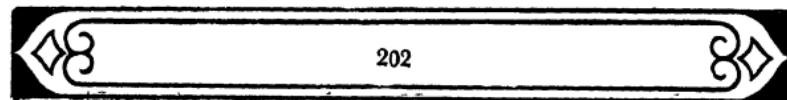
दफा सत्रहवी

हसी की बात पर हसा करो। बेसबब न हँसा करो।

दफ़ा अट्ठारहवी

सबसे बडी उम्मीद यह है कि अपनी ख्वाहिश-नापसदी[8] को बेहिजाब[9] फौरन हमसे कहना भेजा करो कि हमारा दिल फकत इस पैगाम से पहाड हो जाएगा। ख्वा हम बुलाये ख्वा हम न बुलायें।

---

1 इन्तिज़ार, 2 जरूरी है, 3 समागम के समय, 4. कारण, 5 शोर, 6 सेवक, 7 करवाओ, 8 नापसदी की इच्छा, 9 नि सकोच।

दफा उन्नीसवी

जो इल्म सिखाएँ, उसे बरगबत[1] दिल से सीखो। उस वक्त बिला-जरूरत घडी-घडी पेशाब का बहाना न करो। अगर पेशाब को जाओ तो उसमे कोई और तरह् का खाना-पीना, कूदना-उछलना न करो। पान बहुत कम खाओ। दातो को लाल करता है और मुह की बू को बुरा करता है। छालिया, डली आवाज की दुश्मन है। अगर हमारे कहने पर दारोगा लोग बेगमात को चलायें तो हम एहसानमन्द उन ओहदादारो के होगे।

दफा बीसवी

दो उगल-खडाऊँ जमीन से ऊँची हो। इसमे दारोगा लोग ऐहतिमाम से बनवा दिया करे। अगर इसमे खिलाफ हुआ तो एक खडाऊँ जुर्माना होगा।

अगर इन बातो पर अमल किया तो कुछ बेहतरी बहुत बडी जो उन साहिबो के वास्ते तजवीज मे है वो अमल मे आएगी और दर सूरत ख़िलाफा कुछ उम्मीद नही।

मरकूम हेजदहुम सफर-उल-मुजफर 1294 हिजरी।

हिजरी सन् 1294 माह् सफर की अट्ठारह् तारीख को लिखी गई।

---
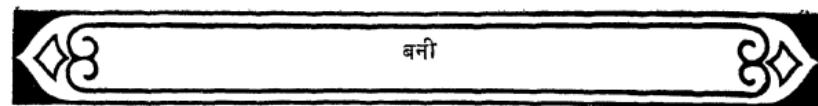
1. पूरे।

परिशिष्ट--एक

रचनाकाल लिखने और निकालने के सम्बन्ध में

अक्षरो को इस प्रकार जोडना कि शब्दो का अर्थ भी न बदले और शब्दो का प्रयोग इस सुन्दरता से हो कि शायरी की कला दिखाई दे और उसके वसूलो का उल्लघन न हो, जो भाव शायर व्यक्त करना चाहता हो वह भी स्पष्ट हो, इन कठिनाइयो को नजर मे रखते हुए किसी वस्तु के काल के विषय मे लिखना दुष्कर है।

किसी पुस्तक का रचनाकाल, किसी इमारत या महल का निर्माण काल, किसी बच्चे के जन्म का समय, किसी व्यक्ति विशेष की मृत्यु के समय अथवा किसी वस्तु के सन् के विषय मे उर्दू मे सदैव ही कहा जाता रहा है। उर्दू शायरी की इस कला को '**तारीख़-कहना**' कहा जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्त मे लगभग पन्द्रह पृष्ठो पर इसी का बखान है। इन पन्द्रह पृष्ठो मे कलकत्ता के मटियाबुर्ज मे बनने वाले महलो, भवनो, तालाबो, विभिन्न मजिलो—जैसे जवाहर मजिल, शारदा मजिल, सुरूर मजिल, शहशाह मजिल, सुल्तान खाना आदि—की सन् तारीख विभिन्न शायरो ने अपने-अपने अन्दाज मे कही है।

अनेक स्थानो पर चार-चार पक्तियाँ, जिसे उर्दू मे कता कहते है, इस प्रकार कही गयी है कि उसकी एक पक्ति से हिजरी सन्, दूसरी से बगला, तीसरी पक्ति से ईसवी और चौथी से विक्रमी सन् निकलते हे। इस प्रकार के सकेत भी उनमे दिये है कि किस प्रकार किस पक्ति से कौन सवत् निकाला जा सकता है।
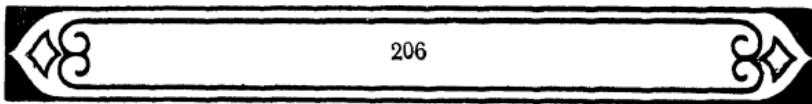
जवाहर मजिल के सन् के विषय मे भी चार पक्तिया कही गयी है जिससे उसकी सन् तारीख 1283 फसली, 1283 बगला, 1875 ईस्वी, सवत् 1933 विक्रमी और 1293 हिजरी निकलती है।

इसी प्रकार इस पुस्तक के रचनाकाल के विषय मे भी अनेक शायरो ने सन् तारीख कही है जिसकी एक लम्बी सूची भूमिका मे दी जा चुकी है। उन सब शायरो के कहे हुए शेर (दो पक्तिया), कता (चार पक्तिया) या चौमिसरा (चार पक्तियो) से एक ही सन् तारीख निकलती है—पहली पक्ति से 1875 ई०, दूसरी पक्ति से 1877 ई० और तीसरी पक्ति से 1878 ई०।

इन तीन विभिन्न सन् तारीख से स्पष्ट होता है कि बनी 1875 ई० मे लिखना आरम्भ की गयी तथा 1877 ई० मे यह पूर्ण हो गयी। इसका रचना काल 1875 ई० से 1877 ई० तक दो वर्ष का है। 1877 ई० मे ही इसकी प्रेस कापी तैयार हुई और 1878 ई० मे प्रकाशित हुई एव जनता मे प्रसारित की गयी।

सन् तारीख निकालने की विधि

उर्दू मे कुल 36 अक्षर है जिनमे 28 मूलक और 8 उपमूलक कहे जाते है। मूल अक्षरो की अपनी वास्तविक सख्याएँ है। जहाँ भी शब्दो की साख्यिकी निकालनी होती है इन अक्षरो की इन्ही सख्याओ का उपयोग किया जाता है। वे मूल अक्षर और उनकी सख्याये निम्नवत् है–

अलिफ	—1	सीन	—60
बे	—2	ऐन	—70
जीम	—3	फे	—80
दाल	—4	सुआद	—90
छोटी हे	—5	काफ	—100
वाओ	--6	रे	—200
जे	—7	शीन	—300
बडी हे	—8	ते	—400
तोय	—9	से	—500
ये	—10	खे	—600
काफ	—20	जाल	-- 700
लाम	—30	जुआद	—800
मीम	—40	जोए	—900
नून	—50	गैन	—1000

दिये हुये शेर, कता या विभिन्न पक्तियो से किस प्रकार सन् निकाला जाता है, इसे निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। रहस मजिल के सन्-तारीख के विषय मे एक कता इस प्रकार है—

हुज्जाब कसरे अनवर किसरा तबार व कैसर।
आईना दार सुलतान दार ओश व सिकन्दर।
मेअमार कसरे गरदूँ खल्लाक अर्श आज़म।
मोहकम जकोह दार व बुनियाद उम्र अख्तर।

पहली पंक्ति

पहली पक्ति को ध्यान से पढने पर उसमे निम्नलिखित अक्षर प्राप्त होते है—

हे, जीम, अलिफ, बे, काफ, सुआद, रे, अलिफ, नून, वाओ, रे, काफ, सीन, रे, ये, ते, बे, अलिफ, रे, वाओ, काफ, ये, सुआद, रे। इन अक्षरो मे वे अक्षर जिन पर नुकते लगते हैं वे यह है—जीम, बे, काफ, नून, ये, ते, बे, काफ, ये। यदि इन अक्षरो को ऊपर दिये अक्षरो मे से निकाल दिया जाए, तो हमारे पास कितने अक्षर शेष रह जाते है—

बडी हे, अलिफ, सुआद, रे, अलिफ, वाओ, रे, काफ [सीन, रे, बे, अलिफ, रे,[वाओ, सुआद, रे।

इन सारे अक्षरो की अलग-अलग सख्या पिछली सूची मे दी हुई है। इन दी हुई सख्याओ के आधार पर जोडने पर—

बडी हे	— 8
अलिफ	— 1
सुआद	— 90
रे	—200
अलिफ	— 1
वाओ	— 6
रे	—200
क़ाफ	— 20
सीन	— 60
रे	—200
अलिफ	— 1
रे	—200
वाओ	— 6
सुआद	— 90
रे	—200
कुल	1283

अत. ये सन् 1283 फसली निकला। इसी प्रकार **दूसरी पंक्ति** की गणित से 1283 बगला निकलता है।

तीसरी पंक्ति

तीसरी पक्ति मे निम्नलिखित अक्षर है—

मीम, ऐन, मीम, अलिफ, रे, फे, सुआद, रे, काफ, रे, दाल, वाओ, नून, खे, लाम, अलिफ, काफ, ऐन, रे, शीन, अलिफ, ऐन, ज़ोए, मीम।

इस पक्ति मे ऐसे अक्षर जिनमे नुकता है उनकी सख्या छ है—फे, नून, खे, काफ, शीन, जोए । इन छह् अक्षरो को इस पक्ति के कुल अक्षरो से निकाल देने पर शेष अक्षर इस प्रकार है मीम, ऐन, मीम, अलिफ, रे, सुआद, रे, काफ, रे, दाल, वाओ, लाम, अलिफ, ऐन, रे, अलिफ, ऐन, मीम । प्रत्येक अक्षर की दी हुई सख्या जोडने पर—

मीम	— 40
ऐन	— 70
मीम	— 40
अलिफ	— 1
रे	—200
सुआद	— 90
रे	—200
काफ	— 20
रे	- 200
दाल	— 4
वाओ	— 6
लाम	— 30
अलिफ	— 1
ऐन	— 70
रे	—200
अलिफ	— 1
ऐन	— 70
मीम	— 40
कुल	1283

इस पक्ति द्वारा भी सन् 1283 फसली की सख्या निकलती है । इसी प्रकार चौथी पक्ति से सवत् 1933 वि० निकाली जा सकती है ।

अनेक दिलचस्प विधियो से सन् तारीख निकालने की यह सबसे सरल विधि है । इसके अतिरिक्त अनेक अन्य विधिया भी है जिनके विषय मे यहाँ बहस करना उचित न होगा ।
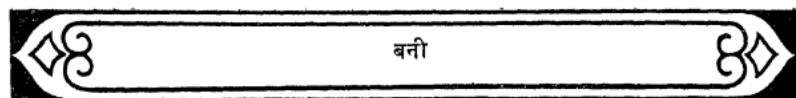
परिशिष्ट--दो

फारसी शेरों के अर्थ या भावार्थ के सम्बन्ध मे

पाँचवे अध्याय मे अनेक नकले उच्च स्तरीय संगीत व नृत्य का पुट लिये और साहित्यिक है। पर एक नकल जिसका पूरे अध्याय मे ही नही वरन् नकल कला के क्षेत्र मे भी अत्यधिक महत्व है, वह है शायरो की नकल।
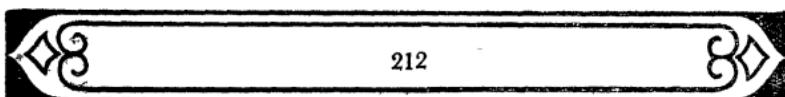
किसी सामाजिक चरित्र की नकल करना और उसके माध्यम से व्यग्य करना ही नकल कला का रूप रहा है और शायर का भी समाज से कोई पृथक अस्तित्व नही है। उसकी नकल करना बहुत सरल और हास्यात्मक है। पर यह नकल उन सारी नकलो से कुछ अलग हटकर है। यह एक ऐसी नकल है जिसका साहित्य मे भी अपना स्थान है।

इस नकल मे 52 शायर है—26 उर्दू के और 26 फारसी के। पूरे के पूरे 52 शायर वास्तविक चरित्र है, एक भी काल्पनिक नही और सबके अपने अलग-अलग शेर है। एक शायर के

पढने का तर्ज दूसरे से भिन्न है । उनका बैठने का तरीका एक है पर आखे चलाने का सलीका एक नही । अनेक ऐसी बाते है जो एक शायर के चरित्र को दूसरे शायर के चरित्र से स्पष्टतया अलग करती है । इसलिये इस नकल का महत्व और भी अधिक है ।

26 शायरो के शेर फारसी मे हैं और उनमे से हर शेर मे कोई न कोई दर्शन है । इसके भावार्थ या अर्थ बताने के लिये अधिक पृष्ठो की आवश्यकता होगी, किन्तु पुस्तक के सीमित कलेवर को देखते हुये उन शेरो का भावार्थ दे पाना सम्भव नही है ।

संदर्भ

1 कर्नल स्लीमैन के पत्र —हेनरी एलियट, सचिव गवर्नर जनरल के नाम
—सर जेम्स के नाम
—कर्नल लू के नाम

2 अवध, इट्स प्रिंसेज एण्ड इट्स गवर्नमेन्ट विनडिक्टेड —मौलवी मसीहुउद्दीन काकोरवी

3 अवध अण्डर वाजिद अली शाह —जी० डी० भटनागर

4 अवध ब्लू बुक

5 एटीन फिफ्टी सेवेन —सुरेन्द्रनाथ सेन

6. ए जर्नी थ्रू दी किंगडम ऑफ अवध —कर्नल स्लीमैन

7 ब्रिटिश एग्रेशन इन अवध —सफी अहमद

8 बर्ड्स आई व्यू ऑफ इण्डिया —सर अर्सकिन पेरी

9	डकैती इन इक्सेलसिज़	—मेजर आर० डब्लू० बर्ड
10	रिप्लाई टू दी चार्जेज अगेन्स्ट दी किंग ऑफ अवध	—वाजिद अली शाह
11	हिस्ट्री ऑफ इण्डिया	—जे० सी० मार्शमैन
12	वाजिद अली शाह एण्ड दी किंगडम ऑफ अवध	—मिर्जा अली अजहर बिरलास
13	दी प्राइवेट लाईफ ऑफ ऐन ईस्टर्न किंग	—विलियम नाइटन
14	दी प्राइवेट लाईफ ऑफ ऐन ईस्टर्न कुइन	—विलियम नाइटन
15	ए० कनसाइज हिस्ट्री ऑफ इण्डियन प्यूपिल	—एच० जी० रॉबिन्सन
16	आउट लाइन ऑफ दी इग्लिश हिस्ट्री	—सैम्वेल आर० गारडेनर
17.	ब्रिटिश रेजीडेन्स ऐट दी कोर्ट ऑफ अवध	—सफी अहमद
	उर्दू	
18	सुलताने आलम वाजिद अली शाह	—प्रो० मसूद हसन अदीब
19	हुज्ने अख्तर—मूल वाजिद अली शाह	—सकलन अमजद अली खा
20	चमनिस्ताने मुजफ्फर	
21.	वाजिद अली शाह और उनका अहद	—रईस अहमद जाफरी
22	इसरारे वाजिदी	—वाजिद अली शाह
23.	आफताबे अवध	—मिर्जा मोहम्मद तकी
24	लखनऊ का शाही स्टेज	—प्रो० मसूद हसन अदीब
25.	लखनऊ का अवामी स्टेज	—प्रो० मसूद हसन अदीब
26	तारीखे इक्तिदारिया	—इक्तिदार-उद्-दौला
27	मौसीकी	—प्रो० असद उल्ला खा कौकब
28.	मदानुल मौसीकी	—हकीम करम इमाम
29.	बोस्ताने अवध	—राजा दुर्गा प्रसाद सदेलवी
30	इन्द्रसभा	—आगा हसन 'अमानत'
31.	अफजल-उल-तवारीख	—मुन्शी राम सहाय 'तमन्ना'

32 जाने आलम —अब्दुल हलीम 'शरर'

33 दस्तूरे वाजिदी —वाजिद अली शाह

34 कैसरुल तवारीख (दूसरा भाग) —सैय्यद कमालउद्दीन हैदर

35 गुजश्ता —अब्दुल हलीम शरर

36 मसनवी दरयाए ताश्शुक —वाजिद अली शाह

37 मसनवी अफसाना-ए-इश्क —वाजिद अली शाह

38 मुल्के अख्तर —वाजिद अली शाह

39 नाजो —वाजिद अली शाह

हिन्दी

40 वाजिद अली शाह —आनन्द सागर श्रेष्ठ

41 सन् सत्तावन —पडित सुन्दर लाल

42 सिंहासन बत्तीसी

43 सागीत एक लोकनाट्य-परम्परा —रामनारायण अग्रवाल

44 वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन —परिपूर्णानन्द वर्मा

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	ग़लत	सही
3	अन्तिम	अम्या मेरा	अय्याम रा
5	20वीं	झूमरी	झूमरा
11	पहली	बहारे उल्फत	बहरे उल्फत
12	15वीं	नहीं	यहीं
16	दूसरी	मुसबिफ	मुसन्निफ
17	छठी	सोमे जना	सोम जना
27	21वीं	असमाई	अस्रमाई
33	10वीं	मैरवी	भैरवी
34	अन्तिम	तिसल	तिसूल
46	18वीं	राग व ताल ऐजन	राग ऐजन
49	8वीं	डाला	डाला रे
50	13वीं	भी हो	भय हो
55	फ़ुटनोट	1	2
		2	1
57	21वीं	बैरा	बारा
60	छठी	से	सा
77	—	तीसरी ठग गत	ठेगा गत
81	10वीं	उस्ताद	उफ्तादा
86	5वीं	मरकमा	मरकूमा
93	14वीं	नहीं बे	नकीबे
96	7वीं	ये	पे
109	12वीं	नजोदिया	नज़रिया
131	8वीं	अशिमाए नौ	अशिभाए नौ
138	छठी	गु़सश्ता	गु़ज़श्त